हिन्दी दैनिक

प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची ● रविवार ● 29.09.2024 ● वर्ष : 15 ● अंक : 70 ● पृष्ठ : 12 ● आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

एक नजर

कुलगाम मुठभेड़ में दो आतंकवादी ढेर

श्रीनगर : जम्मू-कश्मीर के कुलगाम जिले में सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में दो आतंकवादी ढेर हो गये जबकि चार सैन्यकर्मी और एक पुलिस अधिकारी घायल हुए हैं। आधिकारिक प्रवक्ता ने शनिवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आतंकवादियों की मौजूदगी की खुफिया सूचना के आधार पर सेना और पुलिस के संयुक्त बल ने आज तड़के आदिगाम देवसर कुलगाम में घेराबंदी और तलाश अभियान शुरू किया। इसी दौरान वहां छिपे हुए आतंकवादियों ने सुरक्षा बलों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। जवाबी कार्रवाई में सुरक्षा बलों ने गोलिया चलायी। दोनों पक्षों के बीच मुठभेड़ में दो आतंकवादी मारे गये। वहीं चार सैन्यकर्मी और एक अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (एएसपी) घायल हो गये। घायलों को तुरंत अस्पताल ले जाया गया जहां उनकी हालत स्थिर बताई गई है। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि मुठभेड़ में मारे गये दोनों आतंकवादी संभवतः स्थानीय थे।

सीबीआई ने घूसखोरी के आरोप में धनबाद कोलियरी के प्रबंधक और मजदूर को किया गिरफ्तार

धनबाद : केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने श्यामपुर "बी" कोलियरी के प्रबंधक (स्केल ई-5) और एक सामान्य मजदूर सहित दो आरोपियों को 20 हजार रुपये की रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार किया है। सीबीआई ने शनिवार को यह जानकारी दी। सीबीआई ने श्यामपुर "बी" कोलियरी मुग्मा एरिया, निरसा, धनबाद के एक सामान्य मजदूर की शिकायत पर आरोपित प्रबंधक प्रवीण कुमार मिश्रा और एक मजदूर गौर रवानी के खिलाफ मामला दर्ज किया था। आरोपी प्रबंधक ने शिकायतकर्ता को उसके वर्तमान पदस्थापन स्थान 'मैगजीन रूम' में बनाए रखने के लिए 50 हजार रुपये रिश्वत की मांग की थी। आरोपी ने शिकायतकर्ता को उसी कोलियरी में एक अन्य सामान्य मजदूर को 20 हजार रुपये की रिश्वत राशि सौंपने का निर्देश दिया। सीबीआई की टीम ने रिश्वत की इस राशि को लेते हुए एक मजदूर को रंगे हाथों पकड़ लिया। बाद में सीबीआई ने दोनों आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया। आरोपियों के ठिकानों पर तलाशी भी ली गई।

मुख्यमंत्री ने मरङ गोमके जयपाल सिंह मुण्डा पारदेशीय छात्रवृत्ति योजना के तहत 22 युवाओं के बीच स्वीकृति पत्र सौंपा

पारदेशीय छात्रवृत्ति के लाभुक छात्रों की संख्या में होगी वृद्धि : हेमन्त सोरेन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : मुख्यमंत्री शनिवार को हरिवंश टाना भगत इंडोर स्टेडियम, खेलगांव, रांची में आयोजित मरङ गोमके जयपाल सिंह मुंडा पारदेशीय छात्रवृत्ति शिलान्यास, नियुक्ति पत्र एवं परिसंपत्ति वितरण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हमारे गरीब-गुरबा लोगों को कोई भी चीज बहुत आसानी से नहीं प्राप्त होता है, इनके लिए अबतक जो नीति निर्धारण हुए हैं वह कारगर नही थे। पूर्व की सरकार में योजनाएं तो बनाई गई, लेकिन उसका लाभ गरीबों को नहीं मिल पाया है। हमारी सरकार लम्बे समय तक इस बात को महसूस किया और यह हमें हमेशा से देखने को मिला है। हमारी सरकार ने जनहित की योजनाओं का रूप ऐसा बनाया है ताकि सीधे आपसभी को उसका लाभ मिले।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मैंने पहले भी कहा है और आज भी कहता हूं कि यह रांची हेडक्वार्टर से नहीं, गांव से चलने वाली सरकार है। राज्य में ऐसे भी गांव हैं जहां के लोगों ने प्रखंड के अधिकारियों को नहीं देखा है लेकिन अब समय बदल रहा है। अब प्रखंड कार्यालय और जिला से लेकर हेडक्वार्टर के पदाधिकारी पंचायत-पंचायत, गांव-गांव, घर-घर जाकर आपकी समस्याओं का समाधान कर रहे हैं और आपको राज्य सरकार की योजनाओं का लाभ दे रहे हैं। अब समय बदल गया है।

नियुक्ति पत्र एवं परिसंपत्ति वितरण कार्यक्रम को संबोधित करते मुख्यमंत्री

सभी पात्र लोगों को मिला सर्वजन पेंशन योजना का लाभ

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान राज्य सरकार गठन के बाद कई चुनौतियां हमारे समक्ष रहीं। महत्वपूर्ण 2 वर्ष तो कोरोना जैसी महामारी में गुजर गया। जब जीवन सामान्य होने लगा तो आपके गांव, पंचायत में शिविर लगाकर जिला एवं प्रखंड के पदाधिकारियों द्वारा आपकी समस्याओं को सुनकर उसका निदान किया गया। गरीब-गुरबा के पास समस्या हमेशा मुंह बाए खड़ी रहती है। उन समस्याओं का एक-एक कर समाधान करना हमारी सरकार ने शुरू किया और इसके तहत पहला कदम "आपकी योजना-आपकी सरकार- आपके द्वार" कार्यक्रम के माध्यम से राज्य के वृद्ध लोगों को बुढ़ापे की लाठी देने का काम किया। हर वृद्ध, विधवा महिला, दिव्यांग को पेंशन देने का काम हुआ। यह देश का पहला राज्य बना, जहां सभी जरूरतमंद को सर्वजन पेंशन योजना का लाभ दिया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने स्थानीय नीति बनाई उस पर ग्रहण लगा दिया गया। हमारी सरकार ने महिलाओं को सम्मान दिया। बच्चों को नौकरी के लिए एग्जाम दिलाया। पूर्व की सरकारों ने ऐसा क्यों नहीं किया? सिर्फ झारखंड ही इस देश में ऐसा राज्य है, जहां हम गरीबों को रोटी, कपड़ा, मकान, बच्चों के शिक्षा के लिए ऐसा रास्ता खोलने का प्रयास कर रहे हैं, जो भविष्य में मील का पत्थर साबित होगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज यहां विदेश में उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए युवा आए हैं। उन्हें स्वीकृति पत्र उपलब्ध कराया जा रहा है। युवा ही बताएं कि देश का कौन सा ऐसा राज्य है जहां शत-प्रतिशत स्कॉलरशिप पर विदेश में उच्च शिक्षा दी जा रही हो। इस राज्य के नौजवानों में इतनी उत्सुकता है उच्च शिक्षा के लिए यह मुझे पता नहीं था। पहले हम लोगों ने छात्रों की संख्या को कम रखा लेकिन बड़ी तादात में बच्चे आने लगे फिर इसकी संख्या बढ़ाई गई। कई बच्चे पढ़ कर वापस आए। कईयों को वहीं रोजगार प्राप्त हो गया।

सीएम ने निर्माणाधीन फ्लाईओवर का किया निरीक्षण

रांची : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने शनिवार को मेकॉन चौक (वन भवन के नजदीक) से सिरमटोली चौक रांची तक बन रहे निमार्णाधीन फ्लाईओवर का औचक निरीक्षण किया। मुख्यमंत्री ने मौके पर पथ निर्माण विभाग के अधिकारियों को फ्लाईओवर निर्माण कार्य से संबंधित कई महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश भी दिए। फ्लाईओवर निरीक्षण के उपरांत मीडिया के प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कहा कि फ्लाईओवर निर्माण से संबंधित दिशा-निर्देश राज्य सरकार द्वारा पहले ही दिए जा चुके हैं, और उसी दिशा-निर्देश के अनुरूप सभी कार्य चल रहे हैं। आज मैं यही देखने पहुंचा हूं कि फ्लाईओवर निर्माण कार्य में कितनी प्रगति हुई है। ससमय कार्य पूरा हो यही राज्य सरकार की प्राथमिकता है। इस मौके पर मंत्री बन्ना गुप्ता, पथ निर्माण विभाग के प्रधान सचिव सुनील कुमार सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

चार बेटियों के साथ पिता ने की खुदकुशी

एजेंसी

नयी दिल्ली : रंगपुरी गांव में एक शख्स ने जहरीला पदार्थ खाकर अपनी चार बेटियों के साथ खुदकुशी कर ली। पुलिस ने शुक्रवार को फ्लैट का ताला तोड़कर शवों को बाहर निकाला। चारों बेटियां दिव्यांग होने के कारण चलने-फिरने में असमर्थ थीं और पत्नी की मौत के बाद हीरालाल अपनी बेटियों की हालत देखकर पूरी तरह से टूट चुका था। उसने बच्चियों को सल्फास खिलाकर खुद भी जान दे दी। वहीं अब इस पूरे मामले में पुलिस तंत्र-मंत्र के एंगल से भी जांच कर रही है। सूत्रों की मानें तो चारों मृतक बेटियों के गले, हाथ व कमर में कलावा बंधा मिला है।

पुलिस अधिकारी ने बताया कि 50 वर्षीय हीरालाल परिवार के साथ रंगपुरी गांव में किराये के मकान में रहता था। वह मूल रूप से बिहार के छपरा जिले के मसरख गांव का रहने वाला था। उसकी पत्नी की पहले ही मौत हो गई थी। उसके परिवार में चार बेटियां 18 वर्षीय नीतू, 15 वर्षीय निशि, 10 वर्षीय नीरू और 8 वर्षीय निधि थीं। हीरालाल वसंत कुंज स्थित एक अस्पताल में कारपेंटर के तौर पर काम करता था। पुलिस के अनुसार, शुक्रवार को हीरालाल के फ्लैट से बदबू आनी शुरू हुई। इस पर सड़क की दूसरी तरफ स्थित मकान में रहने वाले व्यक्ति ने पुलिस को फोन कर यह जानकारी दी।

पुलिस जब वसंत कुंज साउथ स्थित फ्लैट पर पहुंची तो आसपास के लोगों ने बताया कि परिवार कई दिन से दिखाई नहीं दिया। इसके बाद पुलिस ने दरवाजा तोड़ा तो अंदर से भीषण बदबू आ रही थी। पुलिस टीम ने कमरे में प्रवेश किया तो पहले कमरे के बिस्तर पर हीरालाल का शव पड़ा था। दूसरे कमरे में चारों बेटियों के शव पड़े थे।

उत्तर बिहार के 13 जिलों में गहराया बाढ़ का खतरा, खोले गए कोसी बराज के सभी 56 फाटक

एजेंसी

पटना : उत्तर बिहार के लगभग सभी जिलों और नेपाल के तराई क्षेत्र में बीते दिनों से हो रही मूसलाधार बारिश की वजह से राज्य के 13 जिलों में बाढ़ का खतरा मंडरा रहा है। शनिवार दोपहर 12 बजे तक कोसी बराज पर 05 लाख 07 हजार 690 क्यूसेक पानी दर्ज किया गया है। पानी के दबाव को देखते हुए बराज के सभी 56 फाटक खोल दिए गए हैं।

नदी में इतना पानी 56 साल बाद आया है। यह 1968 में नदी के सबसे अधिक फ्लो से सिर्फ 01 लाख क्यूसेक कम है। दूसरी ओर नेपाल से सटे पश्चिम चंपारण जिले के वाल्मीकिनगर गंडक बराज से 03 लाख 39 हजार क्यूसेक पानी डिस्चार्ज हो रहा है जो 05 लाख

93 पहुंचने की संभावना जताई जा रही है। यहां 21 साल पहले इतना पानी आया था। यह 2003 के फ्लो लेवल से थोड़ा ही कम है। दोनों नदियों में पानी शुक्रवार को ही बढ़ गया। गंडक बराज से आज सुबह 11 बजे तक 04 लाख क्यूसेक पानी छोड़ा जा चुका है।

बिहार के शिवहर में बाघमती नदी में भी उफान जारी है। यह खतरे के निशान से 108 सेंटीमीटर ऊपर पहुंचा गयी है। इसके जलस्तर में वृद्धि जारी है। अररिया जिले में अति वृष्टि के कारण परमान, बकरा, रतुआ, नूना, कनकई, कृष्णा, सुरसर आदि नदियां उफान पर हैं। फलस्वरूप अगल-बगल के इलाकों में नदी का पानी फैल गया है, जिसके कारण जिले के दर्जनों गांव में बाढ़ से हालात पैदा हो गए हैं। निचले इलाकों में पानी फैलने के कारण लोग सुरक्षित स्थानों की ओर पलायन कर रहे हैं। जिला प्रशासन निचले इलाकों में फैले पानी को लेकर आमलोगों से सुरक्षित स्थानों की ओर पलायन करने की अपील कर रहे हैं। साथ ही बाढ़ जैसे हालात में फंसे ग्रामीणों को बाहर निकालने के लिए एसडीआरएफ की टीम रेस्क्यू में जुट गई है। डीएम अनिल कुमार, एसपी अमित रंजन, एसडीएम अनिकेत कुमार, सदर एसडीपीओ रामपुकार सिंह सहित अन्य अधिकारियों ने जोकीहाट, पलासी प्रखंड सहित अन्य प्रभावित इलाकों का दौरा कर स्थिति की जानकारी ली। सुपौल में कोसी नदी में जलस्तर में वृद्धि और भीमनगर बराज से 06 लाख क्यूसेक से अधिक पानी छोड़े जाने के बाद जिले में बाढ़ का खतरा बढ़ गया है।

इजराइली हमले में मारा हिजबुल्ला चीफ हसन नसरल्लाह

एजेंसी

बेरूत : इजराइली सेना ने हिजबुल्ला नेता को निशाना बनाकर बेरूत स्थित इसके केंद्रीय मुख्यालय पर हमला किया, जहां एक के बाद एक भीषण विस्फोटों से कई ऊंची इमारतें ध्वस्त हो गईं। इजराइल की सेना ने यह जानकारी दी। लेबनान के स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि इस हमले में कम से कम छह लोगों की मौत हो गई और 91 अन्य लोग घायल हो गए। लेबनान की राजधानी में इस हमले के कारण संघर्ष के पूर्ण युद्ध में बदलने की आशंकाएं प्रबल हो गई हैं।

इस मामले की जानकारी रखने वाले एक अमेरिकी अधिकारी समेत दो अधिकारियों ने अपनी पहचान गोपनीय रखने की शर्त पर बताया कि यह हमला हिजबुल्ला नेता हसन नसरल्लाह को निशाना बनाकर किया गया था जिसमें वह मारा गया है। इजराइली सेना ने शनिवार को दावा किया किया कि उसने बेरूत में शुक्रवार को किए गए एक हमले में हिजबुल्ला के नेता हसन नसरल्ला को मार

गिराया। सेना ने कहा कि जब हिजबुल्ला का नेतृत्व बेरूत के दक्षिण में दहिया स्थित अपने मुख्यालय में बैठक कर रहा था तभी एक सटीक हवाई हमला किया गया। नसरल्ला तीन दशक से अधिक समय से हिजबुल्ला का नेतृत्व कर रहा था।

हालांकि इजराइली सेना ने इस पर टिप्पणी करने से इनकार कर दिया। अभी यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि नसरल्लाह हमला स्थल पर मौजूद था या नहीं। इस संबंध में हिजबुल्ला ने भी टिप्पणी नहीं की। मृतकों की संख्या में और वृद्धि होने की आशंका है क्योंकि हताहतों की तलाश के लिए छह इमारतों के मलबे में तलाश अभियान अब भी जारी है। प्रारंभिक विस्फोट के बाद इजराइल ने दक्षिणी उपनगरों के अन्य क्षेत्रों पर कई हमले किए। इन हमलों के बाद इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू अमेरिका की अपनी यात्रा अचानक जल्द समाप्त करके स्वदेश लौट आए। इससे पहले उन्होंने संयुक्त राष्ट्र को संबोधित किया था। नेतन्याहू ने अपने संबोधन में संकल्प लिया था कि हिजबुल्ला के खिलाफ इजराइल का अभियान जारी रहेगा।

उनकी टिप्पणियों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समर्थित युद्ध विराम की उम्मीदों को और कम कर दिया। विस्फोटों की खबर तब आई जब नेतन्याहू संयुक्त राष्ट्र में अपने संबोधन के बाद पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। एक सैन्य सहायक ने उनके कान में फुसफुसाकर कुछ कहा जिसके बाद नेतन्याहू ने संवाददाता सम्मेलन तुरंत समाप्त कर दिया। इजराइली सेना के प्रवक्ता रियर एडमिरल डैनियल हगारी ने कहा कि सेना ने आवासीय इमारतों के नीचे स्थित हिजबुल्ला के मुख्यालय को निशाना बनाया।

इजराइली सेना लेबनान के साथ तनाव बढ़ने के बीच अतिरिक्त रिजर्व सैनिकों को तैनात कर रही है। सेना ने शनिवार सुबह कहा कि वह रिजर्व सैनिकों की तीन बटालियन को सक्रिय कर रही है। इससे पहले सप्ताह की शुरूआत में दो बटालियन को संभावित जमीनी आक्रमण के मद्देनजर प्रशिक्षण देने के लिए उत्तरी इजराइल भेजा गया था। इजराइली सेना ने शनिवार सुबह दक्षिणी बेरूत और पूर्वी लेबनान की बेका घाटी में कई हमले किए। हिजबुल्ला ने शनिवार को उत्तरी और मध्य इजराइल तथा इजरायल के कब्जे वाले 'वेस्ट बैंक' पर दर्जनों रॉकेट दागे।

लेबनान की राष्ट्रीय समाचार एजेंसी के अनुसार, बेरूत में दहिया उपनगर के घनी आबादी वाले और मुख्यतः शिया बहुल जिले हरेत हरीक में रात में हुए श्रृंखलाबद्ध विस्फोटों में छह इमारतें मलबे में तब्दील हो गईं। खबर में कहा गया है कि विस्फोट इतना शक्तिशाली था कि इससे बेरूत से लगभग 30 किलोमीटर उत्तर में स्थित इमारतें भी हिल गईं। लेबनान में इजराइल के हवाई हमलों में इस सप्ताह नाटकीय रूप से तेजी आई है। उसने कहा है कि वह अपने क्षेत्र में 11 महीने से अधिक समय से जारी हिजबुल्ला की गोलाबारी को रोकने के लिए कटिबद्ध है। स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, इस सप्ताह लेबनान में हमलों में मारे गए लोगों की संख्या 720 से अधिक हो गई है जिनमें कई महिलाएं और बच्चे शामिल हैं।

सरकार बनने पर कराएंगे उत्पाद सिपाही अभ्यर्थियों की मौत की जांच : शिवराज

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पलामू : झारखंड में भारतीय जनता पार्टी की परिवर्तन यात्रा का पलामू प्रमंडल स्तरीय समापन समारोह कार्यक्रम डालटनगंज के शिवाजी मैदान में शनिवार को आयोजित हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि मैं सिर्फ मध्य प्रदेश का ही मामा नहीं हूं, बल्कि पूरे पलामू झारखंड का भी मामा हूं और अब जब रिश्ता जुड़ गया है तो आपका मामा इसे निभाने में कोई कसर बाकी नहीं रखेगा।

चौहान ने कहा कि उत्पाद सिपाही भर्ती में शामिल अभ्यर्थियों के परिजन उनके सिपाही वर्दी पहनकर घर आने की आस लगाये हुए थे लेकिन वोट की लालच में बहाली निकाल कर अभ्यर्थियों की हत्या कर दी गयी। हमारी सरकार आयेगी तो इस मामले की पूरी जांच कराएगी और दोषियों पर

कार्रवाई होगी। किसी को नहीं छोड़ा जायेगा। उन्होंने दुख जताते हुए कहा कि झारखंड में झामुमो गठबंधन की सरकार में 17 बार पेपर लीक हुए। जेएमएम पेपर लीक मोर्चा बन गया है। साथ ही कहा कि बीजेपी की सरकार बनते ही 2 लाख 87 हजार नौकरी तत्काल दी जायेगी। यह मामा का वचन है।

चौहान ने कहा कि झारखंड की माटी, बेटी और रोटी संकट में है। विदेशी घुसपैठिए लगातार जगह बना रहे हैं। ऐसे में बीजेपी की सरकार बनायें और माटी, बेटी और रोटी पर आने वाले संकट को टालें। साथ ही कहा कि भारत की धरती पर पैदा होने वाले सारे लोग हमारे अपने हैं। भाई-बहन की तरह हैं। हम उन्हें सीने से लगाकर रखेंगे लेकिन विदेशी घुसपैठ किसी कीमत पर बर्दाश्त नहीं की जायेगी। कार्यक्रम को भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी, नेता प्रतिपक्ष अमर बाउरी, सांसद वीडी राम और विधायक आलोक चौरसिया ने भी संबोधित किया।

एक नजर

गंगा आरती का आमंत्रण देकर जन जागरूकता फैला रहे हैं डॉ. अमित

हजारीबाग : शहर के प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों, स्कूलों और कॉलेजों का दौरा करते हुए डॉ. अमित सिन्हा ने आगामी 2 अक्टूबर को आयोजित होने वाली विशेष गंगा आरती कार्यक्रम के लिए सभी को आमंत्रित किया। उन्होंने छात्रों और शिक्षकों से मिलकर उन्हें पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता और सामाजिक सद्भावना के महत्व पर चर्चा किया और इस पुनीत कार्य में शामिल होने का अनुरोध किया। डॉ. सिन्हा ने कहा कि इस गंगा आरती का उद्देश्य केवल धार्मिक नहीं है, बल्कि यह समाज में जागरूकता फैलाने का भी प्रयास है। स्वच्छता अभियान को बढ़ावा देना और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना आज के युवाओं की जिम्मेदारी है। उन्होंने बताया कि स्वच्छ गंगा और स्वच्छ भारत का सपना तभी साकार होगा जब हम सभी, विशेषकर छात्र-छात्राएं, इस पहल में सक्रिय भूमिका निभाएं। छात्रों और शिक्षकों ने भी इस पहल का स्वागत किया और गंगा आरती में अपनी सहभागिता की पुष्टि की। डॉ. अमित सिन्हा का यह प्रयास न केवल गंगा आरती के प्रति जागरूकता फैलाने का है, बल्कि हजारीबाग के नागरिकों को एकजुट कर स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण के संदेश को सशक्त रूप से प्रस्तुत करना भी है।

मंईयां सम्मान योजना आने वाले समय में मील का पत्थर साबित होगी : विनोद कुशवाहा

हजारीबाग : झारखंड सरकार की आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार की तर्ज पर कांग्रेस प्रदेश महासचिव विनोद कुशवाहा ने भी एक अनूठी पहल करते हुए विनोद आपके द्वार कार्यक्रम की शुरूआत की है। इसके तहत विनोद कुशवाहा लगातार डोर टू डोर जनसंपर्क कर इंडिया गठबंधन के तहत झारखंड सरकार के द्वारा जनहित में चलाई जा रहे जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी से जन-जन को अवगत करा रहे हैं। विनोद कुशवाहा के द्वारा इस अनोखी पहल की सभी सराहना कर रहे हैं। कांग्रेस प्रदेश महासचिव विनोद कुशवाहा ने विनोद आपके द्वार कार्यक्रम को लेकर कहा कि इंडिया गठबंधन के तहत झारखंड सरकार के द्वारा लगातार जनहित में कई जनकल्याणकारी योजनाएं संचालित की जा रही है जिसका लाभ समाज के अंतिम पायदान तक के व्यक्ति तक पहुंचाने को लेकर इस कार्यक्रम की शुरूआत की है। जिसके तहत वह अपनी सेवाएं दे रहे हैं ताकि एक भी जरूरतमंद लोग इन योजनाओं का लाभ लेने से वंचित न रह जाए। विनोद कुशवाहा के द्वारा विनोद आपके द्वार कार्यक्रम को लोगों का अपार जन समर्थन और आशीर्वाद प्राप्त हो रहा है। झारखंड मुख्यमंत्री मंईया सम्मान योजना को लेकर विनोद कुशवाहा ने कहा कि झारखंड की महिलाओं को इस योजना का शत प्रतिशत लाभ पहुंचाया जा रहा है। इंडिया गठबंधन के तहत झारखंड मुख्यमंत्री मंईया सम्मान योजना आने वाले समय में मिल का पत्थर साबित होगा।

173 उद्यमिता विकास का प्रशिक्षण लेने वालों को मिला प्रमाण पत्र

हजारीबाग : नगर निगम द्वारा 28 सितंबर को सूचना भवन में इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस संबंध में नगर आयुक्त योगेन्द्र प्रसाद ने बताया कि महिलाओं के इस प्रशिक्षण से उद्यम के सहारे अपने जीविकोपार्जन और जीवन को समृद्ध बनाया है। कार्यक्रम में सहायक नगर आयुक्त अनिल कुमार पांडेय, सिटी मैनेजर मधु कुमारी, सूर्या एजूकेशन वेलफेयर सोसायटी के सचिव राजेश सिन्हा और प्रोग्राम कॉर्डिनेटर अंकुज राणा मौजूद थे।

विधायक ने किया नवनिर्मित उप स्वास्थ्य केंद्र का उद्घाटन, ग्रामीणों को मिलेगा स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ

सरकार का उद्देश्य हर गांव तक स्वास्थ्य सेवाओं को पहुंचाना है : उमाशंकर अकेला

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरही : बरही प्रखंड के पंचमाधव गांव में एक महत्वपूर्ण विकासात्मक कदम उठाते हुए नवनिर्मित उपस्वास्थ्य केंद्र का उद्घाटन किया गया। यह उद्घाटन बरही विधानसभा क्षेत्र के विधायक उमाशंकर अकेला द्वारा विधिवत रूप से संपन्न हुआ। उद्घाटन समारोह में बड़ी संख्या में ग्रामीण और गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए। उपस्वास्थ्य केंद्र के उद्घाटन के दौरान विधायक उमाशंकर अकेला का ग्रामीणों ने भव्य स्वागत किया। समारोह के दौरान प्रखंड प्रमुख मनोज रजक, 20 सूत्री अध्यक्ष इकबाल रजा, उपप्रमुख देवलाल कुशवाहा,

डीएस डॉ. प्रकाश ज्ञानी सहित कई अन्य सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ता मौजूद थे। विधायक अकेला और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने उपस्वास्थ्य केंद्र का फीता काटकर विधिवत उद्घाटन किया। इस मौके पर विधायक अकेला ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा, इस उपस्वास्थ्य केंद्र से स्थानीय लोगों को स्वास्थ्य सेवाओं का बड़ा लाभ मिलेगा। अब लोगों को स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए दूर जाने की आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि उन्हें अपने ही गांव में गुणवत्तापूर्ण सेवाएं मिलेंगी। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं का सुदृढ़ीकरण सरकार की प्राथमिकताओं में से एक है। विधायक उमाशंकर अकेला ने अंत में कहा, हमारी सरकार का उद्देश्य हर गांव तक स्वास्थ्य सेवाओं को पहुंचाना है। यह केंद्र पंचमाधव और आसपास के इलाकों में एक मील का पत्थर साबित होगा। उपस्वास्थ्य केंद्र का निर्माण 55 लाख रुपये की अनुमानित लागत से जिला परिषद की 15वीं वित्त योजना के अंतर्गत किया गया है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीणों को उनकी पहुंच के भीतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना है, ताकि समय पर इलाज और बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्राप्त हो सकें। समारोह में उपस्थित लोगों ने केंद्र की भव्यता और उसकी सुंदरता की सराहना की। सभी ने निर्माण कार्य की गुणवत्ता की प्रशंसा की और कहा कि यह केंद्र ग्रामीणों के लिए एक वरदान साबित होगा। विधायक समेत अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने संवेदक रविशंकर यादव की भी प्रशंसा की, जिन्होंने इस केंद्र का निर्माण कार्य समय पर और उच्च गुणवत्ता के साथ पूरा किया। इस विशेष अवसर पर विभिन्न राजनीतिक और सामाजिक कार्यकर्ताओ की उपस्थिति ने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

एनटीपीसी के निदेशक और एनएमएल के अध्यक्ष ने कोयला खनन परियोजना का किया दौरा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : एनटीपीसी के वरीय पदाधिकारी शिवम श्रीवास्तव, निदेशक (इंधन) एनटीपीसी लिमिटेड और एनएमएल के अध्यक्ष ने एनएमएल पकरी बरवाड़ीह कोयला खनन परियोजना का दौरा किया। परियोजना गतिविधियों और प्रमुख विकास कार्यों की समीक्षा करना था। निदेशक (इंधन) ने पीबी - सीएमपी के सम्मेलन कक्ष में परियोजना गतिविधियों की व्यापक समीक्षा की। तत्पश्चात उन्होंने माइन व्यू प्वाइंट का दौरा किया जहाँ पर उन्होंने माइंस में हो रही गतिविधियों को बारीकी से निरीक्षण किया।ऑपरेशनल दक्षता को बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, उन्होंने नए स्थापित पिट कार्यालय का उद्घाटन किया। उद्घाटन के हिस्से के रूप में निदेशक (इंधन), आरईडी कोयला खनन और अन्य अधिकारियों ने नए कार्यालय में पौधे भी लगाए, जो एनएमएल की पर्यावरणीय संवेदनशीलता के प्रति प्रतिबद्धता को दशार्ता है। इसके अतिरिक्त, निदेशक (इंधन) बनदाग गए जहां उन्होंने रैपिड लोडिंग सिस्टम (आरएलएस) का उद्घाटन किया। इस दौरे के दौरान उन्होंने आरएलएस टीम और सभी उपस्थित अधिकारियों को सुरक्षा उपायों का पालन करने और सुरक्षित कार्य करने के निर्देश दिए।

विधायक अंबा प्रसाद ने पंकरी बरवाडीह में कौशल विकास केन्द्र का किया शिलान्यास

प्रत्यूषन वबिहार संवाददाता

बड़कागांव : बड़कागांव प्रखंड के पंकरी बरवाडीह भोक्ता स्थान में डीएमएफटी मद से कौशल विकास केन्द्र सह बहुउद्देशीय भवन निर्माण शिलान्यास कार्यक्रम दिपू साव के अध्यक्षता में किया गया कार्यक्रम के बातौर मुख्य अतिथि बड़कागांव विधायक अंबा प्रसाद ने फीता काटकर व नारियल फोड़ कर किया। इस दौरान विधायक का भव्य स्वागत ग्रामीणों ने ताशा पार्टी व बैंड़ बाजे के साथ फूलमाले व गुलदस्ता भेंट कर किया। तत्पश्चात सभा की गई जिसका संचालन चन्दर साव ने किया। सभा को संबोधित करते हुए विधायक अंबा प्रसाद ने कहा कि परिस्थितियां ऐसी थी इस क्षेत्र में आ गए और आप सभी लोगों का प्यार, स्नेह व आशीर्वाद मिला और हम विधायक बनें। विधायक बनतते ही लोग 15 वर्षों का हिसाब मांगने लगे और दूसरी ओर दो वर्ष वैश्विक कोरोना महामारी से जुझते समय बीत

गया लेकिन इसके वाबजूद हम क्षेत्र के लोगों के लिए दिन रात लगे रहे और कल्याणकारी व विकास योजनाओं को धरातल पर उतारने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ा जिसका परिणाम है कि आज लोग खुद बोलते हैं क्षेत्र में विकास विधायक के कार्यकाल में हुआ है और हो रहा है। आज पंकरी बरवाडीह का जो कौशल विकास केन्द्र सह बहुउद्देशीय भवन निर्माण शिलान्यास मेरे द्वारा किया गया जो कि लगभग एक करोड़ रुपये की लागत से निर्मित होगा ग्रामिण अपने देख रेख में गुणवत्तापुर्ण काम करवाए इस भवन के बन जाने से ग्रामिणों को अनेकों लाभ मिलेंगे वहीं सभा को संबोधित करते हुए विभिन्न वक्ताओं ने अपनी बातें रखीं और विधायक को चुनाव में पुनः जीत दिलाने की बात कहीं वहीं समाज को एकजुट रहने एंव सामाजिक कुरुतियों को दूर करने की बात कही गई। इस सभा में मुख्य रूप से कांग्रेस के पुर्व प्रखंड अध्यक्ष विशेश्वर नाथ चौबे, चन्दर साव, केरेडारी मुखिया संघ के अध्यक्ष महेश साव, जगतनंदन प्रसाद गुप्ता, सुरेश साव, रमेश भोक्ता, सुरेश महतो, जूठन साव, बिनोद कुमार साव, रुपा देवी, तिलेश्वरी देवी, यशोदा देवी, सुनील कुमार आदि सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

झारखण्ड बचाओ क्रांति सेना समिति राज्य की सभी 81 विधानसभा सीटों पर लड़ेगी चुनाव

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : झारखण्ड बचाओ क्रांति सेना समिति ने आगामी झारखंड विधानसभा चुनाव में सभी 81 विधानसभा सीटों पर प्रत्याशी उतारने की घोषणा की है। इस बाबत केन्द्रीय अध्यक्ष संजय मेहता ने बताया कि संगठन की कोर कमिटी ने यह फैसला लिया है। हम पर झारखण्ड की जनता ने भरोसा जताया है, जिसका सम्मान करते हुए हम विधानसभा चुनाव में राज्य की सभी सीटों पर चुनाव लड़ने जा रहे हैं। हम वैसे साथियों के साथ मिलकर यह चुनाव लड़ेंगे जो झारखण्ड की नीतियों, डेवलपमेंट विजन, लॉंग टर्म प्लान के साथ अपनी माटी के लिए कुछ करना चाहते हों। उन्होंने झारखण्ड के सभी सीटों से

वैसे लोगों को चुनाव लड़ने के लिए आमंत्रित किया है जो राज्य के नवनिर्माण की परिकल्पना रखते हैं। www.jbkssjharkhand.in वेबसाईट पर दी गई जानकारी के अनुसार राज्य का कोई भी व्यक्ति झारखण्ड बचाओ क्रांति सेना समिति के बैनर तले विधानसभा चुनाव के लिए टिकट हेतु अपनी उम्मीदवारी पेश कर सकता है। हालांकि संगठन द्वारा दावेदारी पर विचार विमर्श किया जाएगा। संगठन की ओर से दी गई जानकारी में यह भी बताया गया है कि समिति महिलाओं एवं युवाओं को विशेष रूप से चुनाव लड़ने के लिए प्रोत्साहित करती है। वहीं प्रोफेशनल लोगों जैसे डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, पत्रकार, शिक्षक, रिटायर्ड जवान, रिटायर्ड प्रोफेसर आदि से भी संगठन ने आगे आकार राज्य हित में चुनाव लड़ने का आह्वान किया है। चुनाव लड़ने के इच्छुक लोग समिति की वेबसाईट www.jbkssjharkhand.in, ई-मेल आईडी officejbkss@gmail.com या जारी किए गए मोबाईल नंबर (9472777378) पर संपर्क कर अपनी दावेदारी प्रस्तुत कर सकते हैं।

खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण समिति के सदस्य बने मनीष जायसवाल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : भारतीय संसद की उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण समिति (2024-25) के लिए हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल को सदस्य के रूप में नामित किया गया। इससे पहले उन्हें भारतीय संसद की प्राक्कलन समिति (2024- 25) के लिए सदस्य के रूप में नामित किया जा चुका है । संसद की दूसरी किसी समिति में सदस्य के रूप में हजारीबाग सांसद मनीष जायसवाल को नामित किए जाने पर उन्होंने कहा की मुझे लोकसभा की दो महत्वपूर्ण समिति में बतौर सदस्य नामित किया गया इसके लिए अत्यंत गर्व और खुशी की अनुभूति हो रही है। सांसद मनीष जायसवाल ने इसके लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और लोकसभा अध्यक्ष

ओम बिरला का आभार जताया और धन्यवाद दिया । इधर सांसद मनीष जायसवाल को सांसद की प्राक्कलन समिति (2024- 25) के लिए सदस्य के रूप में नामित किए जाने पर समस्त हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र की जनता, एनडीए कार्यकर्त्ता और उनके शुभचिंतकों में खुशी की लहर है। पूरे लोकसभा क्षेत्र से बड़ी संख्या में लोग अपने सांसद मनीष जायसवाल को विभिन्न माध्यमों से बधाई और शुभकामनाएं दे रहें हैं ।

शहीद फाएटी थामस मेमोरियल फुटबॉल सह खो-खो प्रतियोगिता का हुआ आयोजन, शामिल हुए दर्जनों विद्यालयों के बच्चे

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : कर्णपुरा क्षेत्र में दलितों के मसीहा के रूप में अपनी छाप छोड़ने वाले शहीद फा.ए.टी. थॉमस की 27वीं पुण्यतिथि के अवसर पर ए.टी. थॉमस मेमोरियल हाई स्कूल कोयलंग लमकीटांड़ के खेल मैदान में एकदिवसीय फुटबॉल सह खो खो प्रतियोगिता का भव्य आयोजन बड़े ही धूमधाम से किया गया। जिसमें पूरे कर्णपुरा क्षेत्र में मिशनरी द्वारा संचालित 12 विद्यालयों के सैकड़ो छात्र-छात्राएं अभिभावक एवं शिक्षक शिक्षिकाऐं शामिल हुए एवं अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। मौके पर मुख्य अतिथि आजसू पार्टी बड़कागांव विधानसभा प्रभारी सह केन्द्रीय महासचिव रौशनलाल चौधरी, विशिष्ट अतिथि समाजसेवी निशि पांडे, फा. सुशील

ओसगा, प्रमुख फुलवा देवी, तलसवार पंचायत मुखिया गीता देवी, पंसस मेघा कुमारी, भाजपा बड़कागांव पुर्वी उरीमारी मंडल अध्यक्ष खेमलाल महतो, दलित विकास समिति अध्यक्ष जागेश्वर उर्फ बढ़न तुरी, सचिव बिनोद तुरी, वार्ड सदस्य लवकुश तुरी समेत मंचासीन अन्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर, विद्यालय का झंडोतोलन, शहीद एटी थॉमस के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन किया गया। वही विद्यालय के बच्चे बच्चियों के द्वारा पारंपरिक नृत्य, ढोल नगाड़े, मांदर की थाप पर अतिथियों का हाथ धुलाई, टीका लगाकर, बैच लगाकर एवं फूल माला पहनकर भव्य स्वागत किया गया एवं कर्णपुरा क्षेत्र से आए हुए सभी बच्चे बच्चे के द्वारा मनमोहन मार्च फास्ट कर सभी को मंत्र मुक्त कर दिया। मुख्य अतिथियों के द्वारा विधिवत फुटबॉल को किक मारकर एवं परिचय प्राप्त कर टूर्नामेंट का आगाज किया गया। दिनभर चिलचिलाती धूप में विद्यालय के बच्चों बच्चों के द्वारा फुटबॉल एवं खो-खो खेल का बेहतर प्रदर्शन किया एवं हजारों की संख्या में उपस्थित दर्शकों ने समय-समय पर हौसला करते रहे, वही आयोजक टीम दलित विकास समिति के सदस्यों ने व्यवस्था स्थापित करने में दिन-रात जुटे रहे। फुटबॉल एवं खो-खो प्रतियोगिता में बेहतर प्रदर्शन करने वाले विद्यालय को मुख्य अतिथि एवं उपस्थित विशिष्ट अतिथियों के द्वारा कप एवं मैडल देकर सम्मानित किया गया एवं आगे भी बेहतर प्रदर्शन करने के लिए हौसला बढ़ाया। देर शाम को विद्यालय के बच्चे बच्चियों के द्वारा एक से बढ़कर एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रेरणादायक नाटक प्रस्तुत किए गए जिससे सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। मौके पर मुख्य रूप से आजसू बड़कागांव विधानसभा प्रभारी रोशनलाल चौधरी, विशिष्ट अतिथि निशि पांडे, फा. सुशील ओसगा, प्रमुख फुलवा देवी, पूर्व प्रमुख प्रतिनिधि कालेश्वर गंझु, अवधेश सिंह, तलसवार पंचायत मुखिया गीता देवी, पंसस मेघा कुमारी, भाजपा बड़कागांव पुर्वी उरीमारी मंडल अध्यक्ष खेमलाल महतो, गिरेन्द्र प्रसाद, पंसस प्रतिनिधि मिथलेश साव, सहदेव गंझु, प्रधानाचार्य गोविंद पासवान, मुनेश्वर कुमार, पिंकी मिर्धा समेत सैकड़ों महिला पुरुष शामिल हुए।

संक्षिप्त खबरें

जयप्रकाश भाई पटेल ने अपने पिता की 13वीं पुण्यतिथि मनाई

हजारीबाग : हजारीबाग जिला के विष्णुगढ़ प्रखंड अंतर्गत बिष्णुगढ़ इंटर महाविद्यालय में पूर्व मंत्री जयप्रकाश भाई पटेल ने अपने पिता स्वर्गीय टेकलाल महतो की पुण्यतिथि, प्रखंड के सुदूरवर्ती गांवो से पहुंचे हुए सभी ग्रामीणों, कार्यकर्ताओं, महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की उपस्थिति में मनाया। पूर्व मंत्री पटेल के द्वारा स्वर्गीय टेकलाल महतो की आदम कद प्रतिमा में विधिवत पूजा अर्चना करते हुए माल्यार्पण किया गया। तदोपरांत अपने ससुर स्वर्गीय टेकलाल महतो की प्रतिमा में ललिता देवी ने भी प्रसाद चढ़ाते हुए माल्यार्पण किया। कार्यक्रम के दौरान पटेल ने स्वर्गीय टेकलाल महतो अमर रहे नारे के साथ-साथ झारखंड के तमाम शहीदों को याद करते हुए विनोद बिहारी महतो, निर्मल महतो, साधु, सैनाथ, शनिचर महतो, अमर रहे का भी नारा लगाया। एवं उन्हें याद किया। झारखंड मुक्ति मोर्चा के पूर्व जिला अध्यक्ष शंभू लाल यादव ने भी स्वर्गीय टेकलाल महतो की प्रतिमा में माल्यार्पण किया। मौके पर अब्बास अंसारी, रामजन्म राय, सुरेंद्र नाथ मिश्रा, विशेश्वर स्वर्णकार, सुनील कुमार, संजय कुमार, विवेक कुमार, गुरु प्रसाद, हीरामन महतो, दामोदर महतो, बटेश्वर मिश्रा, लालजी महतो, मोती रविदास, हेमलाल साहू इत्यादि सैकड़ो कार्यकर्ता एवं ग्रामीण उपस्थित थे।

संजीव बेदिया ने मुख्यमंत्री राहत कोष से पीड़ित महिला को दिया चेक

बड़कागांव: झारखंड मुक्ति मोर्चा केंद्रीय सचिव सह झारखंड सरकार राज्य परिवहन प्राधिकार सदस्य संजीव कुमार बेदिया के के प्रयास से मुख्यमंत्री राहत कोष से किडनी से ग्रसित मदन मोहन को इलाज के लिए पत्नी नूतन कुमारी को 100000 (एक लाख) का चेक दिया गया। नूतन कुमारी ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन एवं संजीव बेदिया को धन्यवाद दिया।और आभार प्रकट किया कहा कि आप लोग जैसा झारखंड में व्यक्ति अगर है तो हम गरीबों की चिंता करने की जरूरत नहीं है। वहीं बेदिया ने कहा हेमंत सरकार गरीब गुरुवा के लिए ही बना है। मौके पर झामुमो केंद्रीय सचिव संजीव बेदिया, शंकर साव,अनूप कुमार, सुरेंद करमाली, कयूम अंसारी, छोटू कुमार मिस्री भगत आदि लोग उपस्थित थे।

शहीद-ए-आजम भगत सिंह की जयंती पर कांग्रेसियों ने उन्हें किया याद

हजारीबाग : जिला कांग्रेस कार्यालय कृष्ण बल्लभ आश्रम में शहीद-ए-आजम भगत सिंह की 117 वीं जयंती उनके चित्र पर माल्यार्पण कर मनाई गई । कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए जिला अध्यक्ष शैलेन्द्र कुमार यादव ने कहा कि क्रान्तिकारियों के परिवार में जन्म पानेवाले भगत सिंह के हृदय में बचपन से ही अंग्रेजों के अत्याचारों के प्रति घृणा थी। हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ की स्थापना कर सशस्त्र विद्रोह द्वारा देश को स्वतंत्र करने की शपथ ली गई और फिर वह प्रसिद्ध असेम्बली बम काण्ड हुआ, जिसमें उन्होंने स्वयं होकर गिरफ्तारी दी। क्रांतिकारी की गुंज घर-घर में उठी और परिणाम वही हुआ, जिसकी अपेक्षा थी। भारत का यह वीर सपूत अपने अल्प आयु में अपने दो अन्य साथियों सुखदेव एंव राजगुरू के साथ हंसते हुए फांसी पर झूल गया। मौके पर महानगर कांग्रेस अध्यक्ष मनोज नारायण भगत, प्रदेश महासचिव बिनोद कुशवाहा, जिला उपाध्यक्ष सह प्रवक्ता निसार खान, लाल बिहारी सिंह, मिथिलेश दुबे, अजय गुप्ता, गोविंद राम, कृष्णदेव प्रसाद सिंह, सलीम रजा, कजरू साव, नरेश गुप्ता, दिलीप कुमार रवि, जावेद इकबाल, सदरूल होदा, अनिल भुईयां, बाबर अंसारी, अर्जुन सिंह, देवधारी प्रसाद मेहता, कौशल कुमार सिंह, राम कुमार पटेल, अमृतेष रंजन, अमर सिंह यादव, कृष्णा किशोर प्रसाद, निसार अहमद भोला आदि उपस्थित थे ।

अटल विचार मंच के बरही कार्यालय में कार्यकर्ताओं ने की बैठक

हजारीबाग : अटल विचार मंच के बरही कार्यालय में पार्टी का कार्यकर्ताओं की एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता शैलेंद्र कुमार ने किया। बैठक में मुख्य रूप से बरही प्रखंड मुख्यालय की समस्याओं पर विस्तार पूर्वक चर्चा किया गया आने वाले नवरात्र को देखते हुए बरही में व्याप्त गंदगी को जल्द से जल्द हटाने की मांग किया गया गंदगी के कारण बीमारी फैलने की आशंका व्यक्त किया गया। साथ ही बरही में लगने वाले जाम की समस्याओं को देखते हुए बरही चौक पर अस्थाई रूप से ट्रैफिक पुलिस की व्यवस्था, बरही प्रखंड मुख्यालय का मुख्य सड़क जो बाईपास से मुख्य सड़क गया रोड से डीवीसी के आगे बायपास रोड तक बरही बाजार होते हुए गुजराती है उसमें जगह-जगह जानलेवा गड्ढे बन गए हैं जिसके कारण आए दिन दुर्घटनाएं होती रहती है।वाहनों और पैदल यात्रियों को आने जाने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। उस महत्वपूर्ण सड़क को अभिलंब दुरुस्त करने की मांग की गई। अटल विचार मंच के कार्यकर्ताओ ने संकल्प लिया है की जनता की को भी समस्या उसको प्रमुखता से उठाया जाएगा। अगर मांगों को पूरा करवाने के लिए आंदोलन भी करना पड़ता है तो हम सब सड़क पर उतरने को तैयार हैं। बैठक में मुख्य रूप से छठी देवी श्भारतीयश्, राजेंद्र शर्मा, विनोद कुमार मेहता, शंभू माली, मनोज प्रजापति, दशरथ राणा सहित अटल विचार मंच के दर्जनों प्रमुख कार्यकर्ता उपस्थित हुए।

एक नजर

कार्डायबकॉन का आयोजन आज

रांची: कार्डायबकॉन 2024 का आयोजन रविवार को रांची में होना सुनिश्चित हुआ है। इस आयुर्विज्ञान सम्मेलन में झारखण्ड एवं पड़ोसी राज्यों के गणमान्य चिकित्सक: हृदय रोग, विशेषज्ञ, मधुमेह, वृक्क रोग, स्नायुतन्त्र एवं फुफ्फुस रोग विशेषज्ञ नूतन अनुसन्धान पर व्याख्यान प्रस्तुत करेगें। इस सम्मेलन से परामर्शदात्री चिकित्सकों को लाभ मिलेगा। इस नूतन अनुसन्धान से रोगियों के उपचार में लाभदायक सिद्ध होगा ।

राजधानी में आज कई फीडरों से बिजली आपूर्ति बाधित रहेगी

रांची : हटिया ग्रिड के मरम्मत कार्य के कारण रविवार को राजधानी के कई फीडरों से बिजली आपूर्ति बाधित रहेगी। संचरण निगम के वरीय प्रबंधक राहुल कुमार ने बताया कि 29 सितंबर को 132/33 केवी ग्रिड-स्टेशन हटिया वन की मरम्मत की जायेगी। इस कारण 29 सितंबर को सुबह 11-15 बजे से अपराह्न तीन बजकर 30 मिनट तक धुर्वा, रातू, बेड़ो, अरगोड़ा, आरएंडडी सेल और हाईकोर्ट फीडर से बिजली आपूर्ति बाधित रहेगी।

बांग्लादेशी घुसपैठियों को चुन-चुन कर बाहर निकालेगी भाजपा : बाबूलाल

रांची : भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने शनिवार को पोड़ैयाहाट मैदान में आयोजित परिवर्तन सभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि झारखंड में अगर कोई सबसे ज्यादा कोई प्रभावित हुए हैं तो वो हमारे आदिवासी समाज के लोग हैं। आदिवासी मुख्यमंत्री होते हुए भी सबसे ज्यादा आदिवासियों की जमीन और आदिवासियों की इज्जत लूटी गयी है। सरकार ने 1000 करोड़ का खनन घोटाला किया है। साथ ही सेना की जमीन को भी लूट खाया, हेमंत सरकार ने झारखंड को लूट और झूठ के सिवाय कुछ नहीं दिया है। बंग्लादेशी घुसपैठियों के कारण झारखंड की डेमोग्राफी बदल रही है। अगर यही हाल रहा तो आगामी दिनों में आदिवासियों के लिए खतरा है। बाबूलाल ने कहा कि प्रदेश में भाजपा की सरकार बनी तो बंग्लादेशी घुसपैठियों को चुन-चुन कर बाहर निकाला जायेगा। प्रदेश में बनानी होगी भाजपा की सरकार भाजपा ही आदिवासियों के माटी, रोटी और बेटी की रक्षा कर सकती है।

वादों के निस्तारण में मध्यस्थों और अधिवक्ताओं की भूमिका अहम : दिवाकर पांडे

रांची: झारखंड राज्य विधिक सेवा प्राधिकार के कार्यपालक अध्यक्ष न्यायामूर्ति सुजित नारायण के निर्देश पर रांची के व्यवहार न्यायालय में शनिवार को राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उदघाटन बतौर मुख्य अतिथि न्यायायुक्त दिवाकर पांडे सहित अन्य ने संयुक्त रूप से किया। उद्घाटन करने वालों में कुटुम्ब न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश एसएस फातमी, सिटी एसपी राजकुमार मेहता, रांची जिला बार एसोसिएशन के अध्यक्ष शम्भू प्रसाद अग्रवाल, महासचिव संजय कुमार विद्रोही, स्टैट बैंक ऑफ इंडिया के डिप्टी जेनरल मैनेजर एवं रांची जोनल मैनेजर देवेश मित्तल भी शामिल थे। मौके पर न्यायायुक्त दिवाकर पांडेय ने कहा कि वादों के निस्तारण में मध्यस्थों और अधिवक्ताओं की भूमिका अहम होती है। उन्होंने मध्यस्थों एवं अधिवक्ताओं को सामंजस्य स्थापित कर अधिक से अधिक वादों के निस्तारण पर जोर दिया।

सीएम ने औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के 444 प्रशिक्षण अधिकारियों को दिया नियुक्ति पत्र

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कहा कि विगत दिनों ही इस शौर्य सभागार में राज्य सरकार ने 527 युवक-युवतियों को नियुक्ति पत्र दिया है। कोई शिक्षक बने, कोई इंजीनियर बने, कोई टेक्नीशियन बने। अलग-अलग विधाओं में युवाओं को नौकरी प्राप्त हुई। आज फिर से इस सभागार में करीब 444 नौजवानों को अपनी जिंदगी के नए सफर में प्रवेश के लिए मार्ग प्रशस्त हुआ है। आज आपके लिए, आपके परिजनों के लिए खुशी का दिन है। मैं आपके साथ-साथ आपके परिजनों का भी अभिनंदन करता हूं। आप सभी लगातार आगे बढ़ें, इसके लिए आप सभी को ढ़ेर सारी शुभकामनाएं। मुख्यमंत्री ने शनिवार को शौर्य सभागार, जैप-1, डोरंडा, रांची में आयोजित नवचयनित 444 प्रशिक्षण अधिकारियों के नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम में अपने सम्बोधन में कही। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय तकनीक का है। अब हर व्यक्ति को दक्ष और हुनरमंद होना अति आवश्यक है। अब वक्त की गति बढ़ गई है। सबके पास समय की कमी है। अब यह आप पर निर्भर करता है कि आप अपने जीवन को कितना रफ्तार दे सकते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान सरकार के कार्यकाल में कई चुनौतियां रही हैं लेकिन हमारी सरकार ने कभी हार नहीं माना। राज्य सरकार न रुकी न थकी। क्योंकि, आम लोगों का समर्थन और प्यार हमारी सरकार को हमेशा प्राप्त होता रहा है।

नौजवानों को रोजगार के क्षेत्र में मिल रही नई दिशा

मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कहा कि आज राज्य के आईटीआई में शिक्षारत छात्रों को नियुक्ति पत्र प्रदान किया गया है। राज्य बनने के बाद मुझे लगता है कि यह पहला या दूसरा मौका है जब आईटीआई के छात्रों को नियुक्ति पत्र प्राप्त हो रहा है। हमारी सरकार रोजगार के रास्ते पर नौजवानों को नई दिशा देने का अथक प्रयास कर रही है। हमारी सरकार की हमेशा यही कोशिश रही है कि सभी के लिए कार्य किया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि हम यह नहीं कह सकते हैं कि हमने शत-प्रतिशत हर कार्य को पूरा किया है लेकिन राज्य को देश के अग्रणी राज्यों में शामिल करने के लिए ईमानदारी और प्रतिबद्धता के साथ कार्य किए गए हैं।

प्रतियोगिता परीक्षा के आयोजन से संबंधित सभी कड़ियों को जोड़ा

मुख्यमंत्री ने कहा कि कोरोना संक्रमण में दो वर्ष तक जीवन और जीविका बचाने के बाद इतने कम समय में चाहे वह जेपीएससी, जेएसएससी हो या अलग-अलग विभागों के लिए नियुक्ति पत्र का वितरण हो सभी कार्य लगातार हुए हैं।

मुख्यमंत्री से पंजाबी हिंदू बिरादरी के प्रतिनिधिमंडल ने की मुलाकात

रांची: मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से शनिवार को कांके रोड रांची स्थित मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में पंजाबी हिंदू बिरादरी के एक प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की। मुख्यमंत्री को प्रतिनिधिमंडल ने 12 अक्टूबर को रांची के मोरहाबादी मैदान में आयोजित रावण दहणर कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया। मुख्यमंत्री को प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने अवगत कराया कि पंजाबी हिंदू बिरादरी ने हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी रावण दहण कार्यक्रम धूमधाम से मनाने का निर्णय लिया है। प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने मुख्यमंत्री को सपरिवार इस कार्यक्रम में उपस्थित होने के लिए आग्रह किया। मुख्यमंत्री को प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने अवगत कराया कि कार्यक्रम में भव्य आतिशबाजी, स्थानीय लोक कलाकारों के साथ उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध कलाकार, पायरो फायर बॉक्स मुंबई और कोलकाता की टीम द्वारा प्रदर्शन, श्री राम जी की जीवंत मूर्ति, रावण वध की जीवंत झांकी इत्यादि सहित मनमोहक संस्कृति कार्यक्रम की प्रस्तुति भी की जाएंगी, जो दर्शकों के लिए आकर्षण का मुख्य केंद्र होंगे। मुख्यमंत्री ने पंजाबी हिंदू बिरादरी के सदस्यों को शुभकामनाएं दी।

लायंस क्लब ने सदर अस्पताल में नि:शुल्क भोजन का किया वितरण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : लायंस क्लब ऑफ रांची ग्लोबल के द्वारा प्रत्येक शनिवार को सदर अस्पताल परिसर में भोजन का वितरण किया जा रहा है। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत आज भी लगातार 11वी शनिवार को क्लब के पदाधिकारियों द्वारा अस्पताल परिसर में मरीजों, उनके परिजनों के साथ ही आसपास के जरूरतमंदों लोगों के बीच भोजन का वितरण किया गया। मौके पर बतौर मुख्य अतिथि सदर अस्पताल के सिविल सर्जन प्रभात कुमार ने क्लब के पदाधिकारियों और सदस्यों का उत्साहवर्द्धन करते हुए कहा कि जरूरतमंदों के बीच भोजन का वितरण करना सराहनीय प्रयास है। क्लब के प्रेसिडेंट अमित शर्मा और चार्टर प्रेसिडेंट शैलेष अग्रवाल ने संयुक्त रूप से अवगत कराया कि क्लब के इस प्रोजेक्ट के तीसरे चरण में आज लगभग 1000 लोगों के बीच भोजन का वितरण किया गया है। लोगों का सहयोग कर हम अपने इस प्रोजेक्ट से काफी संतुष्ट हैं। हमारा यह प्रोग्राम प्रत्येक शनिवार को सदर अस्पताल परिसर में संचालित होता है। सचिव मनोज मिश्रा ने कार्यक्रम की व्यवस्था में सहयोग करने के लिए अस्पताल प्रबंधन और इस प्रोजेक्ट को सफल बनाने के लिए क्लब के सदस्यों और समाजसेवियों के प्रति आभार जताया। आज के प्रोजेक्ट को सफल बनाने में क्लब के कार्यक्रम को सफल बनाने में उपाध्यक्ष खुशबु अग्रवाल, कोषाध्यक्ष संतोष अग्रवाल, रीजनल चेयरमेन प्रेम शंकर मिश्रा, पीआरओ अल्तमश आलम, पीयूष कुमार प्रीति कुमारी का भरपूर योगदान रहा।

हेमंत सरकार ने आंगनबाड़ी सेविका सहायिका को धोखा दिया : जेपी पांडेय

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड प्रदेश समाज कल्याण आंगनवाड़ी कर्मचारी संघ के संयोजक जय प्रकाश पाण्डेय ने कहा है कि हेमंत सरकार ने आंगनवाड़ी सेविका- सहायिका को धोखा दिया है। हेमंत सरकार के 27 सितंबर को हुई कैबिनेट की बैठक में आंगनवाड़ी सेविका-सहायिका के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया गया है। उन्होंने शनिवार को प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि 23 सितंबर को आंगनवाड़ी सेविका-सहायिका के रैली में गिरिडीह के विधायक सुदिव्य कुमार सोनू ने आंगनवाड़ी सेविका-सहायिका को संबोधित करते हुए कहा था की 27 अक्तूबर के कैबिनेट के बैठक में आप लोगों को खुशखबरी मिल जाएगी। लेकिन कैबिनेट में ऐसा कुछ भी निर्णय नहीं हुआ। इस पर संगठन में भारी आक्रोश व्याप्त है और आने वाले विधान सभा चुनाव में सबक सिखाने की तैयारी हो रही है साथ ही पांच अक्टूबर से संपूर्ण राज्य के लगभग 80 हजार सेविका-सहायिका अपने आंगनवाड़ी केन्द्रों को बंद करने का निर्णय ले लिया है। जब तक वेतनमान नहीं तब तक आंगनवाड़ी केंद्र नहीं। सभी आंगनवाड़ी केन्द्रों की सेविका- सहायिकाएं 05 अक्तूबर से अनिश्चितकालीन हड़ताल पर चली जायेगी। जब तक उनके 08 सूत्री मांगों को सरकार पूरी नही कर देती। सभी जिलाध्यक्ष अपने जिले में बैठक कर 05 अक्तूबर से बंदी का एलान करे और केंद्रों को नियमित जांच भी करे की कोई भी केंद्र खुला नहीं रहना चाहिए। इस एलान में समाज कल्याण आंगनवाड़ी कर्मचारी संघ के महामंत्री अशोक नयन, प्रदेश अध्यक्ष देवांति देवी, प्रयाग यादव, सुंदरी तिर्की, रेखा कुमारी, रीना देवी,अनिता विरुआ, सीता तिग्गा, के डी सिंह, सुशील कुमार पांडेय और महेश सोरेन के संयुक्त निर्णय से किया गया है।

राष्ट्रीय युवा शक्ति ने भगत सिंह की जयंती पर रखा उपवास

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : राष्ट्रीय युवा शक्ति ने शहीद-ए-आजम भगत सिंह की जयंती पर शनिवार को मोरहाबादी स्थित बापू वाटिका के समीप एक दिवसीय उपवास रखा। मौके पर राष्ट्रीय युवा शक्ति केंद्रीय अध्यक्ष उत्तम यादव ने कहा कि भगत सिंह की प्रतिमा पिछले डेढ़ वर्षो से थाने में है। थाने में सैकड़ो कबाड़ गाड़ियों के बीच में भगत सिंह की प्रतिमा रखना दुर्भाग्य है। सरकार एवं प्रशासन सोई हुई है। उन्हें जगाने को लेकर मजबूरन राष्ट्रीय युवा शक्ति के जरिये उनकी जयंती पर मोरहाबादी मैदान में जिस स्थान पर भगत सिंह की प्रतिमा का स्थान दिया गया था उस स्थान पर एकदिवसीय उपवास पर बैठे हैं। उपवास कार्यक्रम एकदिवसीय है। यदि सरकार एवं जिला प्रशासन पांच अक्टूबर तक भगत सिंह की प्रतिमा के लिए स्थान नहीं देती है तो छह अक्टूबर को भगत सिंह की प्रतिमा को थाने से छुड़ाकर हजारों हजार की संख्या में लेकर निकलेंगे और किसी स्थान पर लगाएंगे। भगत सिंह ने युवा अवस्था में में ही देश को आजाद करने के लिए अंग्रेजों की कितनी यातनाएं सहीं। फिर भी उनका देश प्रेम का मनोबल नहीं डोला। हंसते-हंसते 23 मार्च, 1931 को फांसी पर चढ़ गए हैं। इस मौके पर प्रणव कुमार बब्बू,, सोनू गुप्ता, संजय तिवारी, उमेश साहू, रंजन माथुर, प्रकाश सिन्हा, राहुल गुप्ता, रोशन साहू, अजीत गुप्ता, अजय कुमार, विनोद कुमार सिंह, डॉ अजय नाथ शाहदेव सहित अन्य मौजूद रहे।

भारत पर्यटन क्षेत्रीय कार्यालय ने मनाया विश्व पर्यटन दिवस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : विश्व पर्यटन दिवस पर शनिवार को बिरसा मुंडा एयरपोर्ट रांची पर मीट एंड ग्रीट सह वसुधैव कुटुम्बकम कार्यक्रम का आयोजन किया। इस दौरान भारत पर्यटन क्षेत्रीय कार्यालय, झारखंड ने पर्यटन संवर्धन एवं जागरुकता गतिविधियों के बारे में लोगों अवगत कराया। कार्यक्रम के दौरान आईएक्सआर फ्लाइट के आगमन क्षेत्र में मेहमानों का गर्मजोशी से स्वागत किया गया और उन्हें पर्यटन संवर्धन एवं ₹विश्व पर्यटन दिवस-2024 के उत्सव के लिए गुलाब और चॉकलेट भेंट किए गए। भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण ने मेहमानों से बातचीत करने और विश्व पर्यटन दिवस के महत्व को समझाने में कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया। मेहमानों ने भी इस दिन को मनाने के लिए कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक भाग लिया। एएआई, वाणिज्यिक विभाग और टर्मिनल प्रबंधक और उनकी टीम ने भरपूर सहयोग दिया। मीट एंड ग्रीट के दौरान क्रिकेट एसोसिएशन बंगाल की टीम का भी स्वागत किया गया और उनके कोच तथा टीम के सदस्यों ने अतुल्य भारत के नारे में भाग लिया। इस अवसर पर यात्रियों और पर्यटकों के बीच पर्यटन के प्रति जागरुकता पैदा करने के लिए अतुल्य भारत और देखो अपना देश के नारे भी प्रदर्शित किए गए।

ग्राहक पंचायत के सदस्यता अभियान की हुई समीक्षा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत प्रांत बैठक सह स्वर्ण जयंती वर्ष का समारोप समारोह का दो दिवसीय आयोजन का आज प्रथम दिन की बैठक रानी सती मंदिर के प्रांगण आयोजित की गयी। इस समारोह में राष्ट्रीय संगठन मंत्री दिनकर सबनीस, स्वर्ण जयंती आयोजन समिति की अध्यक्ष पद्मश्री छुटनी महतो जी, उपाध्यक्ष ऐंजिल उपाध्याय जी भी उपस्थित थी । आज के दिन की बैठक कुल 6 सत्रों में संचालित की गई। कार्यक्रम का आरंभ ग्राहक गीत से हुआ जिसे डॉली परिहार ने गाया ।तत्पश्चात मंचासीन अतिथियों के द्वारा दीप प्रज्वलन का कार्यक्रम किया गया। संगठन मंत्र का वाचन किया वी प्रभु जी ने। अजय ने आज दिन भर होने वाले कार्यक्रम के बारे में परिचय दिया । संगठन में बैठक का क्या महत्व है और अपने प्रतिभागियों से क्या अपेक्षा रहती है इस विषय पर सबनीस दिनकर जी ने अपना वक्तव्य दिया । सदस्यता अभियान की समीक्षा की प्रांत सहसचिव अरविंद राणा जी ने तत्पश्चात सबसे अधिकतम सदस्यता वाला जिला दुमका, सबसे अधिक कार्यक्रम करने वाला जिला पूर्वी सिंहभूम और सबसे अधिक महिला सदस्य बनाने वाली सदस्य सरिता सिंह जी को राष्ट्रीय संगठन मंत्री दिनकर सबनीस जी ने प्रतीक चिन्ह देकर पुरस्कृत किया। प्रथम सत्र का संचालन किया प्रांत सचिव अरविंद राणा जी ने। द्वितीय सत्र का संचालन किया प्रांत सचिव डॉक्टर कल्याणी कबीर जी ने और इस सत्र में सभी जिला के सचिवों और संयोजकों के द्वारा अपने अपने जिला का वृत्त प्रस्तुत किया गया । तत्पश्चात पर्यावरण आयाम प्रमुख बिमला हेंब्रम, महिला आयाम प्रमुख रूबी लाल, विधि आयाम प्रमुख रवि प्रकाश सिंह और प्रचार आयाम प्रमुख अंशु कुमार के द्वारा भी वृत्त दिया गया। तृतीय सत्र में कुछ नवीन कार्यकताओं का नियोजन किया गया और साथ ही प्रांत संगठन मंत्री शिवाजी क्रांति जी ने दायित्व बोध पर अपना बौद्धिक दिया। चतुर्थ सत्र में से गट बैठक हुआ जिसमें दिनकर जी ने टोली सदस्यों से विचार-विमर्श किया। सभी आयाम प्रमुखों ने अपनी अपनी टोली के साथ विचार विमर्श किया । पंचम सत्र में गट सह मुक्त चर्चा और जिज्ञासा समाधान रखा गया। षष्ठ सत्र में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें देशभक्ति गीत, भजन ,कविता, वीर रस इत्यादि की प्रस्तुति कार्यकताओं के द्वारा दी गई। कल्याण मंत्र के साथ आज की बैठक संपन्न हुई।

नए नियोजित हुए सदस्यों में नाम इस प्रकार रहे

प्रांत कार्यकारिणी में
उपाध्यक्ष ऐंजिल उपाध्याय, सह सचिव आर अजय, प्रांत पर्यावरण संरक्षण आयाम प्रमुख डॉक्टर अनीता शर्मा

पूर्वी सिंहभूम में
पर्यावरण संरक्षण आयाम अमलेंदु ,जिला महिला आयाम सह प्रमुख रीना परितोष, कदमा नगर प्रमुख मीरा गुप्ता, कदमा नगर सहप्रमुख सपना तिवारी, बागबेड़ा नगर आयाम प्रमुख सुनीता तिवारी, सरायकेला खरसांवा जिला संयोजिका डॉ रजनी रंजन

रांची से
अध्यक्ष आलोक पांडे, उपाध्यक्ष बृजमोहन ओझा, सचिव आलोक कुमार सिंह, सह सचिव निशांत सोलंकी, महिला आयाम प्रमुख सुश्री स्नेहा भदोरिया

रामगढ़ के
अध्यक्ष सुमन कुमार श्रीवास्तव, उपाध्यक्ष कमलेश बेदिया, सचिव कौशिक गुप्ता, सदस्य गुप्तेश्वर कुमार सिंह, गुमला से जिला संयोजक दिलीप कुमार,बसिया से संयोजक श्री राधा कृष्ण राम, चतरा से श्री सन्नी कुमार सिंह आदि मौजूद रहे।

संक्षिप्त खबरें

श्री श्याम मंदिर में इंदिरा एकादशी का हुआ आयोजन

रांची : हरमू रोड के श्री श्याम मंदिर में आज इंदिरा एकादशी का भव्य रूप से आयोजन किया गया। सुबह 5:00 बजे मंदिर के पट खुलते ही भक्तों का तांता लगा रहा। सुबह के 5:30 बजे की मंगला आरती में भक्तों ने बाबा के समक्ष अपने लिए मंगल कामना की अरदास लगाई। इसके बाद बाबा का पर्दा लगाकर प्रात: कालीन श्रृंगार किया गया । श्रृंगार आरती में बड़ी संख्या में भक्तजन उपस्थित थे । सभी ने श्रृंगार आरती में हाजिरी लगाकर जय जय जय खाटू के वासी जय जय बाबा श्याम का गायन किया। 12:15 बजे की विश्राम आरती के बाद 12:30 बजे मंदिर के पट लगा दिए गए। दोपहर के बाद बाबा श्याम का एवं सभी देवी देवताओं सहित तैल चित्रों एवं गुरु जनों का संध्याकालीन द्वितीय श्रृंगार मंडल के मंत्री श्याम सुंदर शर्मा एवं मंदिर के आचार्यों द्वारा किया गया। कोलकाता से मंगाए गए रजनीगंधा मॉर्गन गेंदा सॉन्ग ऑफ इंडिया लाल गुलाब तुलसीदल की मोटी मोटी फूल मालाओं से खाटूनरेश का दिव्य अनुपम श्रृंगार किया गया। संध्या 4:30 बजे पट खुलते ही बाबा के दर्शन के लिए भक्त उमड़ पड़े। ज्ञातव्य है कि बाबा श्याम का विशेष दिन एकादशी होने के कारण आज हरमू रोड के श्री श्याम मंदिर में वृहत पैमाने में भक्त अपने अर्जी लेकर आते हैं। भक्तों में यह मानना है की ग्यारस में सच्चे दिल से लगाई हुई अर्जी बाबा श्याम जरूर स्वीकार करते हैं। हरमू रोड के श्री श्याम मंदिर में हर भक्त की अर्जी को मंदिर के आचार्य द्वारा बाबा श्याम के समक्ष रखा जाता है । संध्या ग्वाल आरती में भक्तों का उमंग देखते ही बन रहा था।

6.73 करोड़ की लागत से पहाड़ी मंदिर का होगा पुनर्विकास

रांची: रांची जिला अंतर्गत पहाड़ी मंदिर की मरम्मत एवं पुनर्विकास कार्य के लिए कुल 673.067 लाख की प्रशासनिक स्वीकृत दी गई है। रांची के उपायुक्त राहुल कुमार सिन्हा ने विभागीय सचिव के पत्र के आलोक पहाड़ी मंदिर की मरम्मत एवं पुनर्विकास कार्य के लिए 424.543 लाख एवं गार्ड वॉल तथा बॉउंड्री वॉल निर्माण कार्य के लिए 248.524 लाख कुल 673.067 लाख की स्वीकृति दी है। योजना के क्रियान्वयन के लिए कार्यपालक अभियंता, एनआरईपी-1, रांची को कार्यकारी एजेंसी के रूप में नियुक्त किया गया है, जो मुख्य अभियंता, झारखण्ड पुलिस हाउसिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड तकनीकी स्वीकृत प्राक्कलन के अनुसार ही योजना का क्रियान्वयन करायेंगे। उपायुक्त के जरिये अनुमोदित प्राक्कलन के अनुरूप निविदा (टेंडर) आमंत्रित कर 31 मार्च, 2026 तक योजना पूरा करने का आदेश दिया है। उपायुक्त ने कार्यकारी एजेंसी से योजना स्वीकृति के बाद सात दिनों के अंदर टेंडर जारी करने को कहा है। साथ ही आवेदन प्राप्ति की तिथि के अगले पांच दिनों के अंदर टेंडर का निष्पादन करने का आदेश दिया है। योजना के कार्यान्वयन के लिए कार्यपालक अभियंता और एनआरईपी-1 को कई आदेश दिये गए हैं।

देश, राज्य और समाज के लिए हमारी एक जिम्मेवारी : अरूण कुमार

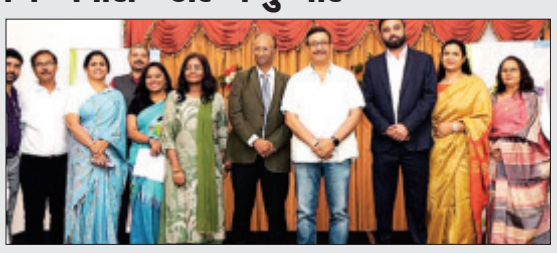

रांची: शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, पर्यावरण, महिला सशक्तिकरण जैसे मुख्य मुद्दों को लेकर मैप्स ग्लोबल फाउंडेशन का गठन किया गया। शनिवार को होटल कैपिटल हिल में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सेवानिवृत्त आइएस अरूण कुमार सिंह, विशिष्ट अतिथि डीआइजी सीआइडी संध्या रानी मेहता, विधायक अनूप सिंह की पत्नी अनुपमा सिंह ने मैप्स ग्लोबल फाउंडेशन का शुभारंभ किया। इस अवसर पर अरूण कुमार सिंह ने कहा कि देश, राज्य और समाज के लिए हमारी एक जिम्मेवारी और दायित्व होनी चाहिए। इसी उद्देश्य से मैप्स ग्लोबल फाउंडेशन का गठन किया गया है, इसके लिए जमीनी स्तर पर काम करने की जरूरत है। संध्या रानी मेहता ने कहा कि हमें ऐसे समाज का निर्माण करना है, जहां महिला और बच्चे सुरक्षित हो। झारखंड में महिलाओं और बच्चों की बेहतरी के लिए कार्य किया जा रहा है। इसमें थोड़ा और प्रयास करने की जरूरत है। फाउंडेशन के फाउंडर अनूप प्रसाद ने फाउंडेशन के उद्देश्य पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि झारखंड में एक कैंसर हॉस्पिटल खोलने की योजना है। उन्होंने कहा कि शिक्षा, अवसर और नवाचार के माध्यम से, हमारा लक्ष्य स्थायी प्रभाव पैदा करना और जीवन को बदलना है।

एक नजर

शहीद भगत सिंह की 117वीं जयंती पर दी गई श्रद्धांजलि

बोकारो : शनिवार को बोकारो कोर्ट परिसर में अधिवक्तावो ने सादगी पूर्वक शहीद भगत सिंह की 117 वी जयंती मनाई। ज्ञात हो कि शाहिद भगत सिंह का जन्म आज ही के दिन 28 सितंबर 1907 को हुआ था। इस अवसर पर अधिवक्तागण को संबोधित करते हुए इंडियन एसोसिएशन ऑफ लॉयर्स के नेशनल कौंसिल मेंबर अधिवक्ता रणजीत गिरि ने कहा कि आज भगत सिंह 117वीं जयंती है। हम भगत सिंह के तरह अपने आदर्शों के लिए संघर्ष करेंगे लेकिन अहिंसात्मक और संवैधानिक तरीके से। यही उनकी जयंती पर सच्ची श्रद्धांजलि होगी। अधिवक्ता अतुल कुमार ने कहा की भगत सिंह के बताए रास्ते पर चल कर ही सभी के लिए समानता, स्वतंत्रता और न्याय सुलभ हो सकेगा। इस अवसर पर रंजन कुमार मिश्रा, फटीक चंद्र सिंह, संजय कुमार प्रसाद, अतुल कुमार, संपूर्ण चंद्र लायक, अंकित ओझा, प्रेरणा पांडेय, जितेंद्र कुमार, अंजनी चौधरी, चंदन कुमार, कृष्ण देव प्रसाद, विकास कुमार, राज श्री, दीपिका सिंह, संजीत कुमार सिंह, मो हसनैन आलम, वंशिका सहाय, दीप्ति सिंह, रीना कुमारी, अरूप चक्रवर्ती, इंद्रनील चैटर्जी, सुभाष चक्रवर्ती, संदीप कुमार सिंह, संजीत महतो इत्यादि उपस्थित थे।

स्वच्छता पखवाड़ा के तहत 170 सफाई मित्रों का किया गया हेल्थ चेक-अप

बोकारो : स्वच्छता पखवाड़ा के तहत शनिवार को बोकारो जनरल हॉस्पिटल तथा बीएसएल के ओएचएस सेंटर में प्लांट परिसर में कार्यरत सफाई मित्रों के लिए एक हेल्थ चेक-अप कैंप का आयोजन किया गया। बोकारो जनरल हॉस्पिटल में बी जी एच के प्रभारी डॉ बी बी करुणामय के नेतृत्व में वरीय चिकित्सकों के द्वारा 127 सफाई मित्रों का हेल्थ चेक-अप किया गया। ओएचएस सेंटर (प्लांट मेडिकल) में कैंप का उद्घाटन मुख्य महाप्रबंधक शालिग्राम सिंह ने किया। इस अवसर पर ओएचएस सेंटर के प्रभारी डॉ आर कुमार, डॉ. मनीष कुमार, ऑडियोलॉजिस्ट सुधीर भानू, कनीय प्रबंधक सुश्री सपना उपाध्याय, ओटी असिस्टेंट श्री सुरेंद्र शर्मा, लैब तकनीशियन श्री दिनेश कुमार, श्री सुमित कुमार, और श्री महिपाल चौधरी के द्वारा सफाई मित्रों का हेल्थ चेक-अप किया गया। ओएचएस सेंटर (प्लांट मेडिकल) के कैंप में 43 सफाई मित्रों का हेल्थ चेक-अप किया गया।

मंत्री चिराग पासवान के आगमन को लेकर कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर

बोकारो : जिला लोक जनशक्ति पार्टी(रा) के जिला कार्यालय पर अनिल कुमार के अध्यक्षता में एक बैठक रखी गई जिसमे की मुख्य अतिथि के रूप में झारखंड प्रदेश के किसान प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष प्रमोद सिंह उपस्थित थे उन्होंने कहा कि भारत सरकार के केंद्रीय मंत्री सह लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान जी का आगमन झारखंड की पावन धरती धनबाद में 29सितंबर होने जा रही है जो की कोयला भवन नेहरू परिसर में एक जनसभा को संबोधित करेंगे राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान जी और साथ में झारखंड प्रदेश के प्रभारी सह जमुई सांसद अरुण कुमार भारती सांसद राजेश वर्मा जी सड़क मार्ग द्वारा रामगढ़ चितरपुर गोला होते हुए बोकारो पहुंचेंगे जहां पर जिला अध्यक्ष अनिल कुमार के नेतृत्व में सैकड़ो कार्यकर्ता के साथ दिन के 10:30 बजे नया मोड़ बिरसा चौक पर स्वागत किया जाएगा और राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा बिरसा मुंडा जी के प्रतिमा पर पुष्पांजलि की जाएगी जिला अध्यक्ष अनिल कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि चिराग पासवान जी के बोकारो आने से पूरे लोजपा कार्यकर्ता में खुशी की लहर है सभी कार्यकर्ता लगे हुए हैं।

सार्वजनिक प्रतिष्ठानों की दुश्मन है मोदी सरकार : चौधरी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : अंग्रेज से जब देश आजाद हुआ उस समय देश मे एक सूई बनाने का भी कल कारखाना नही था ।आर्थिक रूप से देश कंगाल था इस परिस्थिति मे हमारे पूर्वजों के साथ मिलकर सरकार ने जहां एक ओर आर्थिक रूप से मजबूत होते गया वहीं दुसरी ओर देश मे सार्वजनिक कल कारखानो का जाल बिछते गया जिसके कारण आर्थिक समृद्धि के साथ साथ बेरोजगारों को रोजगार का अबसर मिलने लगा ।लेकिन जब से केन्द्र मे मोदी सरकार आई तब से बिरासत मे मिले सार्वजनिक क्षेत्र के दर्जनो कल कारखानो को बेचने का शिलशिला जो गतिमान हुआ वह रूकने का नाम नही ले रहा है यह बातें आज फेरो स्क्रेप निगम लिमिटेड को जापानी कम्पनी के हाथ ओने पोने दाम मे बेचे जाने के खिलाफ गांधी चौक सेक्टर-4 मे जय झारखंड मजदूर समाज द्वारा किये जा रहे बिरोध प्रदर्शन मे झारखंड मुक्ति मोर्चा केन्द्रीय सदस्य सह जय झारखंड मजदूर समाज के महामंत्री बि के चौधरी ने सेकडों को संख्या मे उपस्थित फेरो स्क्रेप निगम लिमिटेड मे कार्यरत बिभागीय कर्मचारी एवं ठेकाकमीर्यों को संबोधित करते हुए कहा ।बि के चौधरी ने आगे कहा कि फेरो स्क्रेप निगम लिमिटेड एक केन्द्रीय प्रतिष्ठान है जिसका निर्माण सेल के सभी युनिट मे स्क्रेप कलेक्शन कर प्रोसेसिंग करते हुए एस एम एस कन्भर्टर मे देना होता है जिससे लोहा बनने मे मूल सहायक का काम करता है ।बिना केन्द्रीय सहयोग राशि का मुनाफा अर्जित करने बाला यह प्रतिष्ठान 30 से 40 करोड सालाना केन्द्र सरकार के बैंक खाता मे डालने बाले कम्पनी को मात्र 320 करोड मे एक जापानी कम्पनी के हाथ बेच दिया गया है ।सभी प्लांटो मे लगभग चार हजार स्थायी और अस्थाई मजदूर काम कर रहा है ।बेचने से पूर्व इन अधिकारीयों,कर्मचारीयों एवं संविदा मे काम करने बालों के भविष्य के बिषय मे कुछ भी नहीं सोचा जाना भी जरूरत नही समझा गया ।मोदी सरकार का वैसाखी बने राजनीतिक दल भी गुगां और बहरा बना हुआ है जो सर्वहारा का नेता बनने का दम्भ भरा करता है ।इसलिए जब तक मोदी सरकार बेचने के तुगलकी आदेश को वापस नही ले लेता है तब तक अनिश्चितकालीन हड़ताल जारी रहेगा ।कार्यक्रम मे मुख्य रूप से एफ एस एन एल मे युनियन के शाखा अध्यक्ष सुरेश प्रसाद, उपाध्यक्ष हरेन्द्र पासवान, संगठन मंत्री सुभाष चन्द्र बाउरी, झामुमो केंद्रीय सदस्य हसन इमाम ,संयुक्त महामंत्री एन के सिंह, एस के सिंह, कार्यालय मंत्री आर बी चौधरी, सी के एस मुंडा, आई अहमद, कार्यकारणी सदस्य घनश्याम सिंह, राकेश कुमार सिंह, हिरू कालन्दी, मिथिलेश पासवान, योगेन्द्र प्रसाद, ए के पान्डे,रामेश्वर बराईक,मोहन मिस्त्री,राम अयोध्या राम, राजू लहेरी, रामेश्वर बड़ाइक, नीलेश मात्रे, भूषण बोडर, सुनील टी बहोइलक, बीके साहू ,चन्द्रा साव, पोदार साव, शिव कुमार साहब, रबिन्द्र गिरी, मोहन मिस्त्री,ए के पांडेय, एस प्रमाणिक, समर पाल, रोशन कुमार,अभिमन्यु मांझी, राजेन्द्र प्रसाद, बी एन तिवारी, रामा रवानी, बादल कोईरी, जे एल चौधरी, धर्मेन्द्र कुमार, दिलीप कुमार, ओ पी चौहान, सतेंद्र कुमार, संजय कुमार, एस के पी साव, नाशिर अहमद, जितेन्द्र कुमार सिंह, बिनोद कुमार, इत्यादि उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

लायंस क्लब ने किया पौधों का वितरण

धनबाद : लायंस क्लब बाघमारा ने तीलाटांड कतरास स्थित ओम क्लिनिक में टिलाटांड विद्युत सब स्टेशन के अनुमंडल पदाधिकारी राकेश कुमार महतो, क्लब अध्यक्ष लायन डॉ मुकेश कुमार राय, जी एन एम प्लस टू विद्यालय के प्राचार्या लायन रेखा साहू,कार्यक्रम चेयरपर्सन लायन डा मिथिलेश कुमार तिवारी ने संयुक्त रूप से पौधा वितरण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर सहायक विद्युत अभियंता राजेश कुमार महतो क्लब अध्यक्ष डा राय एवम क्लब के सदस्यों ने दर्जनों पौधे लगाए। एक पेड़ मां के नाम पौधा डा मिथिलेश कुमार तिवारी की माताजी एवम प्राचार्या लायन रेखा साहू ने संयुक्त रूप से लगाया एवम उपस्थित आम लोगो को पौधा लगाने के लिए प्रेरित किया । इस अवसर पर फलदार, छायादार, एवम औषधीय 201 पौधो का वितरण किया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में क्लब उपाध्यक्ष ला किशुन लाल महतो , जी एन एम के वरिष्ट शिक्षक मो सिराज आलम, बृज मोहन तिवारी, रोहित कुमार, सुशीला देवी,रंजीत कुमार सिंह,प्रेम कुमार, विनोद यादव, राजी तुरी राम, कमल दुबे आदि का सराहनीय योगदान रहा।

डीपीएस में चार दिवसीय सीबीएसई क्लस्टर-3 बास्केटबॉल प्रतियोगिता संपन्न

बोकारो : डीपीएस बोकारो की मेजबानी में आयोजित चार दिवसीय सीबीएसई क्लस्टर- 3 अंतर विद्यालय बास्केटबॉल प्रतियोगिता उमंग भरे माहौल में संपन्न हो गई। रुक-रुककर होती बारिश और मौसम की बेरुखी के बाद भी प्रतिभागियों के उत्साह और जोशो-खरोश में कोई कमी नहीं आई। उन्होंने पूरे दमखम के साथ शानदार खेल का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में शुरू से ही बोकारो, जमशेदपुर और रांची की टीमों का दबदबा बरकरार रहा। शुक्रवार को हुए फाइनल मुकाबले में इन तीन जिलों की मुख्य भिड़ंत हुई। अलग-अलग कैटेगरी के कुल छह मैचों में तीन बोकारो ने जीते, जबकि दो पर जमशेदपुर ने कब्जा जमाया, तो एक रांची की झोली में गया। रंगारंग प्रस्तुतियों के साथ विद्यालय के कालिदास कला भवन में आयोजित समापन समारोह के मुख्य अतिथि भारतीय बास्केटबॉल की बालिका टीम के कोच उमाकांत सिंह, सीबीएसई के ऑब्जर्वर संतोष कुमार, तकनीकी प्रतिनिधि प्रियरंजन कुमार सिंह एवं डीपीएस बोकारो के प्राचार्य सह प्रतियोगिता आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. ए एस गंगवार ने विजेता एवं उपविजेता टीमों को ट्रॉफी देकर पुरस्कृत किया।

सुरक्षित गर्भ समापन दिवस का हुआ आयोजन

कसमार : प्रखंड के पोंडा पंचायत भवन में सहयोगिनी संस्था द्वारा विश्व सुरक्षित गर्भ समापन दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पंचायत के मुखिया हारु रजवार ने कहा कि असुरक्षित रूप से गर्भधारण समापन नही किया जाना चाहिए । सरकार के दिशा निर्देश तथा स्वास्थ्य विभाग के निगरानी में महिलाओं का अधिकार है अपने गर्भ का समापन करने का। इस संबंध में लोगों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए आज विश्व भर में सुरक्षित गर्भ समापन दिवस मनाया जा रहा है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सहयोगिनी की सचिव कल्याणी सागर ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय सुरक्षित गर्भपात दिवस मनाने का मकसद महिलाओं के यौन और प्रजनन स्वास्थ्य के अधिकारों को बढ़ाना और सुरक्षित गर्भपात की सुविधा सुनिश्चित करना है। इस दिन के लिए हर साल एक थीम तय की जाती है। उन्होंने कहा कि भारत में गर्भपात की अनुमति, गर्भ का चिकित्सीय समापन अधिनियम, 1971 के तहत दी जाती है। जिसके तहत गर्भपात की कानूनी अनुमति सिर्फ.तब दी जाती है जब महिला बीस सप्ताह से कम गर्भवती हो। बीस सप्ताह के बाद भी गर्भपात की अनुमति दी जा सकती है, अगर कोई डॉक्टर मानता है कि गर्भवती महिला के जीवन को बचाने के लिए यह जरूरी है। कार्यक्रम को सहयोगिनी की सूर्यमुनि देवी, रिया हलधर,बेबी देवी, खीरी देवी, ममता देवी, नीतू मुर्मू,लक्ष्मी सोरेन,बबिता कुमारी,शीला देवी, सुरेश नायक, गौतम सागर ने संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन कुमारी किरण ने किया।

स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत साइकिल रैली का हुआ आयोजन

लोहरदगा : लोहरदगा में स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत साइकिल रैली का आयोजन किया गया। साइकिल रैली समाहरणालय मैदान से निकलकर शहर के विभिन्न मार्गो से गुजर कर लोगों को जागरूकता का संदेश दी। साइकिल रैली को डीसी डॉक्टर प्रसाद कृष्ण वाघमारे, डीडीसी दिलीप प्रताप सिंह शेखावत ,एसडीपीओ श्रद्धा केरकेट्टा सहित अन्य अधिकारियों ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। मौके पर लोहरदगा उपायुक्त डॉक्टर प्रसाद कृष्ण वाघमारे ने बताया कि लोहरदगा जिला में स्वच्छता ही सेवा अभियान को जमीनी स्तर पर उतारा जा रहा है और लोगों को जागरूक किया जा रहा है। साइकिल रैली का मुख्य उद्देश्य है कि लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करना। डीडीसी दिलीप प्रताप सिंह शेखावत ने कहा कि इसकी शुरूआत नगर भवन से हुई है और 2 अक्टूबर को इसका समापन किया जाएगा। इस बीच विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक किया जा रहा है। गांव-गांव टोला टोला तक लोग अब जागरुक होने लगे हैं और इसका सकारात्मक प्रभाव भी नजर आने लगा है।

हाई स्पीड रेल प्रोजेक्ट को लेकर अपर समाहर्ता ने की रैयतों के साथ बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : नई दिल्ली से हावड़ा तक प्रस्तावित हाई स्पीड रेल प्रोजेक्ट को लेकर शनिवार को अपर समाहर्ता विनोद कुमार की अध्यक्षता में द नेशनल हाई स्पीड रेल कॉरपोरेशन लिमिटेड,ओवरसीज मिंट कंसलटेंट, टीला कंसल्टेंट्स तथा धनबाद जिले के 69 गांव के रैयतों के साथ समाहरणालय के सभागार में बैठक आयोजित की गई। बैठक में भारत सरकार और रेलवे द्वारा तैयार एलाइनमेंट पर चर्चा की गई। अपर समाहर्ता ने कहा कि प्रोजेक्ट का एलाइनमेंट बनाते समय घनी आबादी, स्कूल, हॉस्पिटल, धार्मिक स्थल प्रभावित नहीं हो, इसे ध्यान में रखकर डीपीआर तैयार किया गया है। साथ ही कहा कि प्रत्येक गांव में भूमि अधिग्रहण करने से पहले अधिसूचना जारी की जाएगी। अधिसूचना के तहत जमीन का अधिग्रहण किया जाएगा। निर्धारित दर के अनुसार सरकार द्वारा प्रभावितों को मुआवजा दिया जाएगा। हाई स्पीड रेल प्रोजेक्ट पूरा होने के बाद झारखंड में कोडरमा और धनबाद में ट्रेन का ठहराव होगा। बैठक में 69 गांव के रैयतों ने अपने-अपने सुझाव भी रखें। बैठक में अपर समाहर्ता श्री विनोद कुमार, द नेशनल हाई स्पीड रेल कॉरपोरेशन लिमिटेड की सीनियर मैनेजर निकिता धवन, ओवरसीज मिंट कंसलटेंट के फील्ड एग्जीक्यूटिव आरिफ अजीज, फील्ड सुपरवाइजर प्रमोद शर्मा, टिला कंसल्टेंट्स के प्रतिनिधि के अलावा बड़ी संख्या में रैयत मौजूद थे।

चोरी का उद्भेदन न होता देख पार्षद पहुंचे जोगता थाना

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : नगर निगम के वार्ड नंबर 6 के पार्षद धर्मेंद्र महतो उर्फ डिस्को ने पूर्व में जोगता थाना में 17 सितंबर को चोरों द्वारा घर में रखे समाने कि चोरी होने का लिखित शिकायत देकर कार्रवाई की मांग किया था, जिस पर कार्रवाई ना होता देख पार्षद थाने पहुंच गए ,वही इस मामले पर पूछा गया तो श्री महतो ने बताया कि पुलिस चोरी की उद्वेदन करना मुनासिब नहीं समझती है और कोयला और लोहे खुले आम चोरी करवा रही है इस क्षेत्र में चरण सीमा पर अवैध करोबार हो रहा है, लेकिन अवैध कोयला कारोबारियो पर कार्रवाई नहीं दिख रहा है। अगर ऐ सब कारोबार बंद नहीं हुआ तो जोगता थाना की पुलिस जो कभी नहीं देखी होगी कि आंदोलन किसे कहा जाता है वह आंदोलन करने पर बाध्य होंगे। बताते चलें कि जोगता थाना क्षेत्र में बीसीसीएल एरिया 5 के मोदीडीह कोलियरी अंतर्गत बंद हिल टॉप आउटसोर्सिंग कंपनी में इन दिनो अवैध कोयला कंपनी में मजदूर लगा कर कोयला निकाल रहा है, अवैध कारोबारी भी चाहती थी की हिल टॉप आउटसोर्सिंग कंपनी बंद हो ताकि परियोजना में बने रास्ते का उपयोग कर अवैध कोयले निकासी करने में सहूलियत होगा, लेकिन हिल टॉप कंपनी का कार्य एक महीना बंद हुए ही हुआ है इसके बाद से अवैध कोयले की कटाई करने वाले को बल्ले बल्ले हो रहा है। वही शनिवार कि सुबह बीसीसीएल एरिया 5 के सीआईएसएफ ने पुराना श्याम बाजार में छापेमारी कर अवैध कोयला को जप्त किया। जिससे अवैध कोयला करोबारीयो में हड़कंप मच गया है। लेकिन सीआईएसएफ के जवान के लोग की नजर हिल टॉप ऑउटसोर्सिंग कम्पनी पर नजर नही पड़ रही है अब ये देखना यह की कब इस पर करवाई होती है।

कोर्ट के आदेश पर मकान खाली कराने के लिये आये अधिकारी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : तेतुलमारी थाना क्षेत्र के नगरीकला दक्षिण पंचायत के बीघा पर स्थित अवैध कब्जाधारियों से जमीन पर बने मकान को खाली कराने के लिये सी जे एम आरती माला के कोर्ट से 5/2024 के मामले में बीते 29 सितंबर 2024 को जारी फैसला के आधार पर शनिवार को कोर्ट के नाजिर अनिल कुमार सिंह के साथ निशांत कुमार, मुकेश कुमार, राहुल कुमार मंडल व अमीन शंकर पांडेय ने डिग्रीधारी रैयत गौर कुम्हार के पुत्र अविनाश कुम्हार व सतीश कुमार के पुत्र मनोज कुमार के जमीन पर बसे,तेतुलमारी बीघा पर निवास कर रहे प्रभु सिंह व अन्य से जमीन को कब्जा मुक्त कराने के लिये टीम के साथ तेतुलमारी व ईस्ट बसूरिया पुलिस आयी थी। सी जे एम कोर्ट के नाजिर अनिल कुमार सिंह ने बताया कि स्थानीय मुखिया अशोक ठाकुर ने लिखित आश्वासन दिया कि वारिश के मौसम के कारण तत्काल राहत देते हुये 3/4 दिन के अंदर जमीन को खाली करा देंगे,अगर 4 दिन में जमीन कब्जा मुक्त नही हुआ तो पुनः बुधवार को कोर्ट के अधिकारी व पुलिस बल आकर खाली कराएंगे उस दिन कुछ किसी की नही सुनी जायेगी। सनद रहे कि 6 माह नोटिस जारी किया गया था।कोर्ट में 2011 से मामला चल रहा था, 29/5/23 को जजमेंट के बाद सी जे एम आरती माला ने कब्जा दिलाने के लिये 5/24 आदेश जारी किया था। विवादित परिसर तेतुलमारी थाना क्षेत्र के नगरीकला दक्षिण के बीघा पर मुखिया अशोक ठाकुर के लिखित आश्वासन की बारिश के मौसम के कारण कब्जाधारी पर रहम करते हुये तत्काल 4 दिन का मोहलत दिया गया। उक्त अवधि में कब्जाधारी द्वारा मकान को खाली करने की बात स्वीकार किया है,नही तो पुनः कोर्ट के पदाधिकारी बुधवार को आकर रैयत को हैंड ओवर करेंगे।

कबड्डी में चाईबासा और गढ़वा विजयी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चाईबासा : पश्चिम सिंघभूम कबड्डी एसोसिएशन एवं झारखण्ड राज्य कबड्डी संघ मे हो रहे संयुक्त कबड्डी प्रतियोगिता के दूसरे दिन 12वी राज्य झारखण्ड कबड्डी प्रतियोगिता 2024 के मुख्य अतिथि रूपा रानी तिर्की जिला खेल पदाधिकारी पूर्वी सिंघभूम विभिन्न जिलों से आये खिलाड़ियों का उत्साह वर्धन किया उन्होंने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर टॉस करने के उपरांत मैच प्रारम्भ किया गया । जिसमे पुरुष वर्ग मे चाईबासा एवं बोकारो के बीच मैच खेला गया जिसमे 18 अंक बोकारो एवं चाईबासा 20 को अंक प्राप्त हुआ । जिसमे 2 अंक से बोकारो टीम को हरा चाईबासा ने विजय प्राप्त किया। महिला वर्ग मे गढ़वा बनाम रांची के बिच मैच खेला गया गढ़वा टीम 24 अंक बनाया वहीं रांची के टीम ने 21अंक प्राप्त किया। जिसमे 3 अंक से गढ़वा विजय हुई। मैच के दौरान मुख्य रूप से तकनिकी पदाधिकारी के रूप मे यशवंत साहू जमशेदपुर ,मिंटू ठाकुर धनबाद, दीपिका कुजूर रांची ,ज्योति रंजन गुमला, इंद्र ऋषि गिरिडीह ,मनोज शर्मा एवं जिया लाल पासवान बोकारो, असफाक खान लातेहार ,मनोज शर्मा पलामू ने मैच संचालन मे अहम योगदान रहा मुख्य रूप से हरीश कुमार तपन राउत प्रदेश अध्यक्ष जेएसकेऐ जिला एसोसिएशन से श्यामल दास अन्नू पूर्ति का अहम योगदान रहा।

नेशनल लोक अदालत: 9 अरब 60 करोड़ की रिकॉर्ड रिकवरी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : नालसा के निर्देश पर वर्ष 24 के तीसरे नेशनल लोक अदालत का उद्घाटन शनिवार को धनबाद के प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह डालसा के चेयरमैन राम शर्मा ने किया । इस मौके पर उन्होंने कहा कि नेशनल लोक अदालत संविधान के परिकल्पना को पूरी करने के दिशा में एक कदम है ,नवम्बर 2013 से पूरे देश में नेशनल लोक अदालत का आयोजन हर तीन माह मे किया जा रहा है। हमारा संविधान हर लोगों को सामाजीक,आर्थिक एवं सस्ता सुलभ न्याय की गारंटी देता है। मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी आरती माला ने कहा कि राष्ट्रीय लोक अदालत आम आदमी के हित के लिये लगाये जाते हैं। बिना प्रशासनिक सहयोग के हम समाज तक न्याय नहीं पहुंचा सकते। लोक अदालत में महीनों कोर्ट का चक्कर लगाने और पैसे की बबार्दी से बचा जा सकता है। इससे लोगों को मानसिक शांति भी मिलती है ।साथ ही प्रेम और सौहार्द आपस में फिर से बन जाता है। लोगों मे प्रेम,शांति ,समृद्धि और समरसता बनी रहे यही इस लोक अदालत का मुख्य उद्देश्य है। अवर न्यायाधीश सह सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकार राकेश रोशन ने कहा कि लोक अदालत के माध्यम से व्यापक पैमाने पर मुकदमों का निष्पादन किया जा रहा है। जिसमें समय की बचत के साथ-साथ वादकारियों को विभिन्न कानूनी पचड़ों से मुक्ति मिल रही है। शुरूआती चार घंटे में एक लाख सात हजार विवादों का निपटारा मुकदमो के निपटारे के लिए प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश के आदेश पर 12 बेंच का गठन किया गया था है जिनके द्वारा विभिन्न तरह के सुलहनीय विवादों का निपटारा किया गया । इस बाबत जानकारी देते हुए अवर न्यायाधीश सह सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकार राकेश रोशन एवं मुख्य न्यायाधीश दंडाधिकारी आरती माला ने बताया कि नेशनल लोक अदालत में शुरूआत के केवल चार घंटे मे ही 17 हजार सिविल कोर्ट मे लंबित विवादों का रेकॉर्ड निपटारा कर दिया गया वहीं विभिन्न विभागों से संबंधित 90 हजार प्रिलेटिगेसन मामलों का निपटारा किया गया। मौजूद थे न्यायाधिश न्यायिक पदाधिकारियों में प्रधान न्यायाधीश कुटुंब न्यायालय टी, हसन, जिला एवं सत्र न्यायाधीश सुजीत कुमार सिंह, राकेश कुमार मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी, आरती माला, अपर मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी राजीव त्रिपाठी, सिविल जज एंजेलिना जॉन, अनुमंडल न्यायिक दंडाधिकारी अभिजीत पांडे, रेलवे मजिस्ट्रेट मनोज कुमार, डालसा सहायक, लीगल एड डिफेंस काउंसिल सिस्टम के टीम विभिन्न विभागों के पदाधिकारी उपस्थित थे।

डीएमएफटी से बन रही नेहरू रोड की सड़क, पहले दिन ही मिली अनियमितता

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : डीएमएफटी फंड से रामगढ़ शहर की सबसे महत्वपूर्ण नेहरू रोड की सड़क बनाई जा रही है। शनिवार से इस सड़क की ढलाई शुरू हुई और संवेदक की लापरवाही उजागर हो गई। यहां जर्जर सड़क की हालत को बदलने के लिए ढलाई रोड को हटाकर फबेर ब्लॉक लगाने का निर्णय छावनी परिषद के अधिकारियों ने लिया था। जिला प्रशासन ने इस सड़क के निर्माण के लिए डीएमएफटी फंड से राशि स्वीकृत की। साथ ही प्राक्कलन तैयार कर बेहतर सड़क बनाने को कहा लेकिन जब सड़क का निर्माण शुरू हुआ तो संवेदक सबसे पहले अपनी सुविधा देखने लगे। सड़क निर्माण में गड़बड़ी की शिकायत स्थानीय लोगों ने जब की तो छावनी परिषद के पूर्व उपाध्यक्ष संजीत सिंह उर्फ छोटू सिंह भी वहां पहुंचे। नेहरू रोड की सड़क निर्माण कार्य का जायजा लेने के लिए छावनी परिषद के पूर्व उपाध्यक्ष संजीत सिंह उर्फ छोटू सिंह पहुंचे। उन्होंने सबसे पहले मजदूर और मिस्त्री के कार्यों का जायजा लिया। उन्होंने देखा कि गड्ढों को बिना समतल किए ढलाई की जा रही है, जिससे पूरी रोड उबड़-खाबड़ दिख रही है। जब इसी ढलाई पर फेबर ब्लॉक बिछाया जाएगा तो उस सड़क पर जल जमाव की स्थिति भी बन जाएगी। उन्होंने इसकी शिकायत संवेदक और अभियंता दोनों से की। साथ ही प्राक्कलन के अनुसार कार्य करने को कहा। उन्होंने कहा कि सड़क पर जल जमाव न हो, इसलिए नाली की तरफ ढलान होना चाहिए। इसके अलावा जब बारिश होगी तो फेबर ब्लॉक से होकर पूरा पानी उसके नीचे जम जाएगा। इसके बाद वहां सड़कों का टूटना भी शुरू हो जाएगा। नेहरू रोड में ही पूरा ट्रांसपोर्ट नगर है। इसके अलावा में रोड को चट्टी बाजार से जोड़ने वाली यह मुख्य सड़क है। इस रोड पर भारी वाहनों का आवागमन होता है और इसकी मजबूती बेहद महत्वपूर्ण है। नेहरू रोड की सड़क के निर्माण में 80 लाख रुपये खर्च होने वाले हैं। संवेदक को 16 फीट चौड़ी सड़क बनाने के लिए 4 इंच मोटी ढलाई करनी है। इस ढलाई के बाद 80 एमएम का फेवर ब्लॉक भी लगाना है।

हुनर है तो कदर है कार्यक्रम का हुआ शुभारंभ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

अनगड़ा : नामकोम एक्यूप्रेशर परिषद झारखंड शाखा टाटीसिलवे द्वारा हुनर है तो कदर है कार्यक्रम का शुभारंभ कमला नेहरू इंटर कॉलेज में किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य एक्यूप्रेशर को घर-घर पहुंचाना और हुनर द्वारा बेरोजगारों को रोजगार उपलब्ध कराना है। जिसका उद्घाटन एक्यूप्रेशर परिषद सचिव डॉ मधुसूदन पांडे कॉलेज के प्रिंसिपल डॉक्टर अजय कुमार सिंह, मोहम्मद फजल अहमद, प्रोफेसर अभिमन्यु महतो, अमरेंद्र केसरी, प्रोफेसर लखन मिश्रा, डॉ नरेश महतो, डॉ महेश प्रजापति, डॉक्टर ललित कुमारी के द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉक्टर मधुसूदन पांडे सचिव एक्यूप्रेशर परिषद झारखंड शाखा ने कहा कि वह समय दूर नहीं जब घर-घर में एक्यूप्रेशर चिकित्सा उपलब्ध होंगे दावों के दुष्परिणाम महंगी जांच से हम सभी बच जाएंगे कार्यक्रम का संचालन डॉ बलराम महतो के द्वारा किया गया। यह कार्यक्रम 6 सप्ताहों तक चलाया जाएगा कार्यक्रम के अंत में बच्चों को बेसिक एक्यूप्रेशर प्रशिक्षण का प्रमाण पत्र एक्यूप्रेशर परिषद द्वारा निर्गत किया जाएगा।

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, पथ निर्माण विभाग, पथ प्रमण्डल, हजारीबाग

CORRIGENDUM

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि पथ प्रमण्डल, हजारीबाग अन्तर्गत वित्तीय वर्ष 2024–25 में गैर योजना मद अन्तर्गत आमंत्रित अतिअल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना संख्या 03/2024–25, PR 336447 Road(24-25)#D के क्रमांक 13 में अंकित कार्य "कार्यपालक अभियंता आवास में Guard Room-cum-Driver Room मरम्मति एवं विद्युतीकरण कार्य" NIT के क्रम संख्या 02 में परिमाण विपत्र विक्री की तिथि 27.09.2024 के स्थान पर 04.10.2024 एवं क्रम संख्या 03 में निविदा प्राप्त करने की तिथि 28.09.2024 के स्थान पर 05.10.2024 पढ़ा जाय।

निविदा की शेष शर्तें यथावत रहेंगी।

कार्यपालक अभियंता
प.नि.वि. पथ प्रमण्डल, हजारीबाग

PR 337493 Road(24-25).D

झारखण्ड शिक्षा परियोजना, चतरा
जिला कार्यालय, प्रखण्ड परिसर, चतरा–825401 दूरभाष: (06541) 253924
इमेल–chatrajepc@ymail.com

अति अल्पकालीन निविदा सूचना

जिला के सभी कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, झारखण्ड आवासीय बालिका विद्यालय, एवं नेताजी सुभाषचन्द्र बोस बालक विद्यालय, तथा सी0एम0एस0ओ0ई0, के0जी0बी0भी0, चतरा में 60 KVA साउण्ड लेस जेनरेटर आपूर्ति हेतु उपायुक्त–सह–जिला दण्डाधिकारी का कार्यालय, चतरा (जिला विकास शाखा) संशोधित आदेश ज्ञापांक–VI-16/2024 374/विकास (DMFT) दिनांक 09.09.2024 प्राप्त स्वीकृत्यादेश के आलोक में इस कार्यालय के निविदा पत्रांक 1108 दिनांक 13.09.2024 के माध्यम से निविदा आमंत्रित किया गया था। प्रकाशित निविदा दिनांक 25.09.2024 को निविदा चयन समिति एवं निविदादाताओं के उपस्थिति में निविदा खोले जाने के उपरांत तकनीकि निविदा में सभी निविदादाताओं के असफल होने के उपरांत आदेशानुसार पुर्न निविदा इस कार्यालय के निविदा पत्रांक 1205 दिनांक 27.09.2024 के माध्यम से निविदा का प्रकाशन किया गया है।

दिनांक 27.09.2024 से 04.10.2024 के अपराह्न 2:00 बजे तक निविदा प्रपत्र झारखण्ड शिक्षा परियोजना, समग्र शिक्षा अभियान, प्रखण्ड परिसर, चतरा से प्राप्त किया जा सकता है। एवं मुहरबंद निविदा दिनांक 04.10.2024 के अपराह्न 2:00 बजे तक कार्यालय के निविदा बॉक्स में जमा लिया जाएगा। मुहर बंद निविदा दिनांक 05.10.2024 को (DRDA) जिला ग्रामीण विकास अभिकरण के सभागार कक्ष में निविदा समिति के उपस्थिति में पूर्वाह्न 11:00 बजे निविदा खोला जायेगा।

उक्त निविदा का विज्ञापन से संबंधित विस्तृत जानकारी NIC चतरा के वेबसाईट www.chatra.nic.in पर उपलब्ध है।

जिला शिक्षा पदाधिकारी–सह–
जिला कार्यक्रम पदाधिकारी, झा0शि0प0, चतरा।

PR 337480 Jharkhand Education Project Council(24-25)D

बिना सूचना के दुकानों को ध्वस्त किया गया : रामकुमार पहान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

अनगड़ा : झारखंड रांची खिजरी विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत बेड़वारी गोंदली पोखर बाजार टाड़ में बने छोटे छोटे अस्बेस्टर के बने दुकान को अनगडा सी ओ के अगुवाई में गिरा दिया गया। जिससे दुकानदार काफी हो गए दुकानदारों का कहना था कि अतिक्रमण करने से पहले हम लोगो को जानकारी होती तो हटा लेते आगे खिजरी के पूर्व विधायक रामकुमार पहान ने बताया कि गोंदली पोखर बजार आजादी से पहले से यहां पर दुकान लगाते आ रहे है इस तरह से नहीं होना चाहिए। चुकी एक तरफ बेरोजगारी से परेशान दूसरी ओर गरीबों के दुकान को बिना सूचना दिए दुकान को ध्वस्त कर दिया गया दुकानदारों ने समान हटाने का समय मांगा पर भी जबरन तोड़ पोड किया लोगो ने झारखण्ड सरकार से मांग किया की पदाधिकारियों पर कारवाई की जाये। मौके पर जिला परिषद सदस्य अनुराधा मुंडा अबदुल इमाम अंसारी ओ बी सी मोर्चा जिला अध्यक्ष नरेश साहू सतदेव मुंडा जगर नाथ महतो इब्राहिम अंसारी सुनील महतो दुकानदार और भारी संख्या में ग्रामीण शामिल थे।

26 वाहिनी एसएसबी ने रेस्क्यू कर दो स्कूली छात्राओं की बचाई जान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

अनगड़ा : खूंटी अड़की में शनिवार को सुबह करीब 8.00 बजे दो स्कूली छात्रा भागते हुए एस.एस.बी. के अड़की, जिला-खुटी कैंप में मेन गेट पर सूचित किया की, अडकी स्कुल में खेलते समय कुछ छात्राएँ सेप्टि टैंक के गहरे गड्ढे में गिर गयी है। सुचना मिलते ही संतरी द्वारा तुरंत कैंप को अलर्ट करते हुये कंपनी कमांडर को सूचित किया और कंपनी कमांडर निरीक्षक श्यामल बिसवास के द्वारा त्वरित कार्यवाही करते हुये क्यूआरटी टीम और टूल्स के साथ घटना स्थल के लिए रवाना हुए। टीम घटना स्थल पर पहुचकर घटना स्थल का मुआयना कर के क्यूआरटी टीम के जवानों को सेप्टि टैंक में उतारकर और रस्सी की मदद से दोनों बच्चियों को सुरक्षित निकाल कर टीम द्वारा प्राथमिक उपचार कर के अम्बुलेस से शासकीय अस्पताल अडकी रवाना किया गया। और अन्य छात्राओ के गिरने की सम्भावना को देखते हुये सर्च अभियान चलाया गया। जिसमें कुछ नही मिला, समवाय कमांडर के द्वारा स्कुल स्टाफ की मदद से छात्राएँ कि गिनती की गई। गिनती करने के उपरांत सभी छात्राएँ सही अवस्था में पायी गई और कोई मिसिंग नही था कपूरा टेंक को जाच की गई और उसे खाली किया गया। प्राप्त सुचना अनुसार टैंक बहुत पुराना और खराब हालत में था, जो कि लगभग 6 फीट गहरा था। जिसमें पानी के साथ साथ 2 फिट तक मलबा भी निकाला गया। हादसे की शिकार स्टूडेंट्स जिनका नाम सूमो कुमारी (7क्लास) और रेवोती कुमारी (12 क्लास) बताया गया। जो अभी ठीक हालत में है। इस बचाव अभियान में समवाय कमांडर निरीक्षक श्यामल बिसवास के साथ 30 अन्य जवान उपस्थित थे। इस बचाव कार्य में एस.एस.बी. के जवानों ने अपना त्वरित कार्यवाही और साहस दिखाकर 02 गर्ल्स स्टूडेंट की जान बचाई और इस रेस्क्यू कार्य को सफलता से अंजाम दिया गया। विहिनी के कमांडेट महोदय द्वारा टीम को सफल रेस्क्यू ऑपरेशन के लिये बधाई दी गई।

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, लातेहार

अति अल्पकालीन ई–निविदा आमंत्रण सूचना
संख्या – EE/RDSD/LATEHAR/19/2024-25

1.कार्य की विस्तृत विवरणी:

क्र0सं0	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र का मूल्य	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1	लातेहार जिलान्तर्गत प्रखण्ड हेरहंज पंचायत हेरहंज में राजकीय प्राथमिक विद्यालय हुर में चारदीवारी निर्माण।	1585300	31500	5000	3 माह
2	लातेहार जिलान्तर्गत प्रखण्ड लातेहार पंचायत परसही में राजकीय +2 उच्च विद्यालय जलता परसही में Paver Block का निर्माण।	1873788	33500	5000	3 माह

2.वेबसाईट में निविदा प्रकाशन की तिथि – 30.09.2024
3.ई–निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय – दिनांक 30.09.2024 से दिनांक 07.10.2024 को अपराह्न 5:00 बजे तक।
4.ई–निविदा खोलने का स्थान – कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, ग्रामीण विकास विशेष प्रमण्डल, लातेहार।
5.ई–निविदा खोलने की तिथि एवं समय –08.09.2024 अपराह्न 2:00 बजे
6.ई–निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का नाम एवं पता :– कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण विकास विशेष प्रमण्डल, लातेहार।
7.ई–निविदा प्रकोष्ठ का दूरभाष सं० – 06565796434
8.परिमाण विपत्र की राशि घट–बढ़ सकती है तदनुसार अग्रधन की राशि देय होगी।
9.निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि केवल Online Mode द्वारा स्वीकार्य होगी।
10.निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि का ई–भुगतान जिस खाता से किया जायेगा, उसी खाते में अग्रधन की राशि वापस होगी। अगर खाता को बंद कर दिया जाता है तो उसकी सारी जवाबदेही आपकी होगी।
विस्तृत जानकारी के लिये वेबसाईट www.jharkhandtenders.gov.in एवं कार्यालय की सूचना पट्ट पर देखा जा सकता है।

कार्यपालक अभियंता
ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, लातेहार

PR 337501 (Rural Development)24-25*D

ऊर्जा विभाग, झारखण्ड सरकार
विद्युत कार्यपालक अभियन्ता, विद्युत कार्य प्रमण्डल, इंजीनियरिंग हॉस्टल नं0–2, धुर्वा, राँची

अति अल्पकालीन ई–प्रोक्योरमेंट सूचना
ई–निविदा प्रसंग सं0– Energy/EWD/Ranchi/65/2024-25 दिनांक– 25/09/2024

1.	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि (रूपये में)	परिमाण विपत्र का मूल्य	अग्रधन की राशि	कार्य समाप्ति की अवधि
I	रिम्स, राँची छात्रा छात्रावास सबस्टेशन के 750 के0वी0ए0 ट्रॉसफार्मर से पेईंग वार्ड तक मुख्य सर्विस केबल का कार्य।	25,40,865=00	5,000=00	51,000=00	42 दिन
2.	वेबसाईट पर निविदा प्रकाशन की तिथि	30.09.2024			
3.	निविदा जमा करने की तिथि	01.10.2024 के 10.30 बजे पूर्वाह्न से 07.10.2024 के 2.00 बजे अपराह्न तक			
4.	निविदा खोलने की तिथि	08.10.2024 को 3.00 बजे अपराह्न में			
5.	निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का नाम एवं पता	विद्युत कार्यपालक अभियन्ता, विद्युत कार्य प्रमण्डल, राँची।			
6.	निविदा खोलने वाले पदाधिकारी का नाम एवं पता	विद्युत कार्यपालक अभियन्ता, विद्युत कार्य प्रमण्डल, राँची।			
7.	ई प्रोक्युरमेन्ट प्रकोष्ट का फोन नं0/ई0 मेल	0651–2490069/electricalexecutiveengineerewd@gmail.com			

Note :- Tender Fee and Earnest Money Deposit (EMD) are to be paid through online mode only as per instruction of IT Dept. Govt. of Jharkhand Letter no.-120 Dated-03-10-2023.
निविदा से संबंधित विस्तृत जानकारी हेतु वेबसाईट http://jharkhandtenders.gov.in मे देखा जा सकता है।

विद्युत कार्यपालक अभियन्ता
विद्युत कार्य प्रमण्डल, राँची

PR 337545 Energy(24-25)#D

उषा मार्टिन की पहल से गरीबों के आंखों का हुआ इलाज

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : अनगड़ा गांव के मेलघोंगसा टोला की रहनेवाली 80 साल की पुषनी देवी मोतियाबिंद के कारण देखने में असमर्थ थी। उसके आर्थिक स्थिति भी इतनी खराब थी कि इलाज कराना असंभव था। ऐसे में उसकी दुनिया में अंधेरा छाया हुआ था। पिछले दिनों उषा मार्टिन के ग्रामीण विकास के स्वास्थ्य कार्यक्रम में उसकी दशा से अवगत होने के बाद शालिनी अस्पताल के माध्यम से उसकी प्रारंभिक जांच करायी गयी और उसका इलाज कराकर आंख की रोशनी लौटाया गया। कंपनी की ओर से विशेष अभियान चलाकार इस प्रकार 150 से अधिक ग्रामीण क्षेत्र के गरीब लोगों के आंखों का इलाज किया गया है। शालिनी अस्पताल के प्रबंधक शिशिर भगत ने बताया कि पुशनी देवी के बारे में जांच से पता चला कि उसकी दृष्टि हानि मोतियाबिंद के कारण है। इस कारण वह दैनिक गतिविधि को करने में असमर्थ है। है। मोतियाबिंद की उन्नत अवस्था उसकी दृष्टि को पूरी तरह से खराब कर रही है। तत्काल प्रभाव से आंखों की संपूर्ण जांच के लिए किसी नेत्र रोग विशेषज्ञ के पास रेफर किया गया। उसके बाद उषा मार्टिन फाउंडेशन सीएसआर फंड के सहयोग से शालिनी अस्पताल में मोतियाबिंद सर्जरी निःशुल्क की गई। ऑपरेशन के बाद की देखभाल की भी सुचारू व्यवस्था करायी गयी, ताकि इंफेक्शन से बचा जा सके। सर्जरी के बाद, रोगी को उचित उपचार सुनिश्चित करने के लिए एंटीबायोटिक दवाओं और सूजन-रोधी आई ड्रॉप जैसी दवाओं भी उपलब्ध करायी गयी। उषा मार्टिन फॉउंडेशन गांवों में अपनी पहुंच को बढ़ाने के लिए शालिनी अस्पताल को एक मोबाइल मेडिकल यूनिट दिया है ताकि कम समय पर सुदूर वनप्रदेश के गांवों में पहुंचा जा सके।

इस वर्ष गांवों में गरीब ग्रामीणों के आंखों के लिए सालोंभर अभियान चलाया गया। इसमें से चयनित 150 लोगों को निःशुल्क मोतियाबिंद का ऑपरेशन कराया गया तथा उनको चश्मा भी प्रदान किया गया। स्वास्थ्य अभियान के तहत चिन्हित गांवों मासू और महिलोंग गांवों के चयन का उद्देश्य किशोर में एनीमिया के खिलाफ अभियान चलाया है। इस अभियान का भी सार्थक परिणाम निकला है। उषा मार्टिन कंपनी के सहयोग से कारखाने के इर्द गिर्द के गांवों में इलाजरत टीबी के 20 मरीजों के बीच पोषण किट का वितरण किया गया। कंपनी द्वारा पिछले साल समीपवर्ती गांव के 15 मरीजों को पोषण उपलब्ध कराया गया था।

तीन हजार से अधिक लोगों ने उठाया लाभ

उषा मार्टिन फॉउंडेशन के हेड डॉ मयंक मुरारी ने बताया कि स्वस्थ ग्रामीण से स्वस्थ गांव की पहल के तहत शालिनी अस्पताल के सहयोग से 3379 ग्रामीणों को स्वास्थ्य जांच एवं उनकी समस्याओं का समाधान किया गया, ताकि वे निरोग रह सके। इन लाभुक में ढ़ाई हजार से अधिक जनजातीय समाज के लोगों को चलंत मेडिकल यूनिट के माध्यम से स्वास्थ्य सेवा प्रदान की गयी, ताकि उनको गांव एवं सुदूर वनप्रदेश में ही बेहतर स्वास्थ्य सेवा प्राप्त हो सके।

63 केवीए ट्रांसफार्मर का किया गया उद्घाटन

सिल्ली : सिल्ली विधानसभा के दोवाडू पंचायत के गम्हार टिकरा में 63 केवीए ट्रांसफार्मर का जिला परिषद उपाध्यक्ष वीणा चौधरी एवं प्रखंड प्रमुख जितेंद्र बड़ाइक ने संयुक्त रूप से फीता काटकर उद्घाटन किया। ज्ञात हो कि एक माह पूर्व ही लोड शेडिंग की वजह से वहां का ट्रांसफार्मर जल गया था। ग्रामीणों ने आवेदन देकर सिल्ली विधायक सुदेश महतो से 63 केवीए ट्रांसफार्मर की मांग की थी। विधायक के निर्देश पर विभागीय अधिकारियों ने ट्रांसफार्मर उपलब्ध करा दिया। कार्यक्रम में ग्राम प्रभारी शैलेंद्र उरांव, अभिमन्यु, संजय उरांव सहित सभी ग्रामीण उपस्थित थें।

झारखण्ड सरकार
अधीक्षक, मंडल कारा, सिमडेगा, गृह कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग

ई0–निविदा सूचना, (अति अल्पकालीन निविदा)

1.	कारा का नाम	मंडल कारा, सिमडेगा।
2.	विषय	कारा में संसीमित बंदियों के भोजनादी की व्यवस्था हेतु विभिन्न प्रकार के खाद्यान्नों, हरी सब्जियों, आलू, फल, मांस, सरसों का तेल, चीनी एवं अन्य विविध सामग्रियों के क्रय/आपूर्ति के निमित ई0निविदा का आमत्रण। (1) चतुर्थ त्रैमासिक निविदा दिनांक 01.10.2024 से 31.12.2024 तक (2) वार्षिक निविदा दिनांक 01.04.2024 से 31.03.2025 तक
3.	निविदा प्रपत्र मूल्य (Non refundable) online स्वीकार की जायेगी।	₹ 5000.00(पाँच हजार) मात्र(त्रैमासिक एवं वार्षिक अवधि हेतु अलग– अलग)
4.	Website पर निविदा प्रपत्र के उपलब्धता की तिथि एवं समय	तिथि–30.09.2024 को 10.00 बजे पूर्वाहन से 14.10.2024 के अपराह्न 04.00 बजे तक।
5.	निविदा Online upload करने की तिथि	तिथि–30.09.2024 को 10.00 बजे पूर्वाहन से 14.10.2024 के अपराह्न 04.00 बजे तक।
6.	आपूर्ति हेतु खाद्य सामग्रियों का नमूना (Sample) जमा करने की तिथि	तिथि–15.10.2024 को 10.00 बजे पूर्वाहन से अपराह्न 04.00 बजे तक कार्यालय अवधि में जमा करना होगा।
7.	अग्रधन राशि (EMD) (₹ 2500/- से अधीक होने पर) जमा करने की तिथि	तिथि–15.10.2024 को 10.00 बजे पूर्वाहन से अपराह्न 04.00 बजे तक कार्यालय अवधि में जमा करना होगा।
8.	निविदा के खुलने की तिथि/समय/स्थान	तिथि– 16.10.2024 को मध्याह्न 12.00 बजे मंडल कारा, सिमडेगा के कार्यालय कक्ष में अपर समाहर्ता, सिमडेगा की उपस्थिति में।

नोट:–
1. उपर्युक्त निविदा झारखण्ड सरकार की वेबसाईट https://jharkhandtenders.gov.in पर केवल e-Tender के माध्यम से प्राप्त /स्वीकृत की जायेगी।
2. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि केवल online ही स्वीकार की जायेगी।
3. अतिरिक्त सूचना प्राप्ति हेतु अधीक्षक, मंडल कारा, सिमडेगा के कार्यालय में कार्यालय अवधि में सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है। e-Tender को online upload करने से संबंधित जानकारी हेतु कार्यालय अवधि में Hepline No. 9430342752 से सम्पर्क किया जा सकता है।

–ह0–
अधीक्षक,
मंडल कारा, सिमडेगा

PR 337463 Simdega(24-25)#D

चैनपुर मध्य विद्यालय की प्रधानाध्यापिका ने जन्मदिन पर लगाए 100 पौधे

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चैनपुर : चैनपुर राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय बुकमा में एक अनोखा आयोजन हुआ जहां प्रधानाध्यापिका सुजाता खाखा ने अपने जन्मदिन को विशेष बनाने के लिए पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कदम बढ़ाया। उन्होंने स्कूल क्षेत्र में 100 पेड़ लगाए और बच्चों के साथ मिलकर पर्यावरण संरक्षण के महत्व को समझाया। इस अवसर पर प्रधानाध्यापिका सुजाता खाखा ने कहा की जन्मदिन पर मुझे सबसे अधिक खुशी बच्चों के साथ बिताने में मिलती है। आज मैंने अपने जन्मदिन को पर्यावरण संरक्षण के लिए समर्पित किया है ताकि हमारे बच्चे पर्यावरण के प्रति जागरूक हों और इसके संरक्षण में अपनी भूमिका निभाएं। स्कूल के बच्चों ने प्रधानाध्यापिका के जन्मदिन को विशेष बनाने के लिए केक काटकर और मिठाई खाकर अपनी शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर बच्चों ने पर्यावरण संरक्षण पर निबंध और कविताएं प्रस्तुत कीं जिसे सुनकर सभी उपस्थित लोग प्रभावित हुए। प्रधानाध्यापिका सुजाता खाखा ने कहा की बच्चे हमारे भविष्य हैं और उन्हें पर्यावरण संरक्षण के महत्व को समझाना हमारी जिम्मेदारी है। मैं अपने जन्मदिन को इस तरह मनाकर संतुष्ट हूं कि मैं बच्चों को पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित कर सकी। इस आयोजन में स्कूल के शिक्षक और कर्मचारी सहित बच्चो के अभिभावक भी शामिल हुए और उन्होंने प्रधानाध्यापिका को जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर प्रधानाध्यापिका सुजाता खाखा ने बच्चों को पर्यावरण संरक्षण के महत्व को समझाया और उन्हें पर्यावरण संरक्षण में अपनी भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा की पर्यावरण संरक्षण हमारी जिम्मेदारी है और हमें इसके लिए काम करना चाहिए।

कार्यालयय उपायुक्त–सह–जिला दण्डाधिकारी, पलामू, मेदिनीनगर (जिला चौकीदारी नियुक्ति कोषांग)

सूचना

चौकीदारी परीक्षा (विज्ञापन सं0 01/2024) के शारीरिक दक्षता जांच परीक्षा का परीक्षाफल 29.09.2024 को जिला के अधिकारिक बेवसाईट पर प्रकाशित किया जाएगा। दिनांक 30.09.2024 को 11:00 बजे पूर्वाह्न से 5:00 बजे अपराह्न तक लिखित परीक्षा तथा शारीरिक जांच परीक्षा के समेकित प्राप्तांक के आधार पर उत्तीर्ण अभ्यर्थियों के मूल प्रमाण–पत्रों का सत्यापन किया जायेगा।

अपर समाहर्त्ता,
पलामू

PR 337464 District(24-25)#D

कार्यालय जिला परिषद, हजारीबाग

–: आम सूचना :–

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि सदर प्रखण्ड अन्तर्गत जिला परिषद बस पड़ाव परिसर अन्तर्गत खाली पड़े दुकान संख्या–02 एवं 03 की बन्दोबस्ती खुली डाक द्वारा दिनांक 15.10.2024 को 2:00 बजे अपराहन् में जिला परिषद कार्यालय के सभागार में अद्योहस्ताक्षरी द्वारा या प्राधिकृत पदाधिकारी द्वारा की जायगी। नियम एवं शर्तें तथा अन्य जानकारी कार्यालय के सूचना पट्ट अथवा Web Site- www.hazaribag.nic.in पर देखा जा सकता है।

जो व्यक्ति बन्दोबस्ती में भाग लेना चाहते है, वे निम्नलिखित शर्तों का अनुपालन करते हुए निर्धारित समय पर डाक में भाग ले सकते है।

उप विकास आयुक्त,
–सह–मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी,
जिला परिषद, हजारीबाग

PR 337524 District(24-25).D

कार्यालय जिला परिषद, हजारीबाग।

अल्पकालीन इच्छा की अभिव्यक्ति

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि दिनांक–23/07/2024 को जिला परिषद, हजारीबाग की साधारण बैठक में लिए गए निर्णय के आलोक में जिला परिषद, हजारीबाग द्वारा जिला परिषद पार्क, हजारीबाग के बगल में नव निर्मित मार्केट कॉम्पलेक्स के खाली भवन को किराये पर आवंटित किया जाना है। उक्त आवंटन निलामी के माध्यम से अधिकतम बोली लगाने वाले को किया जाएगा। विवरणी निम्न प्रकार है:–

क्र0	मार्केट कॉम्पलेक्स का नाम	मार्केट कॉम्पलेक्स की विवरणी/दुकान का क्षेत्रफल	न्यूनतम निर्धारित किराया प्रतिमाह प्रतिवर्ग फीट	न्यूनतम निर्धारित किराया प्रतिमाह	जमानत की राशि	आवेदन पत्र की राशि (वापसी योग्य नहीं)
1	2	3	4	5	6	7
1	जिला परिषद द्वारा जिला परिषद पार्क, हजारीबाग के बगल में नव निर्मित मार्केट कॉम्पलेक्स के खाली भवन	भूतल का क्षेत्रफल 13889.42 sq.ft प्रथम तल का क्षेत्रफल 12882.60 sq.ft कुल क्षेत्रफल– 26772.02 Sq ft	60/–रू0	1606321/–रू0	1000000/–रू0	5000/–रू0

उपरोक्त जिला परिषद द्वारा जिला परिषद पार्क, हजारीबाग के बगल में नव निर्मित मार्केट कॉम्पलेक्स के खाली भवन को किराये पर आवंटित करने हेतु अल्पकालीन इच्छा की अभिव्यक्ति में खुली बोली के माध्यम से आवेदन आमंत्रित की जाती है। विज्ञापन प्रकाशन की तिथि से दिनांक 22.10.24 को 2.00 बजे अपराह्न तक अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में इच्छुक फर्म/संस्थान/गैर सरकारी संस्था/स्वयं सहायता समूह/व्यक्ति कार्यालय द्वारा निर्धारित नियम एवं शर्तो के अधीन मुहरबंद लिफाफे में आवेदन जमा कर सकते है। प्राप्त आवेदनों का निष्पादन दिनांक 25.10.24 को अपराह्न 3.00 बजे गठित चयन समिति के समक्ष की जायेगी। इच्छा की अभिव्यक्ति समर्पित करने वाले इच्छुक फर्म/संस्थान/गैर–सरकारी संस्था/स्वयं सहायता समूह/प्रोपराइटर/अध्यक्ष/सचिव /स्वयं अथवा अपने द्वारा प्राधिकृत प्रतिनिधि के माध्यम से बैठक में उपस्थित रहेंगे।

इच्छा की अभिव्यक्ति में भाग लेने संबंधित नियम एवं शर्तें तथा आवेदन पत्र प्रारूप कार्यालय अवधि में सूचना पट्ट एवं विभागीय वेबसाईट www.hazaribag.nic.in में अवलोकन किया जा सकता है।

उप विकास आयुक्त–सह–
मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी,
जिला परिषद, हजारीबाग।

PR 337507 District(24-25)D

दवा कारोबार की अनैतिकता से बढ़ता जीवन संकट

ललित गर्ग

दवाओं की गुणवत्ता से खिलवाड़ दवा निमार्ता कम्पनियों का एक घिनौना, क्रूर एवं अमानवीय चेहरा ही है जो मनुष्य के स्वास्थ्य को चौपट कर रहे हैं। एक तो बीमारियों का कोई कारगर इलाज नहीं है, दूसरा इन बीमारी में काम आने वाली तमाम जरूरी दवाइयां लालची लोगों ने अमानक एवं दोषपूर्ण कर दी हैं। बढ़ती बीमारियां इन राक्षसों के कारण ही बेकाबू हो रही है।

केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) ने दवाइयों के क्वालिटी टेस्ट में 53 दवाओं को फेल कर दिया गया है। उनमें कई दवाओं की क्वालिटी खराब है तो वहीं दूसरी ओर बहुत सी दवाएं नकली भी बिक रही हैं। इन दवाओं में बीपी, डायबिटीज, एसिड रिफलक्स और विटामिन की कुछ दवाइयां भी शामिल हैं। इसके अलावा सीडीएससीओ ने जिन दवाओं को गुणवत्ता में फेल किया हैं उसमें बुखार उतारने वाली पैरासिटामोल, पेन किलर डिक्लोफेनेक, एंटीफंगल मेडिसिन फ्लुकोनाजोल जैसी देश की कई बड़ी फार्मास्युटिक्लस कंपनी की दवाएं भी शामिल हैं और इनको सेहत के लिए नुकसानदायक भी बताया गया है। निश्चित ही यह खबर परेशानी एवं चिन्ता में डालने वाली है। कैसी विडंबना है कि काफी समय से सरकारों की नाक के नीचे ये दवाइयां धड़ल्ले से बिकती रही हैं। गुणवत्ता के मानकों पर खरा न उतरने वाली दवाओं की सूची जारी होने से उन मरीजों की स्वास्थ्य सुरक्षा संबंधी चिंताएं बढ़ गयी हैं जो इन दवाओं का इस्तेमाल कर रहे थे। दुर्भाग्य से इस सूची में हाइपरटेंशन, डाइबिटीज, कैल्शियम सप्लीमेंट्स, विटामिन-डी3 सप्लीमेंट्स, विटामिन बी कॉम्प्लेक्स, विटामिन-सी, एंटी-एसिड, एंटी फंगल, सांस की बीमारी रोकने वाली दवाएं भी शामिल हैं। इसमें दौरे व एंग्जाइटी का उपचार करने वाली दवाएं भी शामिल हैं। ये दवाएं बड़ी कंपनियों द्वारा भी उत्पादित हैं।

रोगी इस उम्मीद में दवा लेते हैं कि इससे उनकी बीमारी ठीक होगी। लेकिन यह पता लगे कि जिन दवाइयों का वे सेवन कर रहे हैं वे दवा नहीं बल्कि जहर के रूप में बाजार में आ गई हैं तो क्या बीतेगी? हिंदुस्तान में आज लाखों लोगों को ये दवाएं जीवन-रक्षा नहीं दे रही है बल्कि मार रही है, इंसान का लोभ एवं लालच इंसान को मार रहा है। ऐसे स्वार्थी लोगों एवं जीवन से खिलवाड़ करने वालों को राक्षस, असुर या दैत्य कहा गया है जो समाज एवं राष्ट्र में तरह-तरह से स्वास्थ्य सुरक्षा के नाम पर मौत बांट रहे हैं। अमानक एवं गुणवत्ता में दोषपूर्ण पाई गई इन दवाओं में कई नामी कंपनियों की दवाएं भी शामिल हैं। अमानक पाई गई दवाइयों के ये मामले तो तब आए हैं जब पहले से ही दवाओं की गुणवत्ता तय करने के लिए कई सख्त प्रक्रियाएं होती हैं। इनमें कच्चे माल की जांच और निर्माण प्रक्रिया का निरीक्षण तक शामिल होता है। इसके बावजूद नामी दवा निमार्ता कंपनियों के उत्पाद भी मानकों पर खरे नहीं उतरें तो यह माना जाना चाहिए कि कम लागत में ज्यादा मुनाफा कमाने के चक्कर में ये कंपनियां नैतिकता एवं मानवीयता

को ताक पर रखने लगी है। यह कोई पहला मौका नहीं है जब दवाइयां गुणवत्ता के पैमानों पर खरी नहीं उतरी हैं। आम लोगों के मन में सवाल बाकी है कि यदि ये दवाएं मानकों पर खरी नहीं उतरती तो इनके नकारात्मक प्रभाव किस हद तक हमारी सेहत को प्रभावित करते हैं। यह भी कि जो लोग घटिया दवाइयां बेच रहे थे क्या उनके खिलाफ कोई कार्रवाई की पहल भी हुई है? फिलहाल इस बाबत कोई जानकारी आधिकारिक रूप से सामने नहीं आई है। निस्संदेह, यह शर्मनाक है और तंत्र की विफलता को उजागर करता है कि शारीरिक कष्टों से मुक्त होने के लिये लोग जो दवाएं खरीदते हैं, वे घटिया हैं? बहुत संभव है ऐसी घटिया दवाओं के नकारात्मक प्रभाव भी सामने आते होंगे। इस बाबत गंभीर शोध-अनुसंधान की जरूरत है। चिंता यह भी कि यदि रैंडम सैम्पलिंग में ये दवाइयां पकड़ी नहीं जाएं तो इनकी खुलेआम बिक्री लोगों की सेहत पर खतरा बन कर मंडराती रहती हैं। एक तरफ सीडीएससीओ ने दवाओं की सुगम आपूर्ति के लिए अमरीका, ऑस्ट्रेलिया, जापान, कनाडा व यूरोपीय संघ के कुछ चुनिंदा देशों से आयातित दवाओं को नियमित नमूना परीक्षण से छूट दी है, वहीं देश के बाजारों में पहुंची दवा निमार्ता कंपनियों की दवाओं में मिलने वाली यह खोट हमारी छवि पर विपरीत असर डालने वाली है।

दवा परीक्षण में किसी भी स्तर पर लापरवाही अक्षम्य ही है क्योंकि दवा कारोबार में हेराफेरी का खेल लोगों की जान का दुश्मन बन सकता है। विडंबना देखिए कि ताकतवर और धनाढ्य वर्ग द्वारा संचालित इन दवा कंपनियों पर राज्य सरकारें भी जल्दी हाथ डालने से कतराती हैं। जिसकी कीमत आम लोगों को ही चुकानी पड़ती है। दुर्भाग्यपूर्ण है कि मानवीय मूल्यों में इस हद तक गिरावट आई है कि लोग अपने मुनाफे के लिये पीड़ित मरीजों के जीवन से खिलवाड़ करने से भी नहीं चूक रहे हैं। व्यथित करने वाली बात है कि गुणवत्ता एवं मानक में फेल होने वाली दवाओं में पेट में इंफेक्शन रोकने वाली एक चर्चित दवा भी शामिल है। उल्लेखनीय है कि इसी साल अगस्त में केंद्र सरकार ने 156 फिक्स्ड डोज कॉम्बिनेशन यानी एफडीसी दवाओं की बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया था। दरअसल, ये दवाइयां आमतौर पर सर्दी व बुखार, दर्द निवारक, मल्टी विटामिन और एंटीबायोटिक्स के रूप में इस्तेमाल की जा रही थी। मरीजों के लिये नुकसानदायक होने की आशंका में इन दवाइयों के उत्पादन, वितरण व उपयोग पर रोक लगा दी गई थी। सरकार ने यह फैसला दवा टेक्निकल एडवाइजरी बोर्ड की सिफारिश पर लिया था। जिसका मानना था कि इन दवाओं में शामिल अवयवों की चिकित्सकीय गुणवत्ता संदिग्ध है। दरअसल, एक ही गोली को कई दवाओं से मिलाकर बनाने को फिक्स्ड डोज कॉम्बिनेशन ड्रग्स यानी एफडीसी कहा जाता है। बहरहाल, सामान्य रोगों में उपयोग की जाने वाली तथा जीवनरक्षक दवाओं की गुणवत्ता में कमी का पाया जाना, मरीजों के जीवन से खिलवाड़ ही है। जिसके लिये नियामक विभागों की जवाबदेही तय करके घटिया दवा बेचने वाले दोषियों को कठोर दंड दिया जाना चाहिए। असल में इस तरह की दानवी सोच वाले लोग सिर्फ अपना स्वार्थ देखते हैं। ऐसे लोग धन-संपत्ति आदि के जरिए सिर्फ अपना ही उत्थान करना चाहते हैं, भले ही इस कारण दूसरे लोगों और पूरे समाज ही मौत के मुंह में जा रहे हो, यह मानवीय संवेदनाओं के छीजने की चरम पराकाष्ठा है। यह कैसी विडम्बना एवं विसंगतिपूर्ण दौर है जिसमें जिसको जहां मौका मिल रहा है, वह लूटने में लग हुआ है, यहाँ कोई भी व्यक्ति सिर्फ तब तक ही ईमानदार है जबतक उसको चोरी करने का या लूटने का मौका नहीं मिलता। हद तो तब है जब कई जगह जीवनरक्षक इंजेक्शनों की जगह नकली इंजेक्शन तैयार करने की खबरें भी आती रहती हैं। हम कितनें लालची एवं अमानवीय हो गये हैं, हमारी संवेदनाओं का स्रोत सूख गया है, तभी अपना ईमान बेच कर इंजेक्शन में पैरासिटामोल मिलाकर बेचने लगते हैं, हम तो अपनी तिजोरियां भरने के लिए जिंदा इंसानों को ही नोच रहे हैं, कहाँ लेकर जाएंगे ऐसी दौलत या फिर किसके लिए? यह कैसी मानवीयता है?

दवाओं की गुणवत्ता से खिलवाड़ दवा निमार्ता कम्पनियों का एक घिनौना, क्रूर एवं अमानवीय चेहरा ही है जो मनुष्य के स्वास्थ्य को चौपट कर रहे हैं। एक तो बीमारियों का कोई कारगर इलाज नहीं है, दूसरा इन बीमारी में काम आने वाली तमाम जरूरी दवाइयां लालची लोगों ने अमानक एवं दोषपूर्ण कर दी हैं। बढ़ती बीमारियां इन राक्षसों के कारण ही बेकाबू हो रही है। सरकारें इन त्रासद स्थितियों एवं बीमारी पर नियंत्रण पाने में नाकाम साबित हुई है। देश के लाखों लोग कातर निगाहों से शासन-प्रशासन की ओर देख रहे हैं कि कोई तो राह निकले। सरकार का व्यवस्था पर नियंत्रण कमजोर होता दिख रहा है। आम आदमी जाए तो कहां जाये? विश्व को श्रेष्ठ, नैतिक एवं मानवीय बनने का उपदेश देने वाला देश आज कहां खड़ा है? आज इन मूल्यों एवं संवेदनाओं की दृष्टि से देश कितना खोखला एवं जर्जर हो गया है। आज भौतिक एवं स्वार्थी मूल्य अपनी जड़ें इतनी गहरी जमा चुके हैं कि उन्हें निर्मूल करना आसान नहीं है। मनुष्य का संपूर्ण कर्म प्रदूषित हो गया है। सारे छोटे-बड़े धंधों में अनीति प्रवेश कर गई है। अमानक दवाओं का बढ़ता बाजार एक कलंक बनकर उभरा है। निस्संदेह यह संकट जल्दी समाप्त होने वाला नहीं है। ऐसे में सरकारों को दूरगामी परिणामों को ध्यान में रखकर रणनीति बनानी होगी।

(लेखक, पत्रकार, स्तंभकार)

संपादकीय

कूटनीतिक प्रयास का असर

सेंट पीटर्सबर्ग में 12 सितम्बर को राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल और उनके चीनी समकक्ष वांग यी के बीच हुई बातचीत के बाद चीन के रक्षा मंत्रालय की ओर से कहा गया है कि दोनों देशों ने पूर्वी लद्दाख में विवादित स्थलों से अपने सैनिकों को हटाने के लिए सहमति बनाई है। इस दिशा में आगे भी बातचीत जारी रहेगी। 2020 में पूर्वी लद्दाख के गलवान घाटी में दोनों देशों के बीच सैनिक झड़पें हुई थी। इसके बाद से दोनों पक्षों के बीच विवादित मुद्दों को लेकर बातचीत जारी है। कूटनीति स्तर पर बातचीत का ही परिणाम है कि 2020 के घटनाक्रम के बाद पूर्वी लद्दाख में दोनों देशों की सेवा की तैनाती के बावजूद सीमा पर सामान्य रूप से शांति कायम है। दोनों देश हिंसक वारदात की पुनरावृत्ति रोकने के लिए तत्पर दिखाई देते हैं। 2022 के नवम्बर में इंडोनेशिया के बाली में प्रधानमंत्री मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच द्विपक्षीय संबंधों और सीमा पर स्थिरता बनाए रखने के बारे में चर्चा हुई थी। अगले महीने 22 से 24 अक्टूबर तक रूस में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन होने जा रहा है जिसमें प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच द्विपक्षीय वार्ता की संभावना जताई जा रही है। इस बैठक के पहले दोनों पक्ष ऐसा वातावरण बनाना चाहते हैं कि मोदी और शी जिनपिंग आपसी रिश्तों को सुधारने की दिशा में ठोस कदम उठाएं। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने मंगलवार को न्यूयॉर्क के एशिया सोसाइटी पॉलिसी इंस्टीट्यूट के कार्यक्रम में कहा कि भारत चीन संबंधों का असर न केवल एशिया बल्कि पूरी दुनिया पर पड़ेगा। संबंधों में प्रगति के लिए सबसे पहले सीमा पर शांति बहाल करना जरूरी है। जयशंकर का विश्वास है कि अगर एशिया को बहुतध्रुवीय बनाना है तो भारत चीन संबंध इसमें अहम भूमिका निभाएगी। चीन का शीर्ष नेतृत्व यदि बुद्धिमता का परिचय दे तो संबंधों को फिर पटरी पर लाया जा सकता है। जयशंकर यह बार-बार स्पष्ट कर चुके हैं कि द्विपक्षीय संबंधों को पटरी पर लाने के लिए सीमा से सेना को पीछे हटना हटाने तथा शांति एवं सामान्य स्थिति कायम रखना एक आवश्यक शर्त है।

चिंतन-मनन

दिव्यता की विविधता

ईश्वर ने दुनिया की छोटी-छोटी खुशियां तो तुम्हें दे दी हैं, लेकिन सच्चा आनन्द अपने पास रख लिया है। उस परम आनन्द को पाने के लिए तुम्हें उनके ही पास जाना होगा। ईश्वर को पाने की चेष्टा में निष्कपट रहो। एक बार परम आनन्द मिल जाने पर सब-कुछ आनन्दमय है। परमानन्द के बिना संसार की खुशियां अस्थाई हैं। तुमने ईश्वर को सदैव पिता के रूप में देखा है परंतु क्या तुम ईश्वर को एक शिशु के रूप में देख सकते हो? जब तुम ईश्वर को शिशु के रूप में देखते हो तो तुम्हारी कोई मांग नहीं होती। ईश्वर तो तुम्हारे अस्तित्व का अन्तःकरण है। ईश्वर तुम्हारा शिशु है। वे तुमसे बच्चे की तरह चिपककर रहते हैं जब तक तुम वृद्ध होकर मर नहीं जाते। संसार में उनके पोषण के लिए उन्हें तुम्हारी आवश्यकता है। साधना, सत्संग और सेवा ईश्वर के पोषक आहार हैं। ईश्वर अनेक क्यों नहीं हो सकते? यदि ईश्वर ने मनुष्य को अपनी ही छवि के अनुसार बनाया है, तो उनकी छवि क्या है? अफ्रीकी, मंगोलियन, कॉकेसियन, जापानी या फिलिपिनो? मनुष्य इतने प्रकार के क्यों हैं, वृक्ष सिर्फ एक प्रकार का नहीं होता। सांप, बादल, मच्छर या सब्जी सिर्फ एक प्रकार के नहीं। तो फिर केवल ईश्वर को ही एक क्यों होना चाहिए?

जिस चेतना ने इस सम्पूर्ण सृष्टि की रचना की है और जो विविधता प्रेमी है, वह नीरस कैसे हो सकती है? ईश्वर को विविधता पसंद है, तो वे भी अवश्य ही वैविध्यपूर्ण होंगे। ईश्वर अनेक नाम, रूप और प्रकार से अभिव्यक्त होते हैं। कुछ विचार-धारा के व्यक्ति ईश्वर को उनके विभिन्न रूपों में प्रकट होने की स्वतंत्रता नहीं देते। वे उन्हें एक ही रूप में चाहते हैं। अवसर के अनुसार जब तुम अपना रूप बदलते हो तो फिर कैसे सोच सकते हो कि चेतना में कोई विविधता न हो? हमारे पूर्वज इस बात को समझते थे इसीलिए, उन्होंने दिव्यता के अनन्त गुणों व रूपों का ज्ञान कराया। चेतना नीरस और उबाऊ नहीं है। जो चेतना इस सृष्टि का आधार है, वह गतिमान और परिवर्तनशील है। ईश्वर एक ही नहीं, अनेक हैं। जब तुम दिव्यता की विविधता को स्वीकार करते हो, तब कट्टर और रूढ़िवादी नहीं रह जाते।

गृहस्थ योगावतार का प्रेरक जीवन

सन्ध्या एस. नायर

ईश्वर-साक्षात्कार आत्मप्रयास से सम्भव है, वह किसी धार्मिक विश्वास या किसी ब्रह्माण्ड नायक की मनमानी इच्छा-अनिच्छा पर निर्भर नहीं है। योगावतार श्री श्री लाहिड़ी महाशय द्वारा इन शब्दों में प्रकट किया गया यह अत्यन्त महत्वपूर्ण आश्वासन केवल एक दार्शनिक विचार नहीं था अपितु उपरोक्त आदर्श के प्रति समर्पित उनके जीवन का एक जीवन्त प्रमाण था।

श्री श्री श्यामाचरण लाहिड़ी का जन्म 30 सितम्बर, 1828 को हुआ था। वे भगवान शिव के एक अनन्य भक्त के पुत्र थे। शास्त्रों के अनुसार शिवजी को महायोगी के रूप में पूजा जाता है। लाहिड़ी महाशय ने अपने बचपन में हिन्दी, उर्दू, संस्कृत, बंगाली, फ्रेंच और अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त की थी। उन्होंने वेदों का गहन अध्ययन किया था और विद्वान पण्डितों के मुख से धर्मशास्त्रों के प्रवचनों को भी ध्यानपूर्वक सुना था। अपने सभी साथियों के प्रिय, दयालु, सौम्य, और साहसी युवक ने परम्परानुसार सन 1846 में श्रीमती काशीमणि के साथ पवित्र वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया और वैदिक अनुशासन के अनुसार गृहस्थाश्रम का पालन किया। इस विवाह युति से चार सन्तानों का जन्म हुआ। 23 वर्ष की आयु में, सन 1851 में, वे ब्रिटिश सरकार के

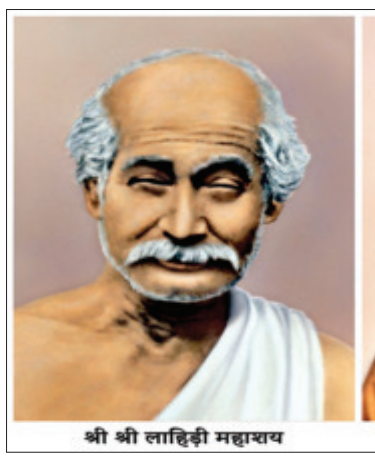

श्री श्री लाहिड़ी महाशय

श्री श्री परमहंस योगानंद

श्री श्री लाहिड़ी महाशय के 196वें जन्मदिवस पर विशेष

मिलिटरी इंजीनियरिंग विभाग में एक लेखापाल के पद पर नियुक्त हुए। उनकी ईमानदारी और समर्पण की झलक उनके जीवन के सभी पक्षों में दिखाई देती थी, जिससे उनका विनम्र जीवन न केवल ईश्वर की दृष्टि में अपितु एक साधारण कार्यालय कर्मचारी के रूप में भी सर्वोत्कृष्ट बन गया था।

लाहिड़ी महाशय के तैंतीसवें वर्ष में सन् 1861 की शरद ऋतु में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना ने अब तक के एक साधारण जीवन की दिशा परिवर्तित कर दी। सम्पूर्ण मानव जाति की आध्यात्मिक धुरी की दिशा में भी एक विराट परिवर्तन हुआ। लाहिड़ी महाशय का स्थानान्तरण हिमालय में स्थित रानीखेत कर दिया गया। अत्यन्त रहस्यमय ढंग से एक दिन दोपहर को द्रोणागिरी पर्वत में पदयात्रा करते हुए उनकी भेंट हिमालय के अमर योगी महावतार बाबाजी से हुई। आश्चर्यचकित युवक को गुरुदेव ने एक रहस्यमय सन्देश दिया कि उन्होंने ही उनके वरिष्ठ अधिकारी के मन को गुप्त रूप से यह सुझाव दिया था कि लाहिड़ी महाशय को रानीखेत स्थानान्तरित कर दिया जाय। जब कोई मनुष्य मानव मात्र के साथ एकता का अनुभव करता है, तब उसके लिए सभी मानव-मन संचार केन्द्र बन जाते हैं, और वह उनके माध्यम से अपनी इच्छा के अनुसार कार्य कर सकता है।

बाबाजी ने उनके पूर्वजन्म के कुछ अकल्पनीय तथ्यों को प्रकट करने के पश्चात हतप्रभ युवक को लुप्त प्राचीन क्रियायोग विज्ञान की दीक्षा प्रदान की। श्री श्री परमहंस योगानन्दजी के सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक गौरव ग्रन्थ योगी कथामृत के हिमालय में महल का सृजन प्रकरण में अत्यन्त मार्मिक ढंग से इस अद्भुत घटना का विस्तृत वर्णन किया गया है। (योगानन्दजी के माता-पिता लाहिड़ी महाशय के शिष्य थे, और गुरुदेव ने स्वयं उन्हें भी उनके बचपन में अपना आशीर्वाद प्रदान किया था। अनेक वर्षों के पश्चात, आज से एक शताब्दी से भी अधिक समय पूर्व, योगानन्दजी ने योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इण्डिया (वाईएसएस) और सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप (एसआरएफ) की स्थापना करके क्रियायोग के पवित्र विज्ञान का प्रसार करने का उत्तरदायित्व स्वीकार किया था)।

युवा लाहिड़ी महाशय गुरुदेव के चरणों में निरन्तर सात दिनों तक निर्विकल्प समाधि के आनन्द में निमग्न रहे। आठवें दिन उन्होंने बाबाजी से प्रार्थना की कि वे उन्हें उन निर्जन पर्वतों में सदैव अपने साथ ही रहने दें। परन्तु उनके दयालु गुरुदेव के मन में उनके लिए महान् योजनाएं थीं। तुम्हारा जीवन आदर्श गृहस्थ-योगी का उदाहरण बनकर शहरों की भीड़भाड़ के बीच रहने के लिए है। तुम्हें सच्चे जिज्ञासुओं को क्रियायोग के माध्यम से आध्यात्मिक दिलासा देने के लिए चुना गया है।....तुम्हारे सन्तुलित जीवन से यह बात उनकी समझ में आ जाएगी कि मुक्ति बाह्य त्याग पर नहीं, अपितु आन्तरिक वैराग्य पर निर्भर करती है।

इस प्रकार लाहिड़ी महाशय का सामंजस्यपूर्ण सन्तुलित जीवन जनसाधारण के लिए एक प्रेरणास्रोत बन गया। उन्होंने सभी मतावलम्बियों को क्रियायोग दीक्षा का उपहार प्रदान किया। उन्होंने तत्कालीन कठोर जातिवादी कट्टरता को दूर करने के लिए भी अथक प्रयास किए।

योगावतार प्रायः अपने शिष्यों को इन शब्दों के साथ प्रोत्साहित किया करते थे, बनत, बनत, बन जाय। अर्थात निरन्तर प्रयास करते रहने से अन्ततः दिव्य लक्ष्य की प्राप्ति अवश्य होगी।

खो-खो : गुमनामी से अंतरराष्ट्रीय शिखर तक

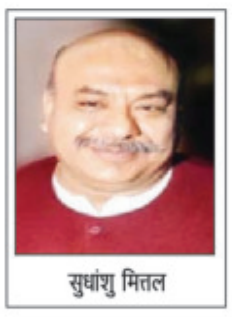

सुधांशु मित्तल

पीछा करने के सदियों पुराने रोमांचक खेल 'खो-खो' की जड़ें भारतीय पौराणिक कथाओं में हैं, और यह खेल प्राचीन काल से प्राकृतिक घास या मैदान में नियमित रूप से पूरे भारत में खेला जाता है। 'खो' मराठी शब्द है, जिसका अर्थ है, जाओ और पीछा करो। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों द्वारा खेले जाने वाला 'खो खो' प्राचीन भारत का पारंपरिक खेल माना जाता है, और यह ग्रामीण क्षेत्रों में कबड्डी के बाद दूसरा रोमांचक टैग गेम है। 'खो खो' की उत्पत्ति भारत में मानी जाती है। इतिहास में इसका वर्णन मौर्य शासनकाल (चौथी ईसा पूर्व) में मिलता है। इस खेल का वर्णन महाभारत काल में भी किया गया है।

विशेषज्ञों का मानना है कि महाभारत काल में 'खो खो' रथ पर खेला जाता था जहां प्रतिद्वंद्वी रथ पर सवार होकर एक-दूसरे का पीछा करते थे, जिसे 'रथेरा' कहा जाता था। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि महाभारत युद्ध के 13वें दिन गुरु द्रोणाचार्य द्वारा बनाए गए चक्रव्यूह में प्रवेश करने के लिए अभिमन्यु ने 'खो-खो' में इस्तेमाल की जाने वाली रणनीति का उपयोग किया था और 'खो-खो' के कौशल का उपयोग कर-के कौरव वंश को भारी नुकसान पहुंचाया था। लोकमान्य तिलक द्वारा गठित डेक्कन जिमखाना पुणे ने पहली बार इस खेल के विधिवत नियम तय किए। 1923-24 में इंटर स्कूल स्पोर्ट्स कंपटीशन की स्थापना की गई जिसके माध्यम से ग्रामीण स्तर पर 'खो-खो' को लोकप्रिय करने के लिए कदम उठाए गए। 1928 में भारत की पारंपरिक खेलों को प्रोत्साहित करने के लिए गठित 'अखिल भारतीय शारीरिक शिक्षण मंडल' का गठन हुआ और 1935 में इस खेल के नियमों को पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया। आधुनिक काल में 'खो-खो' खेल को महाराष्ट्र के अमरावती के हनुमान व्यायाम प्रसारक मंडल के तत्वावधान में सबसे पहले 1936 के बर्लिन ओलंपिक्स में प्रदर्शित किया गया था तथा इस खेल को अडोल्फ हिटलर ने जमकर सराहा।

1938 में अखिल महाराष्ट्र शारीरिक शिक्षण मंडल ने 'खो-खो' खेल की दूसरी नियम पुस्तिका प्रकाशित की। इसी वर्ष अकोला में इंटर जोनल स्पोर्ट्स का आयोजन किया गया। आज 'खो-खो' भारत के सभी राज्यों में खेली जाती है तथा राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर 'खो-खो' की अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। आजादी के बाद भारतीय खेलों को प्रोत्साहन देने के अंतर्गत 1955-56 में 'अखिल भारतीय खो-खो मंडल' की स्थापना की गई। पुरुषों की पहली राष्ट्रीय खो-खो चैंपियनशिप का आयोजन 25 दिसम्बर, 1959 से 01 जनवरी, 1960 को आयोजित किया गया जबकि महिलाओं की पहली राष्ट्रीय खो-खो चैंपियनशिप महाराष्ट्र के कोल्हापुर में 13 से 16 अप्रैल, 1961 को आयोजित की गई। वर्ष 1964 में इंदौर, मध्य प्रदेश में आयोजित 5वीं नेशनल खो-खो चैंपियनशिप में व्यक्तिगत पुरस्कार शुरू किए गए। 1966 में 'खो-खो फेडरेशन ऑफ इंडिया' की स्थापना की गई तथा 1970 में किशोर लड़कों की पहली नेशनल खो-खो चैंपियनशिप का आयोजन किया गया जबकि 1974 में किशोर लड़कियों की पहली नेशनल खो-खो चैंपियनशिप का आयोजन किया गया। 1982 में दिल्ली में आयोजित 9वीं एशियाई खेलों में खो-खो का डेमोंस्ट्रेशन मैच आयोजित किया गया। 1987 में कोलकाता में आयोजित तीसरी साउथ एशियाई खेलों में खो-खो खेल को प्रदर्शित किया गया। अंतरराष्ट्रीय खेलों में पहली बार 1996 में 'खो-खो' की पहली एशियाई खो-खो चैंपियनशिप आयोजित की गई जिससे 'खो-खो' को अंतरराष्ट्रीय खेल के रूप में लोकप्रियता मिली जिससे आज यह खेल 36 से अधिक देशों में खेला जाता है।

1998 में पहला नेता जी सुभाष गोल्ड कप इंटरनेशनल खो-खो टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। 'खो-खो' को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रोत्साहित करने के लिए जुलाई, 2018 में 'इंटरनेशनल खो-खो फेडरेशन' का गठन किया गया जिसका हेडक्वार्टर लंदन में है। लंदन में पहली इंटरनेशनल खो-खो चैंपियनशिप 2018 में आयोजित की गई। आज 'खो-खो' भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक रूप से खेला जाने वाला खेल है। यह विभिन्न अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजनों का हिस्सा है, जिसमें लगभग 20 देशों की राष्ट्रीय खो-खो

टीमें हैं। ऐसे गौरवशाली इतिहास के साथ खो-खो की लोकप्रियता आने वाले वर्षों में भी बढ़ती रहेगी।

(लेखक इंटरनेशनल खो-खो फेडरेशन के अध्यक्ष हैं)

एक नजर

राष्ट्रीय सुरक्षा पार्टी के जिला अध्यक्ष बने धनंजय तिवारी

मेदिनीनगर (पलामू): राष्ट्रीय सुरक्षा पार्टी के झारखंड प्रदेश अध्यक्ष सह हटिया विधानसभा प्रत्याशी निपु सिंह ने धनंजय तिवारी को पलामू के नया जिला अध्यक्ष सह मीडिया प्रभारी नियुक्त किया । इस अवसर पर पार्टी के कार्यकर्ताओं ने उन्हें फूलों का माला पहनाकर और गुलदस्ता देकर स्वागत किया। इस मौके पर निपु सिंह ने कहा कि धनंजय तिवारी के राजनीति अनुभवों को देखते हुए पार्टी को मजबूती मिलेगा और श्री सिंह ने कहा की आगामी विधानसभा चुनावों को देखते हुए हम लोगों को हटिया विधानसभा बहुत मजबूती के साथ लड़ना है और हटिया विधानसभा में नेता नहीं सभी का बेटा और भाई बनकर काम करना है। इस मौके पर पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष रामानुज सिंह और राष्ट्रीय महासचिव बहन मोनिका गौतम सहित सैकड़ो पदाधिकारीयों ने जिला अध्यक्ष बनने पर धनंजय तिवारी को बधाई दी एवं उज्जवल भविष्य की कामना की ।

आजसू का विधानसभा स्तरीय युवा संवाद कार्यक्रम आज

सिल्ली: सिल्ली स्टेडियम परिसर में रविवार को पुर्वाह्न 11 बजे सिल्ली विधानसभा स्तरीय युवा संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। जिसमें विधानसभा क्षेत्र के प्रत्येक बुथ से 20-20 युवा आजसू कार्यकर्ता शामिल होंगे। आजसू प्रमुख सह स्थानीय विधायक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। केंद्रीय सचिव सह पुर्व जिप सदस्य गौतम कृष्ण साहू ने इसकी जानकारी देते हुए आजसू पार्टी के सभी ग्राम प्रभारी, पंचायत प्रभारियों को अपने क्षेत्र के युवा आजसू के कार्यकताओं के साथ कार्यक्रम में उपस्थित होने का आग्रह किया है।

तीसरा मोर्चा सिल्ली विस के कार्यकर्ताओं ने सोनाहातु प्रखंड का किया दौरा

सिल्ली : सिल्ली विधानसभा क्षेत्र के संरक्षक डॉङ्क अमित कुमार के निदेर्शानुसार तीसरा मोर्चा (स्वतंत्र) के पदाधिकारी श्री जगबंधु महतो एवं कोषाध्यक्ष श्री हबलू मुंडा के नेतृत्व में सोनाहातू प्रखंड के गाड़ाडीह, सारमाली, भकवाडीह, बिरगामडीह, रांगाडीह, सालबंदा,सारेयाद, मुरूत डीह, काशीडीह इत्यादि गांवो का तूफानी दौरा मोटरसाइकिल के द्वारा किया गया। सिल्ली विधानसभा क्षेत्र में बदलाव करने हेतू लोगो को प्रेरित किया। सिल्ली विधानसभा क्षेत्र की जनता इस बार बदलाव करने का मन बना चुकी है। विगत दिनों से तीसरा मोर्चा के कार्यकर्ता गांव गांव जा कर लोगो को पक्ष और विपक्ष के कार्यकाल को देखते हुए बदलाव करने को प्रेरित करने में लगे हुए हैं। इसमें मुख्य रुप से हरेलाल महतो,सुशेन महतो, राजू महतो, परितोष महतो, हमेश महली, रामजीवन मुंडा, सुख राम लोहरा, भोला नाथ महतो आदि कार्यकर्ता शामिल थे।

अवैध शराब भट्ठी को पुलिस ने किया नष्ट

छतरपुर (पलामू) : छतरपुर थाना अंतर्गत अर्जुनडीह ग्राम में रविवार को अवैध देशी शराब की भट्टी को नष्ट किया गया। छतरपुर थाना प्रभारी प्रशांत प्रसाद ने बताया कि गुप्त सूचना प्राप्त हुई की अर्जुनडीह अवैध शराब का निर्माण किया जा रहा है जहां कार्रवाई करने पर करीब 200 किलोग्राम जावा महुआ और 10 लीटर शराब पाया गया। वहीं पुलिस टीम को आता देख अवैध शराब निर्माण में शामिल व्यक्ति भागने में सफल रहे हैं। पुलिस के द्वारा स्थल पर मौजूद सामग्रियों को नष्ट किया गया तथा मामला दर्ज कर अग्रतर कार्रवाई की जा रही है।

राष्ट्रीय लोक अदालत में 38 हजार 773 मामले का हुआ निस्तारण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

मेदिनीनगर (पलामू) : झालसा के दिशा निर्देश व पलामू के प्रधान जिला व सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार के देखरेख में शनिवार को व्यवहार न्यायालय परिसर में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया। लोक अदालत का उदघाटन पीडीजे ने अपने उपस्थिति में लाभुकों से द्वीप प्रज्ज्वलित कर कराया। इस मौके पर कुटुंब न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश संजीव कुमार दास, जिला व अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश प्रथम विनोद कुमार सिंह, द्वितीय

अखिलेश कुमार, तृतीय शंकर कुमार महाराज, सी जे एम आनंद सिंह, संजय सिंह यादव, संदीप निशित बारा,अर्पित श्रीवास्तव, शिखा अग्रवाल, परमानंद उपाध्याय, रितु कुजूर, रोजलिना बारा, कमल प्रकाश, अमित प्रकाश, प्रागेश निगम, समीरा खान, अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष रामदेव प्रसाद यादव, महासचिव अजय कुमार पांडेय, एल ए डी सी एस के चीफ अमिताभ चन्द सिंह, डिप्टी चीफ संतोष कुमार पांडेय उपस्थित थे। लोक अदालत में मामले का निस्तारण किया गया। वहीं करोड़ लाख हजार रुपए का मामला सेटल हुआ। राष्ट्रीय लोक अदालत में मामले निस्तारण को ले 15 पीठो का गठन किया गया था। इसमे 13 पीठ सिविल कोर्ट पलामू में बना था जबकि पीठ संख्या 14 हुसैनाबाद अनुमंडलीय कोर्ट के मामले का निस्तारण किया गया मामले का निस्तारण एसडीएम पीयूष सिन्हा व अधिवक्ता रामचंद्र सिंह कर रहे थे। वही पीठ संख्या 15 में छतरपुर अनुमंडलीय न्यायालय से संबंधित मामले का निस्तारण अनुमंडल पदाधिकारी हीरा कुमार व अधिवक्ता राकेश कुमार मिश्रा कर रहे थे। राष्ट्रीय लोक अदालत में प्रि लिटीटिगेशन के 35,369 मामले का निस्तारण किया गया। वहीं कोर्ट में लंबित 3,426 मामले का निस्तारण किया गया। मामले निस्तारण के लिए गठित पीठ में रिजर्व में सिविल जज सीनियर डिवीजन संजय सिंह यादव, निशिकांत व कमल प्रकाश एसडीएम को रखा गया था। जबकि रिजर्व अधिवक्ता में हुसैन बारिश, अजय कुमार पांडेय को रखा गया था। एक हेल्प डेस्क बनाया गया था। जिसमें लोगों को मदद के लिए अधिवक्ता उत्तम कुमार पीएलभी मुनेश्वर राम को लगाया गया था।

गृह विज्ञान विभाग द्वारा पोषण अभियान कार्यक्रम का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

छतरपुर(पलामू) : जीसीपीए कॉलेज में गृह विज्ञान विभाग द्वारा पोषण अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रभारी प्राचार्य राजकिशोर लाल ने की। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों को पोषण के महत्व और उसके लाभों के बारे में बताया गया। कार्यक्रम के दौरान, उपस्थित शिक्षकों ने विद्यार्थियों को समझाया कि पोषण युक्त भोजन से शरीर को कितनी ऊर्जा और ताकत मिलती है और पोषण रहित भोजन से कैसे स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। विद्यार्थियों को स्वस्थ रहने के लिए संतुलित आहार लेने और नियमित व्यायाम करने की सलाह दी गई। इस अवसर पर प्रभारी प्राचार्य राजकिशोर लाल ने कहा,₹पोषण हमारे शरीर के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमें अपने आहार में पोषण युक्त खाद्य पदार्थों को शामिल करना चाहिए और पोषनरहित भोजन से बचना चाहिए। गृह विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो सुनीता कुजूर ने बताया कि इस आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों को पोषण के महत्व के बारे में जागरूक करना और उन्हें स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना था। उन्होंने कई स्लोगन के बारे में विद्यार्थियों को विस्तृत जानकारी दी।

हेमन्त सरकार सहायक अध्यापकों को दिए अपने वादे से मुकर गई : ऋषिकांत तिवारी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पलामू : राज्य की जेएमएम नित हेमन्त सरकार पूरी तरह से सहायक अध्यापकों को छलने का कार्य किया है। हेमन्त सरकार चुनाव पूर्व जो 3 माह में वेतनमान देने की घोषणा की वह 5 वर्षों में भी पूरा नहीं कर सकी, सिर्फ चुनावी घोषणा बन कर रह गई वेतनमान का वादा। इससे सहायक अध्यापकों में से घोर निराशा के साथ आक्रोश है। जिस सरकार को बनाने में पारा शिक्षकों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई अंततः इस सरकार से भी निराशा ही हाथ लगी। 5 सालों तक सरकार सिर्फ आश्वासन और वार्ता -वार्ता का खेल खेल रही है, यदि तत्काल वार्ता के लिए झारखण्ड राज्य सफल सह प्रशिक्षित सहायक अध्यापक संघ को आमंत्रित नही करती है तो आंदोलन के लिए बाध्य होंगे। उक्त बातें संघ के प्रदेश अध्यक्ष ऋषिकांत

तिवारी ने कही। तिवारी ने यह भी कहा कि सहायक अध्यापक सेवासर्त नियमावली- 2021 में वर्णित अनुकम्पा, इपीएफ को भी आज तक सरकार लागू नहीं कर पाई। दिन प्रतिदिन हमारे एक-एक सहायक अध्यापक बिना किसी सरकारी सुविधा लाभ के रिटायर एवं मृत हो रहे हैं। उनका परिवार बेसहारा और बेघर हो चूका है। परन्तु सरकार चुप्पी साधी हुई है। जो सरकार अपनी हर चुनावी सभा में पारा शिक्षकों को 3 माह मे वेतनमान देने की बात करती थी,अब वह उस वादे से पूरी तरह मुकर गयी है। कहती है कि पारा शिक्षकों को वेतनमान नहीं दिया जा सकता है। निश्चित तौर पर इस वादा खिलाफी का जवाब आगामी विधानसभा चुनाव में 62 हजार सहायक अध्यापको के द्वारा दिया जायेगा। आज तक किसी सरकार ने पारा शिक्षकों का पैसा काटने का कार्य नहीं किया था। परंतु हेमन्त सरकार ने सहायक अध्यापकों का मानदेय की कटौती कर इतिहास बना दिया।

श्री ठाकुर सत्संग केंद्र का निर्माण कार्य शुरू

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

छतरपुर (पलामू) : पलामू जिले के छतरपुर में करीब पच्चीस वर्षों से संचालित श्री श्री ठाकुर अनुकूल चंद्र जी का सत्संग केंद्र का निर्माण कार्य शुरू किया गया । जानकारी देते हुए सह प्रति ऋत्विक सह संचालक नागेंद्र प्रसाद सिन्हा ने बताया की ₹छतरपुर स्थित सोनार मुहल्ला में सैकड़ों गुरूभाई - बहनों के मदद से सत्संग केंद्र निर्माण कार्य की शुरूआत की गई है , उन्होंने बताया की पिछले करीब पच्चीस वर्षों से छतरपुर में श्री श्री ठाकुर जी का सत्संग संचालित किया जा रहा है और तब से अब तक छतरपुर में हजारों लोगो ने ठाकुर जी का दीक्षा ग्रहण किया और उनके बताए मार्ग पर चल कर बच और बढ़ रहे है , लेकिन अब तक स्थाई सत्संग केंद्र का निर्माण नही हो पाया था परंतु अब सभी के सहयोग से यह संभव हो पा रहा है । इस पुनीत कार्य में छतरपुर सहित पटना , डाल्टनगंज, सुल्तानी में रह रहे गुरुभाइयों ने भी आर्थिक सहयोग किया है। बताते चले की देवघर स्थित सत्संग संस्था के संस्थापक ठाकुर अनुकुलचंद्र जी का जन्म ब्रिटिश भारत के पबना जिले के हिमायतपुर गाँव में हुआ था, जो अब बांग्लादेश का हिस्सा है। शिवचंद्र चक्रवर्ती और मनमोहिनी देवी उनके पिता और माता थे। कलकत्ता में एक युवा मेडिकल छात्र के रूप में, अनुकुलचंद्र ने 1911 में झुग्गीवासियों की सेवा और उपचार करना शुरू किया। छह साल के अध्ययन के बाद, वे वापस हिमायतपुर आ गए और चिकित्सा का अभ्यास करने लगे। 1913 में, अनुकुलचंद्र को उनकी मां ने आध्यात्मिक रूप से दीक्षित किया। दीक्षा लेने के बाद वे अपने मित्रों और साथियों सहित तीव्र कीर्तन करने लगे। कीर्तन के दौरान, वह अक्सर समाधि की स्थिति में चला जाता था, बेहोश होकर जमीन पर गिर जाता था और उसी स्थिति में संदेश बोलता था। कीर्तन के दौरान उनका ध्यान में जाना, समाधि के दौरान पवित्र संदेश देना और उनके आसपास के लोगों की भक्ति कई और लोगों को आकर्षित करने लगी। जैसे-जैसे उनके गाँव में बहुत से लोग उनसे मिलने आए, स्थायी रूप से बसने लगे, धीरे-धीरे उनके गाँव के घर को एक आश्रम में बदल दिया गया। अनुकुलचंद्र चक्रवर्ती की एक डॉक्टर के रूप में लोगों की सेवा, समाधि की अवस्था में अन्य भाषाओं में बोलने के साथ-साथ उनके अनुयायियों को उनकी सलाह और मार्गदर्शन ने उन्हें एक धार्मिक नेता के रूप में एक स्थान हासिल करने में मदद की। ठाकुर अनुकुलचंद्र के व्यक्तित्व, जीवन और शिक्षाओं ने विज्ञान और अध्यात्म, व्यक्तिगत प्रतिज्ञान और आत्म-परिवर्तन, व्यक्तिवाद और सामाजिक प्रतिबद्धता के बीच मध्यस्थता की और उन्हें भारतीय धार्मिक परंपरा के भविष्यवक्ताओं या अवतारों की श्रेणी में रखा। उनके भक्त उन्हें युग पुरुषोत्तम या आधुनिक युग के पैगंबर के रूप में संबोधित करते हैं। और वर्तमान में देश विदेश में इनके अनुयायी की संख्या लाखों में है ।

देश के जीडीपी में महिलाओं का अहम योगदान होता है : केएन त्रिपाठी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पलामू : प्रतिज्ञा यात्रा का कारवां उन्नीसवें दिन मेदिनीनगर नगर निगम क्षेत्र में शामिल हुए क्षेत्रों निमिया, बैरिया, जोड़, खनवां, पोखराहा, खैराठ, बारालोटा एवं गुरियाही में पहुंचा। आपको ज्ञात होगा कि 10 सितम्बर से 01 अक्टूबर तक झारखंड सरकार के पूर्व मंत्री के० एन० त्रिपाठी के द्वारा प्रतिज्ञा यात्रा का शुभारंभ सिंगरा ग्राम से प्रारम्भ हुआ था जो कि आज दिनांक 28 सितम्बर दिन शनिवार को उन्नीसवें दिन मेदिनीनगर नगर निगम क्षेत्र के निमिया होते हुए बैरिया, जोड़, खनवां से पोखराहा, खैराठ, बारालोटा एवं गुरियाही के क्षेत्रों में चलेगा। प्रतिज्ञा यात्रा के दौरान पूर्व मंत्री के० एन० त्रिपाठी ने जनता को दिया भरोसा, जनता को दिए गए वचनों से हूं वचनबद्ध, अवश्य करूंगा पूरा । आप सब को

मालूम है कि झारखंड के पूर्व मंत्री कृष्णानंद त्रिपाठी जनता को दिए गए पांच प्रतिज्ञा को लेकर प्रतिज्ञा यात्रा का आरंभ किया है। वह जहां भी जा रहे हैं। जनता के द्वारा उन्हें अभूतपूर्व स्वागत किया जा रहा है। उन्होने कहा कि उन्होंने पांच प्रतिज्ञा जनता से किया है, उसे हर हाल में पूरा करूंगा। पूर्व मंत्री ने कहा कि मैं जनता को दिए गए वादों से वचनबद्ध हूं। उसे अवश्य पूरा करूंगा। पूर्व मंत्री के एन त्रिपाठी ने चैनपुर प्रखंड के विभिन्न पंचायतों के विभिन्नगांवों का दौरा किया।

बाल विवाह रोकने में पीएलभी अग्रणी भूमिका निभाएं : प्रणय वरेनयं

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

मेदिनीनगर (पलामू) : बाल विवाह रोकथाम में पीएलभी का भूमिका महत्वपूर्ण हैं। पी एलभी का कार्य कानूनों और अन्य उपलब्ध कल्याणकारी उपायों और कानूनो में बुनियादी ज्ञान के साथ ये अपने आसपास के लोगों को सहायता करने में सक्षम होंगे। पीएलभी से न केवल कानूनों और कानूनी प्रणाली पर जागरूकता प्रदान की अपेक्षा की जाती है। बल्कि उन्हें बाल विवाह, बाल श्रम, अशिक्षा, अंधविश्वास मिटाने में भी सहायक सिद्ध होंगे। उक्त बातें सी डब्लू सी के चेयरपर्सन प्रणय कुमार वरेनयं ने कही। वे शनिवार को जिला व्यवहार न्यायालय परिसर में डालसा के नेतृत्व में नव चयनित 155 पारा लीगल वॉलिंटियर्स के ओरियंटेशन ट्रेनिंग कार्यक्रम में चौथे दिन बतौर रिसोर्स पर्सन संबोधित कर रहे थे। उन्होंने पारा लीगल वोलेंटियर्स के ओरिएंटेशन और कार्यक्रम के बारे में पूरी

जानकारी दी। उन्होंने कहा कि तमाम प्रयासों के बाद भी अभी भी हमारे देश में 35% बाल विवाह हो रहे हैं। ऐसे में समाज व देश को बाल विवाह मुक्त बनाने में पीएलभी की भूमिका अहम है। उन्होंने बाल विवाह निषेध अधिनियम 2006 के विभिन्न प्रावधानों का उल्लेख करते हुए विभिन्न टोल फ्री नंबरों की जानकारी प्रदान की। इस मौके पर लीगल एड डिफेंस कार्उसिल के डिप्टी चीफ संतोष कुमार पांडेय ने पीएलभी को अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों का भी निर्वहन के बारे में लोगों को जागरूक करने की बात कही। उन्होंने कहा कि पीएलभी खुद को किसी भी रूप में कमजोर ना समझे वे न्यायिक प्रक्रिया के अभिन्न अंग हैं। उनके सेवा भाव से समाज के कमजोर तबके को सहज और सुलभ न्याय प्राप्त हो सकता है। उन्होंने कहा कि न्याय तक पहुंच में आने वाले बाधाओ को दूर करने का काम करेंगे। साथ ही आम लोगों और कानूनी सेवा संस्थाओं के बीच की खाई को पाटने में मध्यस्थ के रूप में कार्य करेंगे। उन्होंने कहा कि पीएलभी का कार्य कानून और कल्याणकारी उपाय और कानून के बुनियादी ज्ञान के साथ अपने आसपास के लोगों को सहायता करना भी है। उन्होंने कहा कि पीएलभी कानून और कानूनी प्रणाली को बेहतर बनाने में मदद की अपेक्षा की जाती है बल्कि उन्हें पक्षकारो के बीच सरल विवाद के स्रोत पर भी परामर्श देने और महत्वपूर्ण ढंग से निपटने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि पीएलभी अगर विवाद को निपटाने में नाकामयाब होते हैं तो उन्हें जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव की सहायता से मामले का निर्णय करने में सहयोग देना चाहिए । उन्होंने कहा कि पारा लीगल वॉलिंटियर्स लोगों को विशेष कर समाज के कमजोर वर्ग के लोगों को शिक्षित करेंगे ताकि वह अपना अधिकार और कर्तव्य के प्रति जागरूक हो सके तथा कानून के अनुसार कर्तव्य और दायित्वों का निर्वहन कर सके। प्रशिक्षण कार्यक्रम में बाल कल्याण समिति के सदस्य धीरेंद्र किशोर व सुधा गुप्ता ने भी सी डब्लू सी के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस मौके पर शैलेंद्र कुमार पांडेय, अखिलेश चौबे, इंदु भगत, अनीता मिंज, उर्मिला देवी, सुखाडी मिंज, मुकेश मुंडा, शैल शिखा, बसंती देवी, संगम स्वराज, निक्कू पाठक, ऋषि कुमार, महेंद्र नाथ सिंह, प्रमोद शुक्ला समेत सैकड़ो पारा लीगल वोलेंटियर उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

महिला और विकलांग बोगियों में अनाधिकृत यात्रा करने वाले 13 लोग गिरफ्तार

हुसैनाबाद(पलामू) : रेलवे सुरक्षा बल पोस्ट जपला के अधिकारियों और जवानों ने ट्रेन के महिला बोगी, विकलांग बोगी में अनाधिकृत रूप से यात्रा करने वाले व्यक्तियों के खिलाफ 27 सितंबर को एक विशेष अभियान चलाया। इसके साथ ही, स्टेशन परिसर में अनाधिकृत रूप से घूमने वाले व्यक्तियों को भी निशाने पर लिया गया। इस अभियान में कुल 13 लोगों को गिरफ्तार किया गया और उन्हें डाल्टेनगंज न्यायिक हिरासत में भेजा गया। गिरफ्तार व्यक्तियों पर रेल अधिनियम की धारा-162 के तहत 4 मामले, धारा -155 के तहत 3 मामले और धारा -147 के तहत 6 मामले दर्ज किए गए। आरपीएफ द्वारा यह अभियान सुरक्षा व्यवस्था को सख्त करने और ट्रेन यात्रियों की सुविधाओं को सुरक्षित रखने के लिए चलाया गया। इससे पहले भी इसी प्रकार के मामलों में कई अनाधिकृत यात्रियों को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा जा चुका है। आरपीएफ का यह अभियान यात्रियों के लिए एक चेतावनी के रूप में देखा जा रहा है कि अनाधिकृत गतिविधियों में संलिप्त पाए जाने पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

भगत सिंह जैसे रियल सेलिब्रेटी को आदर्श मानें देश के छात्र-युवा : रूचिर तिवारी

मेदिनीनगर (पलामू) : भगत सिंह और उसके सपनों के भारत पर युवा छात्र संवाद कार्यक्रम किया गया कार्यक्रम की अध्यक्षता अखिल भारतीय नौजवान संघ के जिला सचिव अभय कुमार भूइंया ने किया एवं संचालन नौजवान संघ के उपाध्यक्ष आलोक कुमार तिवारी ने किया। मौके पर अखिल भारतीय नौजवान संघ के झारखंड राज्य कन्वभेनर रुचिर कुमार तिवारी ने कहा कि भगत सिंह व्यक्ति नहीं विचार थे और आज भी उनके विचार प्रासंगिक है भगत सिंह ने पार्लियामेंट में स्मोक बम फेक कर गूंगे बहरे अंग्रेजों को जागाने का काम किया और देश को आजादी मिली आज भी देश के युवा छात्र नौजवानों को अपने जनप्रतिनिधियों को जगाने की आवश्यकता है साथ ही साथ युवा जो आजकल के फिल्मी दुनिया के सेलिब्रिटी को फॉलो कर रहे हैं उनके दीवाने हो रहे हैं जो विज्ञापन के माध्यम से नशीली चीज खाने एवं ऑनलाइन गेम खेलने का आदत युवाओं में पैदा कर रहे हैं ऐसे रिल सेलिब्रिटी को अपना फॉलोअर्स ना मानकर भगत सिंह जैसे रियल सेलिब्रिटी को आज के युवा अपना फॉलोअर्स बनाएं उनके बताए हुए मार्गो एवं पदचिन्हों पर चलें तभी समाज का एवं देश का विकास होगा। मौके पर अधिवक्ता संजय प्रसाद मेहता ने भगत सिंह के विचारों पर प्रकाश डाला और कहा कि 23 साल की उम्र में भी भगत सिंह ने जो अपने विचारों से हिंदुस्तान ही नहीं दुनिया के नौजवानों को अपने और आकर्षित किया जरूरत है आज उनके विचारों को अपनाने की। मौके पर अभय कुमार भूइंया, प्रेमचंद तिवारी, अश्वनी त्रिपाठी, श्रद्धांजलि तिवारी, रामजीत कुमार राम, रंजीत कुमार, पवित्र पांडे, प्रभु कुमार शर्मा, रविंद्र पासवान, सोहेल अख्तर, मृत्युंजय तिवारी, चंद्रशेखर तिवारी, शहीद कई लोगों ने अपने विचार व्यक्त किया और भगत सिंह के पद चोन पर चलने का संकल्प लिया।

झारखंड राज्य आजीविका ऑल कैडर संघ की प्रखंड स्तरीय कमेटी हुआ विस्तार

नावाबाजार (पलामू) : कंडा पंचायत सचिवालय में शनिवार को नावा बाजार प्रखंड स्तरीय झारखंड राज्य आजीविका ऑल कैडर संघ का बैठक किया गया। बैठक में तुकबेरा एवं इटको क्लस्टर के सभी एक्टीव एवं सक्रिय महिला शामिल हुए। बैठक में निर्णय लिया गया कि झारखंड राज्य आजीविका ऑल कैडर संघ का प्रखंड स्तरीय कमेटी का विस्तार किया जाए। जहां उपस्थित महिलाओं ने सहमति जताई। इसके साथ कमेटी का विस्तार किया गया। जहां सर्व सहमति से नावा बाजार प्रखंड के झारखंड राज्य आजीविका ऑल कैडर संघ का अध्यक्ष किरण देवी, उपाध्यक्ष सरिता कुमारी,सचिव काजल सिंह, मीना देवी,उपसचिव पूनम देवी, कोषाध्यक्ष कलिंदा कुमारी के पदाधिकारी के रूप में गठन करते हुए कमेटी का विस्तार किया गया। मौके पर सरिता देवी,पुष्पा देवी, गीता देवी, प्रमिला देवी, अनीता देवी, नीलम देवी, सोना देवी, गीता कुमारी, मीना देवी, पुष्पा देवी, रूबी देवी, रेणु देवी, काजल देवी, कलिंदा कुमारी, कविता देवी, किरण देवी, ममता देवी, आरती देवी, रूबी देवी, रेखा देवी समेत काफी संख्या में नावा बाजार प्रखंड के सक्रिय महिला शामिल थे।

जेबीकेएसएस के नेताओं ने दशकर्म के लिए सूखा राशन देकर किया सहयोग

अनगड़ा : झारखंडी भाषा खाती यान संघर्ष समिति /जेएलकेएम पार्टी ने दस कर्म हेतु पार्टी के केन्द्रीय उपाध्यक्ष मार्शल महतो, केन्द्रीय संगठन महासचिव सूरज नारायण महतो के सौजन्य से प्रखंड अंतर्गत राजाडेरा पंचायत के रूपरू निवासी सहदेव महतो की पुत्री रेखा कुमारी का गंभीर बीमारी की वजह से उनका देहांत हो गया। इस दुख की घड़ी मे जेएलकेएम परिवार खड़ा होकर उसके दसकर्म के लिए सुखा राशन दिया गया कमौके पर प्रखंड अध्यक्ष सुधांशु महतो, प्रखण्ड सचिव जितवाहन महतो उर्फ मंटू, प्रखंड युवा मोर्चा सचिव रूपेश महतो, गौतम चौधरी, मोहर, फूलचंद, कोसिला देवी उपस्थित हुए।

भाजपा की 30 सितम्बर को परिवर्तन संकल्प यात्रा तैयारी को लेकर हुई बैठक

अनगड़ा : भारतीय जनता पार्टी खिजरी विधानसभा क्षेत्र अंगड़ा प्रखंड में एक अहम बैठक मंडल अध्यक्ष सुनील महतो की अध्यक्षता में बैठक रखी गई बैठक में विशेष रूप से 30 सितंबर को होने वाले परिवर्तन यात्रा को लेकर विचार विमर्श किया गया। भारी संख्या में लोगो को पहुंचने का आह्वान किया गया। मौके पर पूर्व विधायक रामकुमार पहान ओ बी सी मोर्चा जिला अध्यक्ष नरेश साहू रामनाथ महतो राजू प्रामाणिक घने नाथ महतो राजेन्द्र महतो आदि शामिल थे।

एक नजर

प्रखंड स्तरीय पोषण माह कार्यक्रम का हुआ आयोजन

जमशेदपुर : शनिवार को बहरागोड़ा प्रखंड सभागार में मानसी प्लस परियोजना द्वारा प्रखंड स्तरीय पोषण माह कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसकी शुरूआत अंचल पदाधिकारी द्वारा हरी झंडी दिखाकर पोषण अभियान रथ को रवाना किया गया। उसके पश्चात मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों को पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया गया। वहीं अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मानसी प्लस की प्रखंड समन्वयक संजू कुमारी नन्दी ने मानसी प्लस परियोजना का उद्देश्य के साथ पोषण माह अभियान की पूरी जानकारी दी .अंचल अधिकारी ने कहा कि बच्चों को भोजन में सभी प्रकार की पोषक तत्व मौजूद रहने वाला भोजन खिलाना है। पर्याप्त पोषक तत्व से ही शरीर को ऊर्जा, शरीर का निर्माण होता है। उससे रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और बीमारी से बचाता है। इसलिए कहा जाता है की सही पोषण से देश रोशन होता है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों ने 26 बच्चों का अन्नप्राशन, गोदभराई एवं हेल्दी बेबी को पुरस्कृत किया। इस मौके पर सेविका, सहिया एवं पूरा मानसी परिवार उपस्थित था।

मानगो में आवारा कुत्तों का आतंक, चार को किया जख्मी

जमशेदपुर : मानगो नगर निगम क्षेत्र में इन दिनों कुत्तों का आतंक बढ़ गया है। आए दिन किसी न किसी को कुत्ते काट रहे हैं। शुक्रवार की शाम गोकुलनगर में अपने घर से ट्यूशन जा रही अनिश्री नामक आठ वर्षीय बच्ची को दो कुत्तों ने घेरकर हमला कर दिया। घटना के समय बच्ची की मां साथ में थी। उसके हल्ला करने पर अलग-बगल के लोग जुटे उसके बाद कुत्ते भाग। घटना के बाद बच्ची ट्यूशन नहीं जाकर अपने घर आयी। जहां से उसकी मां चिकित्सक के पास ले गई। वहीं शनिवार की सुबह बच्चों को स्कूल छोड़ने जा रहे तीन लोगों पर कुत्तों ने हमला किया। तीनों व्यक्तियों ने किसी तरह भागकर कुत्तों से अपना पीछा छुड़ाया। दूसरी ओर मानगो नगर निगम क्षेत्र में कुत्तों का आतंक बढ़ने पर भाजपा नेता विकास सिंह ने नगर निगम की लापरवाही करार दिया। उन्होंने कहा कि आवार कुत्तों पर नकेल कसने के लिए कई बार लिखित तौर पर शिकायत की गई। इस दिशा में कार्रवाई का आश्वासन भी दिया गया। लेकिन कार्रवाई नहीं हुई। उन्होंने कहा कि निगम में बगैर हंगामा, तालाबंदी के कुछ काम नहीं होता है। जल्द लोगों को गोलबंद करके उपायुक्त कार्यालय पर प्रदर्शन किया जाएगा।

एनएच पर उड़ती धूल से स्थानीय लोग तथा राहगीर परेशान

जमशेदपुर : बहरागोड़ा प्रखंड क्षेत्र में अवस्थित नेशनल हाईवे तीन राज्यों की संगम स्थल के साथ-साथ एनएच 18 तथा 49 का मिलन स्थल भी है। यहां एनएच के बाईपास सड़क पर गड्ढे में विगत दिनों केंद्रिय मंत्री शिवराज सिंह चौहान के वाहन फंस जाने के बाद संबंधित विभाग की ओर से स्लैग और पत्थर से समतलीकरण का कार्य हो रहा है। लेकिन बारिश के कारण बाईपास तथा मुख्य सड़क पर कीचड़ भर गया था। अब धूप निकलते ही कीचड़ धूल में परिणत हो गया है और वाहनों का परिचालन से धूल उड़ रही है। जिससे एनएच के आसपास में रहने वाले स्थानीय लोग एवं राहगीरों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

दुर्गा पूजा के लेकर हुई शांति समिति की बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

ईचागढ़ : सरायकेला खरसवां जिला के चांडिल अनुमंडल के तिरूलडीह थाना क्षेत्र में होने वाली शारदीय नवरात्रि दुर्गापूजा को लेकर शुक्रवार को तिरुलडीह थाना क्षेत्र के दुर्गा पूजा कमिटी के साथ शांति समिति की बैठक तिरुलडीह थाना परिसर में थाना प्रभारी आलम चांद महतो की अध्यक्षता में संपन्न हुई। उक्त बैठक में बिजली, स्वास्थ्य, पानी, साफ-सफाई, यातायात नियंत्रण आदि की जानकारी दी गई। थाना प्रभारी ने सरकार की ओर से जारी गाइड लाइन से अवगत कराते हुए कहा कि दुर्गा पूजा समिति को शांति व्यवस्था बनाए रखने तथा पंडाल में सीसीटीवी की व्यवस्था को लेकर विशेष निर्देश दिए एवं साथ में अग्निशमन की भी व्यवस्था हर पंडाल पर किया जाने को कहा। सीसीटीवी लगाए जाने से किसी भी प्रकार की अक्रीय घटना करने से पहले आदमी के मन में संकोच पैदा हो जाए और घटना होने से बचा जा सके। उन्होंने कहा कि पूजा समिति को इस बात का ख्याल रखना होगा कि पूजा स्थल पर पंडाल व भीड़भाड़ वाले स्थान पर श्रद्धालुओं के आने और जाने के लिए उचित व्यवस्था होनी चाहिए। वहीं सभी से अपील करते हुए कहा की विशेष कर बाइक स्टंट करने वाले वैसे युवक पर विशेष ध्यान रहेगा तथा उनके माता पिता भी इस तरह की कृत्य के लिए बच्चे पर विशेष ध्यान रखें यदि कोई भी युवक इस तरह की बाईक स्टंड के तहत पकड़ा जाता है, तो उनके ऊपर व्हीकल एक्ट की धारा के तहत जुमार्ना किया जाएगा साथ में उन्होंने यह भी कहा की सोशल मीडिया पर किसी भी प्रकार की अफवाह फेलाना की प्रयास न करें यदि किसी भी प्रकार की घटना सोशल मीडिया पर आती है तो इसकी सूचना थाना प्रभारी या प्रखंड विकास पदाधिकारी को दे,घटना की पुष्टि के बाद ही उसको आगे फॉरवर्ड करें। वहीं सदस्यों द्वारा दिए गए सुझाव के आधार पर थाना प्रभारी ने सभी समस्याओं को सूचीबद्ध करते हुए निदान हेतु आश्वस्त किए। बैठक में जिला परिषद उपाध्यक्ष मधुश्री महतो, सी आई कुकडू प्रखण्ड, कुकडू प्रखण्ड के उप प्रमुख इकराम अंसार,तिरुलडीह पंचायत के मुखिया सुधीर सिंह, चौड़ा मुखिया रामबालक सिंह मुंडा, ईचाडीह पंचायत के मुखिया चित्तरंजन सिंह मुंडा सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि, दुगार्पूजा समिति के अध्यक्ष व सचिव सहित सैकड़ों गणमान्य व्यक्तियों ने हिस्सा लिया।

संक्षिप्त खबरें

दुष्कर्म के आरोपी को पुलिस ने भेजा जेल

साहिबगंज : जिला अंर्तगत बरहेट थाना क्षेत्र के महुवाटांड गांव में दुष्कर्म करने के मामले में फरार आरोपी को गिरफ्तारी कर पुलिस ने साहिबगंज जेल भेज दिया। इस संबंध में थाना प्रभारी पवन कुमार ने बताया कि 2019 में गांव में एक नाबालिक को दुष्कर्म करने के मामले में पूर्व में कांड संख्या 102/19 प्राथमिकी दर्ज था। वही पूर्व में साहिबगंज न्यायालय द्वारा इश्तिहार निर्गत हुआ था, आरोपी के घर में इश्तहार चिपकर जानकारी दिया गया लेकिन न्यायालय में उपस्थित नहीं हुए। पुनः न्यायालय के आदेश पर गांव पहुंचकर आरोपी को गिरफ्तार कर साहेबगंज जेल भेज दिया गया है।

थाना परिसर में दुर्गा पूजा को लेकर शांति समिति की हुई बैठक

साहिबगंज : जिला अंर्तगत बरहेट थाना परिसर में शनिवार को अंचल अधिकारी चोनाराम हेम्बरम की अध्यक्षता में शांति समिति की बैठक आहूत की गई। बैठक में बोरियों प्रभाग इंस्पेक्टर नुनुदेव राय, थाना प्रभारी पवन कुमार क्षेत्र के दुर्गा पूजा समिति के सदस्य, गणमान्य लोग उपस्थित हुए। इस दौरान बैठक में उपस्थित लोगों को सीओ ने संबोधित करते हुए कहा कि शांतिपूर्ण एवं आपसी भाईचारे के साथ त्योहार मनाए। किसी प्रकार के अप्रिय घटना हो थाने को तुरंत सूचना दें। थाना प्रभारी पवन कुमार ने कहा कि पूजा में शरारती तत्व पर नजर रखें और पुलिस को सूचना दे। दुर्गा पूजा शांति ढंग से मनाने को लेकर निर्णय लिया गया। आगामी पूजा को लेकर डीजे नहीं बजाने की अपील की और कहां की हाई कोर्ट के नियम का पालन करें। जानकारी देते हुए बताया कि व्हाट्सएप, फेसबुक पर भरम फैलाने वाले खबरों को फॉरवर्ड करने से बचें। बैठक में उपस्थित लोगों को त्योहारों के बधाई देते हुए कहां की पर्व त्यौहार हमारे संस्कृतिक के धरोहर एवं आस्था का प्रतीक है और शांतिपूर्ण एवं आपसी भाईचारे के साथ त्योहार मनाए। वही मौके पर उत्पल दत्त, खगेंद्र साह, अजय भगत, धीरज मोदी, रूपक मित्र, चंद्रशेखर, के अलावा अन्य मौजूद थे।

डॉ अनिल कुमार बने आरएस वाई एन जर्नल के एडिटोरियल बोर्ड के मेंबर

साहिबगंज : साहिबगंज महाविद्यालय, साहिबगंज के रसायन शास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ अनिल कुमार आर एस वाई एन जर्नल के एडिटोरियल बोर्ड मेंबर चुने जाने पर प्राचार्य प्रो एस आर आई रिजवी ने बधाई दी। प्राचार्य ने कहा डॉ अनिल कुमार की उपलब्धि उन्हें नए आयाम तक पहुंचाने का एक रास्ता है और केमिकल साइंस जर्नल के एक नई दिशा मिलेगी डॉ अनिल कुमार ने कहा आर एस वाई एन जर्नल के केमिकल साइंस के शोधार्थी एवं अन्य विज्ञान संकाय के छात्र अपना शोध पत्र प्रकाशित कर सकते हैं। रिसर्च के क्षेत्र में डॉ अनिल कुमार को कई अन्य अवार्ड से पहले भी नवाजा गया है यह उनकी दुर्लक्षिता का परिणाम है आने वाले समय में एक नई मुकाम को छुएंगे। मौके पर डॉ ध्रुव ज्योति सिंह, डॉ चंद्रशेखर, डॉ राधा, डॉ मुंडा, डॉ राजीव ने डॉ अनिल कुमार को शुभकामनाएं दी। साथ ही साथ डॉ कुलदीप सिंह रसायन शास्त्र विभाग एमिटी विश्वविद्यालय, ग्वालियर ने एवं डॉ राजेश सिंह रसायन शास्त्र विभागाध्यक्ष, छपरा विश्वविद्यालय ने भी डॉ कुमार को आर एस वाई एन जर्नल के एडिटोरियल बोर्ड मेंबर बनने पर बधाई दी।

प्रधानमंत्री के मन की बात कार्यक्रम को लेकर कमलपुर मंडल में हुई बैठक

पटमदा : कमलपुर मंडल में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम और चुनाव को लेकर बूथ कमिटी के पदाधिकारियों के साथ कमलपुर मंडल कार्यालय में भाजपा नेता हलधर नारायण साह,सुनील सिंह,प्रदीप महतो, प्रदीप बेसरा की उपस्थिति में बैठक लिया गया जिसमे तीनो मंडलों कमलपुर, पटमदा और बोड़ाम मंडल में कार्यकताओं के साथ बैठक किया गया बैठक में जिला उपाध्यक्ष प्रदीप कुमार महतो,प्रदीप बेसरा,मंडल अध्यक्ष प्रधान महतो,संजय प्रमाणिक,मलिंद्रा मिश्रा,सदानंद महतो सहित काफी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे।

बोड़ाम के कुटिमाकुली में आग से खाक हुआ फूस का घर

जमशेदपुर : बोड़ाम थाना क्षेत्र के बोंटा पंचायत अंतर्गत कुटिमाकुली गांव निवासी कार्तिक हांसदा के फूस के मकान में शुक्रवार की देर रात अज्ञात कारणों से आग लग गई। जिसके कारण उसकी फूस का मकान जलकर स्वाहा हो गया। साथ ही घर में रखा धान, चावल, वस्त्र एवं नकद राशि समेत सभी जरूरी सामान जलकर भी खाक हो गए .हादसे के समय कार्तिक के बुजुर्ग माता-पिता थे घर पर गांव के उमेश चंद्र महतो ने बताया कि कार्तिक हांसदा पत्नी व बच्चों के साथ ससुराल गया हुआ है। घर में उसके बुजुर्ग माता-पिता ही थे। कार्तिक हांसदा के पिता मकर हांसदा के अनुसार वे लोग सोए हुए थे। उसी दौरान रात करीब तीन बजे कुछ ग्रामीणों ने शोर मचाना शुरू कर दिया, जिससे वे जाग गए। फिर देखा कि घर में लगी आग से सारा सामान धू-धू कर जल रहा है। किसी तरह घर से भागकर दोनों ने जान बचायी। उसके बाद ग्रामीणों ने कैनाल से मोटर पंप के सहारे पानी का छिड़काव किया जिससे आग पर काबू पाया जा सका लेकिन तब तक कुछ भी नहीं बचा। वाहन चालकों ने आगजनी की दी सूचना कुटिमाकुली गांव टाटा-पटमदा मुख्य सड़क के किनारे स्थित हैं।

गंगा नदी के बढ़ते जलस्तर को देखते हुए उपायुक्त ने दियारा क्षेत्र का किया निरीक्षण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहेबगंज : जिला में गंगा नदी के बढते जलस्तर को देखते हुए उपायुक्त ने दियारा क्षेत्र का निरीक्षण किया। गंगा नदी में बढ़ते जलस्तर को देखते हुए एवं कोशी नदी से 6,81,639 लाख क्यूसेक जलश्रय छोड़ा गया जिससे गंगा नदी में तीव्र गति से जलस्तर बढ़ेगा। जिला दंडाधिकारी- सह-उपायुक्त ने साहेबगंज प्रखंड अंतर्गत आज छोटा रामपुर दियारा, कारगिल दियारा, हरिप्रसाद का निरीक्षण किया गया। उपायुक्त ने निरीक्षण क्रम में दियारा क्षेत्र में रह रहे ग्रामीणों से बातचीत कर जानकारी ली एवं गंगा के बढते जलस्तर एवं कोशी नदी से जलश्रय से अवगत कराया व अपील किया गया कि जल्द दियारा क्षेत्र को छोड़ कर सुरक्षित स्थान पर शरण ले। उपायुक्त ने बताया कि जिला प्रशासन के द्वारा बाढ़ राहत के लिए हर समय तत्पर पर जिसमें जिला प्रशासन के द्वारा दियारा क्षेत्र के ग्रामीणों के लिए बोट की व्यवस्था की गई है एवं दियारा ग्रामीण को लाकर जिला प्रशासन द्वारा बाढ़ राहत शिविर में उन्हें शरण दिया जाएगा।दियारा क्षेत्र निरीक्षण के क्रम में उपायुक्त समेत वन प्रमंडल पदाधिकारी प्रबल गर्ग, अपर समाहर्ता गौतम भगत मौजूद थे।

जीवनपुर चेकनाका पर अवैध खनन का खेल जारी, कैमरे बंद, अधिकारी मौन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : जिला अंर्तगत बरहरवा प्रखण्ड क्षेत्र अन्तर्गत कोटालपोखर स्थित जीवनपुर चेकनाका पर अवैध खनन माफियाओं का बोलबाला है। इस नाके के माध्यम से रोजाना 200 से अधिक की संख्या में बिना माइनिंग चालान वाले अवैध वाहनों को बंगाल की ओर रवाना किया जाता हैं। नाके पर लगे सीसीटीवी कैमरे बंद पड़े हैं और संबंधित अधिकारी इस अवैध गतिविधि पर लगाम लगाने में नाकाम साबित हो रहे हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि अवैध खनन के कारण सड़कें क्षतिग्रस्त हो रही हैं, यातायात व्यवस्था चरमरा गई है और दुर्घटनाओं का खतरा भी बढ़ गया है। बताते चलें की कोटालपोखर स्थित जीवनपुर चेकनाका में सरकार के राजस्व की चोरी को रोकने हेतू बरहरवा अंचल अधिकारी द्वारा सीसीटीवी कैमरे लगाए गए थे। लेकिन बिना माइनिंग चालन वाले अवैध वाहनों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है और चेकनाका के कैमरे बंद कर दिए गए हैं। इससे साफ तौर पर पता चलता है की चेकनाका कर्मियों की संलिप्तता पर भी सवाल उठ रहे हैं की चेकनाका कर्मियों की उपस्थिति में आखिर कैसे बिना माइनिंग चालान वाले अवैध वाहनों को चेकनाका से पार कराया जा रहा है आखिर वो कौन लोग हैं जो इस अवैध धंधे को बेखौफ संचालित कर रहें हैं

पत्थर माफियाओं को ईडी व प्रशासन का डर नहीं

क्षेत्र में लगातार हो रहे अवैध खनन एवं अवैध परिवाहन को देखते हुऐ ऐसा लगता है की पत्थर माफियाओं को ईडी और प्रशासन का किसी तरह का कोई खौफ नहीं है वे बेखौफ होकर इस अवैध धंधे को संचालित कर रहे हैं।

अधिकारियों की चुप्पी

अधिकारी की इस उदासीनता से स्थानीय लोगों में काफी रोष है। लोग सवाल उठा रहे हैं कि आखिर अधिकारी इस मामले में इतना उदासीन क्यों है क्या अधिकारी अवैध खनन माफियाओं से मिलीभगत कर रहा है।

लोक अदालत में 5145 वादों का हुआ निष्पादन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : राष्ट्रीय लोक अदालत बिना किसी विलम्ब से अपने विवादों को सौहार्दपूर्ण ढंग से निपटाने के लिए एक मंच है जिसमें निर्णय पक्षकार आपसी सहमति से करते हैं। इससे आपस की लड़ाई वहीं खत्म हो जाती है। इसमें पक्षकार आपस में समझौता स्वयं करते हैं, न कि न्यायालय फैसला करती है। उपर्युक्त बातें आज व्यवहार न्यायालय परिसर स्थित लोक अदालत कक्ष में प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश -सह- जिला विधिक सेवा प्राधिकार के अध्यक्ष अखिल कुमार ने कहीं। उन्होंने आगे कहा कि जब पक्ष और विपक्ष आपस में केस लड़ते है, तो एक पक्ष जीतता है तो दूसरा पक्ष हारता है, लेकिन राष्ट्रीय लोक अदालत का निर्णय, अन्तिम निर्णय होता है, जिसकी अपील नहीं होती है और आपसी सुलह समझौते के आधार पर निर्णय होने पर दोनों पक्ष जीतते है। प्रभावित पक्षकारों को त्वरित एवं सुलभ न्याय प्रदान करने की दिशा में राष्ट्रीय लोक अदालत एक प्रभावशाली कदम है। इस राष्ट्रीय लोक अदालत में साहेबगंज अनुमंडल में कुल 5145 वादों का निस्तारण किया गया जिसकी समझौता राशि 10076781 रूपया है। राष्ट्रीय लोक अदालत का विधिवत उद्घाटन प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकार अखिल कुमार, प्रधान न्यायाधीश कुटुंब न्यायलय संजय कुमार उपाध्याय, आरक्षी अधीक्षक अमित कुमार सिंह, डीएफओ प्रबल गर्ग, जिला अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष प्रेमनाथ तिवारी सहित अन्य अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। प्राधिकार के सचिव विश्वनाथ भगत ने बताया कि राष्ट्रीय लोक अदालत में सात बेंचों के माध्यम से कोर्ट में लंबित, प्री-लिटिगेशन के मामले एवं अन्य सुल्हनीय मामलों का निस्तारण किया गया। लोक अदालत में जिला न्यायाधीश सह अपर सत्र न्यायाधीश प्रथम धीरज कुमार, सीजेएम धर्मेन्द्र कुमार, अग्रणी बैंक प्रबंधक सुधीर कुमार, अधिवक्ता रेणुका कुमारी आदि मौजूद थे।

दुर्गा पूजा को लेकर थाना में हुई शांति समिति की बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पटमदा : कमलपुर थाना में शनिवार को आगामी दुर्गा पूजा को लेकर शांति समिति की एक बैठक पटमदा बीडीओ पियुषा सलीना डोना मिंज की अध्यक्षता में संपन्न हुई।बैठक में कमलपुर थाना क्षेत्र में होने वाले दुर्गा पूजा पंडाल के सभी पदाधिकारी शामिल हुए। इस दौरान शांतिपूर्ण माहौल में दुर्गा पूजा मानने का निर्णय लिया गया। सभी सदस्य ने त्योहार के दौरान नशा मुक्ति रखने का प्रशासन से अपील की।वही कई गांवों से कई समस्याओं को भी बैठक के दौरान उठाया गया। बैठक में कमलपुर थाना प्रभारी दीपक ठाकुर ने बैठक में शामिल सभी सदस्यो से त्योहार के दौरान शांति बहाल करने की अपील की। बैठक में मुख्य रूप से बीडीओ पियुषा सलीना डोना मिंज, पार्षद खगेन चंद्र महतो,थाना प्रभारी दीपक ठाकुर, ग्राम प्रधान संदीप मिश्रा, प्रदीप महतो, नगेन गोप, विश्वनाथ माझी, सुभाष सिंह, मधुसूदन घोषाल,नारायण महतो सहित काफी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे।

7 करोड़ की लागत से बनने वाली सात सड़को का विधायक ने किया भूमिपूजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

ईचागढ़ : मुख्यमंत्री ग्राम सड़क सुदृढ़ीकरण योजना अंतर्गत स्वीकृत करीब 7 करोड़ रुपये कि लागत से चांडिल, कुकडू, ईचागढ़ व नीमडीह प्रखंड क्षेत्र में 7 सड़को का भूमिपूजन शनिवार को विधायक सविता महतो ने विधीवत शीलापट्ट अनावरण कर किया। इस दौरान विधायक ने कहा कि चांडिल प्रखंड क्षेत्र के एनएच 33 हारुडीह से आमड़ा कटिंग भाया भुईयाडीह तक 4.10 किमी सड़क का सुदृढ़ीकरण 218.650 लाख, सामुदायिक भवन गांगुडीह से सुकसारी पीडब्लूडी पथ भाया धातकीडीह तक 4.60 किमी सड़क का सुदृढ़ीकरण 139.195 लाख, ईचागढ़ प्रखंड के कैनाल कालीकरण पथ से बाकलतोड़ीया तक 4.30 किमी सड़क का सुदृढ़ीकरण 222.407 लाख, शहीद अजीत धनंजय चौक से बंगाल बॉर्डर तक 2.72 किमी सड़क का सुदृढ़ीकरण 150.708 लाख रुपये, बुरुडीह पीडब्लूडी पथ से सोभानदी भाया बड़ा लापांग तक 3.10 किमी सड़क का सुदृढ़ीकरण 114.418 लाख रुपये व दारुदा मोड़ से छोटालापांग तक 2.44 किमी सड़क का सुदृढ़ीकरण 71.04 लाख रुपये व नीमडीह प्रखंड में नीमडीह चालीयामा आरईओ रोड से टेंगाडीह तक 2.50 किमी सड़क का सुदृढ़ीकरण 74.310 लाख रुपये की लागत से किया जाएगा। उन्होंने कहा उक्त सड़क का निर्माण होने से ग्रामीणों को यातायात में काफी सोहलीयत होगी। विधायक ने कहा लोगो के मांग को देखते हुए सड़क का सुदृढ़ीकरण कराया जा रहा है। इस अवसर पर जिला परिषद सदस्य पिंकी लायेक, झामुमो नेता ओम प्रकाश लायेक, झामुमो केंद्रीय सदस्य काबलु महतो, मुखिया बुद्धेश्वर बेसरा, ग्राम प्रधान बोनू सिंह सरदार, प्रखंड अध्यक्ष कृष्णा किशोर महतो, अर्जुन सिंग मुंडा, राहुल वर्मा, निताई उरांव, अभय यादव, सपन सिंगदेव, राखोहरि सिंग मुंडा, किसुन किस्कु, इंद्रजित महतो, नवकिशोर हांसदा, युधिष्ठिर मांझी, परेश महतो, कित्तीवास महतो, रशिद अंसारी, सपन महतो समेत काफी संख्या में झामुमो कार्यकर्ता व ग्रामीण जनता उपस्थित थे।

56 साल बाद कोसी, 21 साल बाद गंडक में इतना पानी

6 लाख क्यूसेक पानी डिस्चार्ज, कई इलाकों में बाढ़ का खतरा, 12 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट

पटना। नेपाल के तराई और उत्तर बिहार में लगातार हो रही बारिश से राज्य के कई जिलों में बाढ़ का खतरा मंडराने लगा है। कोसी बराज से लगातार पानी छोड़ा जा रहा है। पानी के दबाव को देखते हुए बराज के सभी 56 फाटक खोले दिए गए हैं। कोसी बराज से 3 बजे तक 5.41 लाख क्यूसेक पानी डिस्चार्ज हो चुका है। नदी में इतना पानी 56 साल बाद आया है। यह 1968 में नदी के सबसे अधिक फ्लो से सिर्फ 1 लाख क्यूसेक कम है। वहीं वाल्मीकिनगर गंडक बराज से 3 लाख 39 हजार क्यूसेक पानी डिस्चार्ज हो रहा है, शाम तक 5 लाख 93 पहुंचने की संभावना जताई जा रही है। यहां 21 साल पहले इतना पानी आया था। यह 2003 के फ्लो लेवल से थोड़ा ही कम है। दोनों नदियों में पानी शुक्रवार को ही बढ़ गया। गंडक बराज से सुबह 1 बजे तक 4.32 लाख क्यूसेक पानी छोड़ा जा चुका है। कोसी और गंडक में पानी का फ्लो बढ़ने के बाद बिहार के 4 जिले सुपौल, सहरसा, मधुबनी और दरभंगा में बाढ़ का खतरा बढ़ गया है। हालात देख जल संसाधन विभाग के प्रधान सचिव संतोष कुमार मल्ल ने शुक्रवार को सभी अधिकारियों की छुट्टी अगले आदेश तक रद्द कर दी। दूसरी ओर मौसम विभाग ने बिहार के 12 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है। इनमें 5 जिलों में रेड और 7 जिलों में यलो अलर्ट है। इसके अलावा पटना समेत 13 जिलों में फ्लैश फ्लड की चेतावनी जारी की गई है। ये चेतावनी आपदा प्रबंधन विभाग की ओर से जारी की गई है। आपदा प्रबंधन विभाग ने इन जिलों के डीएम को कहा है कि अगले 24 घंटे अहम है। किसी तरह की भी स्थिति से निपटने के लिए सभी जरूरी तैयारी कर लें। संबंधित एजेंसियों को अलर्ट मोड पर रखें। मधुबनी में भारी बारिश और नेपाल से लगातार पानी छोड़े जाने के कारण कमला नदी उफान पर है। इसके सभी फाटक खोल दिए गए हैं, जिससे आसपास के इलाकों में बाढ़ का खतरा मंडराने लगा है। जिले की बड़ी आबादी अब बाढ़ की चपेट में है। कई घरों में बाढ़ का पानी आने से लोग सहमे हुए हैं। स्थानीय लोगों ने प्रशासन से ठोस कदम उठाने की मांग की है। किशनगंज के बहादुरगंज में कनकई नदी का जलस्तर बढ़ने के बाद रऊफ़ की टीम मौके पर पहुंची। टीम लोगों को नदी पार कराने में जुटी है सुपौल सदर प्रखंड के बलवा पंचायत के बाढ़ग्रस्त इलाके से लोग बाहर पलायन रहे हैं। कोसी तटबंध के भीतर बाढ़ की भयावह स्थिति को लेकर बच्चे-बुजुर्ग भी परेशान दिखे।

संक्षिप्त डायरी

लगातार हो रही बारिश के कारण केले की फसल बर्बाद

कटिहार। समेली प्रखंड के पूर्वी चांदपुर पंचायत के विषनीचक गांव में हो रही भारी बारिश और आंधी-तूफान के कारण केले की खेती करने वाले किसानों को बड़ा नुकसान हुआ है। बता दें की जिले में सैकड़ों एकड़ में लगी केले की फसल पूरी तरह बर्बाद हो गई है। जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति पर गहरा असर पड़ा है। किसान अवदेश कुमार साह, राजेंद्र साह, बिपिन साह, और कई अन्य किसानों ने बताया कि उन्होंने ब्याज पर पैसा लेकर 3-3 एकड़ में केले की फसल लगाई थी, जिसकी लागत लगभग 4 लाख रुपए आई थी। किसानों का कहना है कि त्योहारी सीजन में केले की अच्छी कीमत मिलने की उम्मीद थी, लेकिन प्राकृतिक आपदा के कारण अब लागत भी निकल पाना मुश्किल हो गया है। बाजार में केले की एक खानी की कीमत 300-400 रुपए मिलती थी, जिससे अच्छा मुनाफा हो सकता था, पर अब सारी उम्मीदें टूट चुकी हैं। किसानों ने जिला प्रशासन से अपील की है कि वे सही तरीके से सर्वे कराकर उन्हें उचित मुआवजा प्रदान करें ताकि उनकी स्थिति में सुधार हो सके और वे फिर से खेती करने लायक हो सकें। कृषि किसान समन्वयक रंजन पंडित, किसान सलाहकार शंभू कुमार मंडल, प्रखंड उप प्रमुख समेली प्रतिनिधि दिलीप कुमार साह सहित जनप्रतिनिधि ने केला के किसानों के खेतों का निरीक्षण किया है। वहीं जिला प्रशासन व कृषि विभाग को फसल क्षतिपूर्ति की रिपोर्ट सौंपने की बात कही है।

गोलीबारी से घायल ग्रामीण चिकित्सक की मौत, गुस्साए लोगों ने लगाया जाम

समस्तीपुर। जिले के कल्याणपुर थानाक्षेत्र के भगीरथपुर गांव में दवा दुकानदार और ग्रामीण चिकित्सक सुनील चौधरी की गोली लगने से हुई मौत के बाद इलाके में भारी आक्रोश फैल गया। पांच दिन पूर्व बदमाशों द्वारा की गई गोलीबारी में घायल सुनील चौधरी की शुक्रवार रात पटना के मेदांता अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई। शनिवार सुबह जैसे ही उनका शव समस्तीपुर पहुंचा, गांव वालों का आक्रोश भड़क उठा। फिर उन्होंने समस्तीपुर-दरभंगा मुख्य मार्ग को मगरदही घाट के पास जाम कर दिया। जानकारी के मुताबिक, सड़क जाम के कारण दोनों ओर वाहनों की लंबी कतार लग गई, जिससे यातायात ठप हो गया। इस जाम के कारण सुबह-सुबह स्कूल और कार्यालय जाने वाले लोगों को भारी असुविधा का सामना करना पड़ा। खासकर बच्चों और दैनिक यात्रियों को काफी दिक्कत हुई। आक्रोशित ग्रामीणों ने मुख्य आरोपी गांधी चौधरी की गिरफ्तारी, मृतक के परिवार को 50 लाख रुपये मुआवजा और परिवार को सुरक्षा प्रदान करने की मांग की। आक्रोश बढ़ता देख नगर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और लोगों को समझा-बुझाकर जाम खत्म करवाया। जानकारी के मुताबिक, घटना 23 सितंबर की रात की है, जब सुनील चौधरी अपनी दवा की दुकान बंद कर घर जाने की तैयारी कर रहे थे। तभी बदमाशों ने उन पर ताबड़तोड़ गोलियां चलाईं, जिसमें एक गोली उनके शरीर में जा लगी। उसके बाद स्थानीय लोगों ने घायल सुनील चौधरी को समस्तीपुर के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया, जहां से उनकी गंभीर स्थिति को देखते हुए पटना के मेदांता हॉस्पिटल रेफर किया गया था। वहां इलाज के दौरान शुक्रवार मध्यरात्रि उनकी मौत हो गई। बताया जा रहा है कि सुनील चौधरी की पत्नी के बयान पर कल्याणपुर थानाक्षेत्र के भगीरथपुर गांव के गांधी चौधरी समेत चार लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया था। पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है, लेकिन मुख्य आरोपी गांधी चौधरी अभी भी फरार है। गांधी चौधरी पहले भी गांव के संतोष राय पर गोली चलाने का आरोपी रहा है। गांव वालों का आरोप है कि अगर पुलिस समय रहते संतोष राय पर हुए हमले के मामले में सक्रिय होती और गांधी चौधरी को गिरफ्तार कर लेती, तो सुनील चौधरी की जान बचाई जा सकती थी। पुलिस अब मुख्य आरोपी की गिरफ्तारी के लिए छापामारी कर रही है, लेकिन गांव में पुलिस की सुस्ती को लेकर भारी नाराजगी है।

हथियार के साथ डांस करते बनाया वीडियो, अरेस्ट

वैशाली। थाना क्षेत्र के एक युवक का हथियार लहराते फोटो और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होते ही वैशाली थाना की पुलिस ने कार्रवाई करते हुए आरोपित दो युवक को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। पुलिस इस मामले में दोनों युवकों के विरुद्ध आर्म्स एक्ट के तहत नामजद प्राथमिकी दर्ज कर कार्रवाई में जुटी है। पुलिस ने युवक के पास से हथियार और दो जिंदा कारतूस भी बरामद किया है। जानकारी के अनुसार वैशाली थाना क्षेत्र के बेल्का गांव में विश्वकर्मा पूजा के मौके पर रात में नाच गाना का कार्यक्रम आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में एक युवक का हथियार लहराते हुए वीडियो किसी ने बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। वायरल वीडियो जैसे ही पुलिस के हाथ लगी पुलिस हरकत में आ गयी। पुलिस युवक की पहचान करने की कार्रवाई में जुटी थी। इसी दौरान पुलिस ने मानवीय सूचना के आधार पर हथियार लहराने वाले युवक की पहचान कर गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार युवक भगवानपुर रत्ती गांव निवासी सुरेश राय का पुत्र संजीत कुमार बताया गया है। बताया गया कि गिरफ्तार युवक से पुलिस ने जब हथियार के संबंध में सख्ती से पूछताछ की तो पता चला कि उसे उसका साथी बेल्का गांव निवासी राजेश कुमार उर्फ चौबिसा ने दिया था। पुलिस उसके निशानदेही पर छापेमारी कर राजेश कुमार को भी गिरफ्तार कर लिया।

पूर्व विधायक और उनके बेटे पर गोलीबारी

दिनदहाड़े फायरिंग से बेगूसराय में दहशत

बेगूसराय। जिले में अपराध का एक और खौफनाक चेहरा सामने आया है। तेघड़ा विधानसभा क्षेत्र के पूर्व विधायक ललन कुंवर और उनके बेटे पिंढौली पंचायत के वर्तमान मुखिया कुंवर अनुराग प्रताप पर दिनदहाड़े अपराधियों ने ताबड़तोड़ फायरिंग कर जानलेवा हमला किया। इस हमले में दोनों किसी तरह बाल-बाल बच गए, लेकिन घटना के बाद पूरे इलाके में दहशत फैल गई है। घटना तेघड़ा थानाक्षेत्र में हुई और पुलिस ने मामले की तफ्तीश शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार, शनिवार सुबह पिंढौली पंचायत के मुखिया कुंवर अनुराग प्रताप के मोबाइल पर एक अनजान नंबर से फोन आया। फोन पर अपराधी ने पहले गाली-गलौज की और फिर जान से मारने की धमकी दी। अनुराग ने तुरंत इस बात का विरोध किया और जब पता चला कि फोन उनके ही गांव के अपराधियों का है, तो वे इस मामले की तहकीकात के लिए घर से निकले। उनके साथ उनके पिता पूर्व विधायक ललन कुंवर और उनके बॉडीगार्ड भी थे।इस दौरान रास्ते में पहले से घात लगाए बैठे चार-पांच हथियारबंद अपराधी ने कुंवर अनुराग प्रताप और उनके पिता पर अचानक फायरिंग शुरू कर दी। गोलियों की आवाज सुनते ही आसपास के लोग डर के मारे इधर-उधर भागने लगे। कुंवर अनुराग और उनके पिता किसी तरह जान बचाकर भागे। उनके साथ मौजूद बॉडीगार्ड ने अपनी बंदूक निकालकर अपराधियों का मुकाबला किया। इससे अपराधी हथियार लहराते हुए मौके से फरार हो गए। मुखिया कुंवर अनुराग प्रताप ने बताया कि इस हमले के पीछे गांव के कुछ अपराधियों का हाथ है, जिन्हें हाल ही में शराब के मामले में जेल भेजा गया था। अपराधियों ने जेल से छूटने के बाद उन्हें और उनके पिता को जान से मारने की धमकी दी थी। आरोपियों का कहना था कि उन्हें मुखिया और पूर्व विधायक के कारण ही जेल जाना पड़ा था और अब वे दोनों को मारकर बदला लेंगे। तेघड़ा के पूर्व विधायक ललन कुंवर ने बताया कि हमले के वक्त उनके साथ उनका बॉडीगार्ड भी था, जिसने अपनी सूझबूझ से इस संकट की घड़ी में उनकी जान बचाई।

मरे बेटे को बीमार समझ देखभाल करती रही मां

2 दिन पहले पटना से लौटा, सोया फिर नहीं उठा, कभी जगाती, कभी मुंह पोंछती

भागलपुर । 26 साल के विकास कुमार उर्फ मिद्धू की संदिग्ध स्थिति में मौत हो गई। उसकी मां को इसका पता ही नहीं चला, वो बेटे को बीमार समझ कर उसकी सेवा किए जा रही थी। कभी उसके पैर में मालिश करती, कभी जगाने की कोशिश तो कभी तौलिए से मुंह पोंछती। मामले का खुलासा शुक्रवार को तब हुआ जब उसका दोस्त मिलने पहुंचा। उस वक्त विकास की मां बेटे की लाश के पास ही बैठी थी। वह बेटे को बीमार समझकर उसका मुंह पोंछ रही थी। रांची से विकास की दीदी ने अपनी मां रंजू देवी को कॉल किया था। तब रंजू ने कहा कि मिद्धू 2 दिन से लेटा हुआ है, उठता ही नहीं है। उसकी बहन ने दोस्त को कॉल कर घर भेजा तो पता चला कि मिद्धू की दो दिनों पहले ही मौत हो चुकी है। उसकी मां पिछले दो दिनों से बेटे के शव की मालिश कर रही थी। वो यह मानने को तैयार नहीं थी कि बेटा मर चुका है। वह बार-बार उसे अस्पताल ले जाने की जिद कर रही थी। मामला मिरजानहाट एसबीआई एटीएम के पास का है। जहां के निवासी रतन नंदन साह के बेटे विकास कुमार की संदिग्ध स्थिति में मौत हो गई। मौत के कारणों का खुलासा नहीं हुआ है। पुलिस को पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट का इंतजार है। इसी बीच किसी ने पुलिस पेट्रोलिंग टीम को सूचना दी तो मोजाहिदपुर थानाध्यक्ष धीरेंद्र यादव मौके पर पहुंचे। तत्काल एफएसएल टीम को वहां बुलवाया गया। टीम ने वहां से नींबू-पानी और नींबू, चीनी, पानी से बने शरबत समेत अन्य चीजों का सैंपल जांच के लिए लिया है। शुरूआती जांच में किसी जहरीले जीव के काटने से मौत होने की बात कही जा रही है। स्पेशल ब्रांच से मो. शमशेर हुसैन ने भी जानकारी लेकर वरीय अधिकारी को रिपोर्ट भेजा है। विकास 25 सितंबर को पटना से प्रतियोगी परीक्षा देकर लौटा था। घर आने पर उसने चाय और बिस्कुट खाया। फिर ऊपर वाले कमरे में चला गया। 26 को उसकी मां जब जगाने गई तो वह उठा ही नहीं। मां को लगा कि थककर आया है तो देर से जगेगा। दोबारा वो वहां गई। उसे लगा कि वह बीमार है तो उसके मुंह पर पानी देकर कपड़ा से पोंछती रही कि संभव है कि अगर बीमार होगा तो ठीक हो जाएगा। मृतक की मां ने बताया कि पति रतन नंदन साह रांची में ही एक प्राइवेट कंपनी में काम करते हैं। रिटायरमेंट के बाद भी कुछ दिन पूर्व ही उन्हें एक्सटेंशन मिला है। उनकी दो बेटी और पति रांची में ही रह रहे हैं। मामले की जानकारी मिलने के बाद वार्ड 49 के पार्षद प्रतिनिधि दीपक साह और 50 के पार्षद पंकज कुमार गुप्ता भी वहां पहुंचे। इसके बाद निगम से मजदूरों को लगावा गया तो शव को बाहर निकाला जा सका। मौत के कारणों का पता अब पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट से ही चल सकेगा। आसपास के लोगों का यह भी कहना है कि घर की साफ-सफाई भी मिद्धू ही करता था, संभव है कि बरसात का मौसम होने के चलते कोई जहरीला जीव घर में आ गया हो।

बेटे ने चाकू से गोद कर की अपने पिता हत्या

सहरसा। जिले के बिहरा थानाक्षेत्र के खोनहा गांव में एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है, जहां बेटे ने अपने ही पिता की चाकू से गोद-गोद कर हत्या कर दी। घटना शनिवार की सुबह घर के दरवाजे पर हुई, जब किसान शिवकुमार यादव (55) को उनके छोटे बेटे ब्रजेश ने निर्ममता से मार डाला। घटना के बाद से आरोपी बेटा फरार है और गांव में सन्नाटा छा गया है। घटना के बाद परिजनों के बीच कोहराम मच गया, लेकिन हैरानी की बात यह है कि उन्होंने पुलिस को सूचना नहीं दी। उन्होंने आपसी सहमति से शव का अंतिम संस्कार करने की कोशिश की। परिवार के लोग शिवकुमार यादव का शव लेकर खेत की ओर बढ़ गए, लेकिन समय रहते किसी ने पुलिस को सूचित कर दिया। सूचना मिलने पर बिहरा थाना के सब-इंस्पेक्टर रूपम कुमारी अपने दल-बल के साथ मौके पर पहुंचीं और शव को खेत से जब्त कर लिया। पुलिस ने मामले की जानकारी वरीय अधिकारियों को दी, जिसके बाद वरिष्ठ अधिकारी भी मौके पर पहुंचे। एफएसएल की टीम ने भी घटनास्थल पर पहुंचकर जांच शुरू कर दी।

21 दिन में दूसरी बार पटना पहुंचे जेपी नड्डा

पटना। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा 21 दिन में दूसरी बात आज पटना पहुंचे। पटना एयरपोर्ट पर भाजपा के वरीय नेताओं और कार्यकताओं ने उनका स्वागत किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष के पटना एयरपोर्ट पर पहुंचने पर बिहार के उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल सहित कई कार्यकताओं ने उनका भव्य स्वागत किया। वहां से सीधे राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा सचिवालय स्थित सात मूर्ति पहुंचे। वहां उन्होंने अमर शहीदों के स्मारक पर माल्यार्पण की एवं उन्हें नमन किया। इसके बाद भाजपा कार्यालय पहुंचे। यहां पर भाजपा के वरीय नेता, मंत्री, सांसद और विधायकों से मुलाकात की। आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर जेपी नड्डा इन नेताओं के साथ मीटिंग कर रहे हैं। इधर, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के बिहार आगमन को लेकर सियासी सरगर्मियां तेज हो गई है। माना जा रहा है कि आगामी 2025 में होने वाले बिहार विधानसभा को लेकर राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा बिहार में भाजपा के कार्यकताओं से मिलकर बंद कमरे में गुफ्तगू करेंगे। साथ ही 2025 में होने वाले विधानसभा में रणनीति भी तैयार कर सकते हैं।

फर्जी शिक्षक बहाली में 2 प्रिंसिपल, एक दलाल गिरफ्तार

कई फर्जी टीचर घर से ही बना रहे हाजिरी, जांच कमेटी की संदिग्धों पर नजर

समस्तीपुर । फर्जी शिक्षक बहाली मामले में जांच कमेटी ने एक्शन लिया है। पूछताछ के बाद दो स्कूलों के हेड मास्टर और एक दलाल को पुलिस को सौंप दिया गया है। माना जा रहा है कि जल्द ही इस मामले में और लोगों की गिरफ्तारी हो सकती है। गिरफ्तार हेडमास्टरों में प्राथमिक विद्यालय पुरुषोत्तमपुर के एचएम दिलीप राम और प्राथमिक विद्यालय नवटोलिया के एचएम अविनाश कुमार टंडन शामिल हैं। वहीं, दलाल परवेज आलम को भी नगर थाने की पुलिस ले गई। सबसे ज्यादा फर्जीवाड़ा प्राथमिक विद्यालय नवटोलिया में ही हुआ है। वहीं, दूसरी तरफ गिरफ्तारी के डर से फरार फर्जी शिक्षक बिहार सरकार के शिक्षा पोर्टल पर घर से ही रोज हाजिरी बना रहे हैं। ये कौन-कौन हैं, ये क्लियर नहीं है। जिसे मामला और भी गंभीर हो गया है। मामले में विभूतिपुर बीईओ को पहले ही निलंबित कर दिया गया है। प्राथमिक विद्यालय पुरुषोत्तम में शिक्षिका रंजना कुमारी फर्जी शिक्षिका बताई गई है। इसके अलावा इस स्कूल में शिक्षिका निकहत परवीन और तनुजा कुमारी पर अभी जांच चल रही है, ये लोग संदिग्ध है। इसी स्कूल में सबसे पहले फजीर्वाड़े के बारे में पता चला था। शिक्षा विभाग के जिला कार्यक्रम पदाधिकारी स्थापना के आदेश पर प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी कृष्णदेव महतो ने प्राथमिकी दर्ज कराई। जांच शुरू हुई। मामला संज्ञान में आने पर पूर्व डीएम योगेंद्र सिंह ने कमेटी बनाई। वहीं, प्राथमिक विद्यालय नवटोलिया में दो शिक्षिका शिल्पी कुमारी, कंचन कुमारी और एक शिक्षक सुधांशु कुमार संदिग्ध है। जिस पर जांच चल रही है। मध्य विद्यालय समर्था के शिक्षक अमरजीत कुमार और पंकज कुमार साहू। प्राथमिक विद्यालय शिशबन्नी के इंदु कुमारी। प्राथमिक विद्यालय आलमपुर मुसहरी की ममता कुमारी। प्राथमिक उर्दू विद्यालय आलमपुर की हेना परवीन। प्राथमिक विद्यालय तरुणिया की सोमी कुमारी। प्राथमिक विद्यालय सैदपुर की नेहा कुमारी। प्राथमिक विद्यालय समर्था पोखरा के सुशील कुमार साह। प्राथमिक विद्यालय बलहा-2 की बेबी कुमारी, समीदा खातून। प्राथमिक विद्यालय बड़कुरबा मुरिया स्थान की मंजू कुमारी। उत्क्रमित मध्य विद्यालय कोदरिया के राजीव कुमार, प्राथमिक विद्यालय संगराहा खैराज की पिंकी कुमारी, अभिषेक कुमार। प्राथमिक विद्यालय कामा स्थान सिरसी की नेहा कुमारी व अन्य। दरअसल समस्तीपुर में BPSC से चयनित अभ्यर्थियों की जगह फर्जी शिक्षकों की नियुक्ति की गई है। शिक्षा विभाग में कार्यरत कर्मियों की माने तो काउंसिलिंग के दौरान हेराफेरी कर फर्जी बहाली की गई है। मामला सामने आने के बाद DM योगेंद्र सिंह ने 4 सदस्यीय जांच कमेटी का गठन किया है। कमेटी में शिक्षा विभाग के किसी भी अधिकारी को शामिल नहीं किया गया है। इसके साथ ही विभूतिपुर प्रखंड के BEO और 3 विद्यालयों के प्रिंसिपल से शो-कॉज पूछा गया था। विभूतिपुर प्रखंड के पीएस धोबी टोल में नियुक्त शिक्षिका का रोल नंबर-आईडी और एमएस कापन स्कूल में नियुक्त शिक्षिका के रोल नंबर-आईडी से मैच करता है। इसकी जानकारी जिला शिक्षा विभाग के पदाधिकारियों को मिली। इसके बाद कार्रवाई शुरू की गई है। बताया जा रहा है कि जिले में फर्जी तरीके से बहाल 12 शिक्षक फरार हैं।

एक बार एक इंजीनियरिंग कॉलेज के सभी शिक्षकों को एक हवाई जहाज़ में बैठाया गया, जब सभी शिक्षक बैठ गए तो पायलट ने बड़ी ही खुशी से घोषणा की।

पायलट : आप सभी गणमान्य शिक्षकों को यह जानकर खुशी होगी कि जिस प्लेन में आप बैठे हैं उसे आप ही के कॉलेज के विद्यार्थियों ने बनाया है!

बस फिर क्या था इतना सुनने की देर थी कि सभी शिक्षक इस डर से की कहीं उड़ान भरते ही विमान दुर्घटनाग्रस्त ना हो जाए तुरंत नीचे उतर गए, परन्तु प्रिंसिपल साहब बैठे रहे, यह देख पायलट उनके पास गया और उनसे पूछा-

पायलट : सर, आप क्यों नहीं उतरे?

प्रिंसिपल : मुझे अपने कालेज के शिक्षकों के निकम्मेपन और उससे भी ज्यादा अपने विद्यार्थियों की नालायकी पर भरोसा है, देख लेना यह प्लेन स्टार्ट ही नहीं होगा!

●●●●

पिता : आज तक तूने ऐसा कोई काम नही किया जिससे मेरा सिर ऊंचा हुआ हो।

बेटा : मैंने एक बार आपके सिर के नीचे 2 तकिये लगाए तो थे।

●●●●

एक महिला और उसका बेटा बस स्टॉप पर खड़े बस का इंतज़ार कर रहे थे। मां अपने बेटे से कहती है अगर बस में कंडक्टर तुम्हारी उम्र पूछे तो कहना कि तुम पांच साल के हो! इससे तुम्हारा किराया माफ हो जाएगा और तुम बस में नि:शुल्क सफर कर सकोगे! जैसे ही वह बस में चढ़ते हैं, कंडक्टर बच्चे से उसकी उम्र पूछता है!! यह सुन बच्चा जवाब देता है, मैं 5 साल का हूँ । क्योंकि कंडक्टर का भी उतनी ही उम्र का एक बेटा होता है इसीलिए वह मुस्कुरा कर बच्चे से पूछता है, और आप 6 साल के कब हो जाओगे? बच्चा बड़ी मासूमियत से जवाब देता है, जैसे ही मैं इस बस से उतरूंगा!

●●●●

शिक्षक : वाट इज युअर फादर नेम?

राजेश : गर्मी में आईसीएस और सर्दियों में पीसीएस।

शिक्षक : क्या मतलब?

राजेश : आइसक्रीम सेलर इन समर और पकौड़ा-चाट सेलर इन विंटर।

●●●●

कमलेश : मैं उल्लू खरीदने गया, लेकिन नहीं खरीद सका।

अजय : क्यों? कीमत ज्यादा थी या उल्लू पसंद नहीं आया?

कमलेश : उल्लू ने मेरे साथ जाने से मना कर दिया।

डॉली ने जानी पैसों की कद्र

''आखिर डॉली ने अपनी जिद मनवा ही ली मम्मी-पापा से। मम्मी पापा मानते भी कैसे नहीं? आखिर एक ही तो उनकी नन्ही-सी प्यारी-सी गुड़िया है।'' सोचते हुए डॉली खुशी से फूली नहीं समा रही थी।

डॉली छठी कक्षा की छात्रा थी। पढ़ने-लिखने में तो वह कोई खास तेज नहीं थी। हां अपने आपको खूब होनहार जरूर समझती थी। मम्मी-पापा के लाड़-प्यार ने उसे बिगाड़ दिया था। वह एक नम्बर की जिद्दी बन गई थी, जिस चीज की जिद पकड़ लेती उसे लेकर ही दम लेती।

डॉली की इस जिद्दी आदत के कारण ही मम्मी-पापा अब उससे काफी परेशान थे। आखिर करें भी तो क्या? लाख समझाने पर भी मानती ही नहीं थी। जो चीज उसे भा गई, उसे तो हर हाल में वह चाहिए ही।

चार दिन बाद डॉली का जन्मदिन था। इधर वह कई दिनों से अपने जन्मदिन के लिए वैसी ही फ्रॉक की जिद कर रही थी, जैसी बगल वाले शर्मा जी की बेटी गोल्डी ने अपने जन्मदिन पर पहन रखी थी। आज फिर डॉली ने मम्मी को फ्रॉक की याद दिलाई तो मम्मी ने उसे प्यार से समझाते हुए कहा, ''डॉली बेटा, अभी तो आपके लिए कई नए-नए फ्रॉक रखे हैं न। एक वो, जो नानी ने भिजवाया था। एक वो, जो बुआ दे गई थीं और पिछले ही महीने पापा भी तो आपके लिए एक सुंदर-सा फ्रॉक लाए थे। सब के सब नए ही तो हैं। उनमें से आपको जो भी अच्छा लगे, जन्मदिन पर पहन लेना। फालतू में एक और खरीदकर जमा करने से क्या फायदा?''

''नहीं मम्मी'', डॉली ने मुंह बिगाड़ा, ''मैं तो गोल्डी जैसी ही फ्रॉक पहनूंगी इस बर्थ-डे पर।''

''बेटा...'' मम्मी ने उसे पुन: समझाना चाहा तो डॉली ने उनकी बात बीच में ही काट दी और बोली, ''नहीं मम्मी, मैं कुछ नहीं सुनूंगी। मुझे तो बस इस बार गोल्डी जैसी ही फ्रॉक चाहिए।''

मम्मी समझ गई कि इसे समझाने से कोई फायदा नहीं। किसी तरह इसे गोल्डी जैसी फ्रॉक दिलवानी ही पड़ेगी।

पापा ने भी डॉली को समझाने की खूब कोशिश की पर डॉली ने उनकी भी एक न सुनी। अपनी जिद पर ही अड़ी रही। आखिर हारकर पापा बोले, ''अच्छा बाबा, ये लो दो सौ रुपए और जाओ अभी जानकी अंकल की दुकान से अपनी पसंद की फ्रॉक ले आओ। पैसे कम पड़ेंगे तो उन्हें बोल देना, मैं बाद में दे जाऊंगा।''

कहते हुए पापा ने उसी वक्त अपनी जेब से सौ-सौ के दो नोट निकाले और डॉली को पकड़ा दिए। अब तो अपनी सफलता पर खुश हो गई थी डॉली। इसीलिए वह इतराकर पापा से बोली, ''थैंक्यू माई डियर पापा।''

और इतना कहकर वह खुशी से दोहरी होती बड़ी तेजी से बाजार की ओर चल पड़ी। डॉली का घर बाजार में ही था। जानकी अंकल की रेडीमेड कपड़ों की दुकान थी। वह डॉली को अच्छी तरह पहचानते थे। डॉली जानकी अंकल की दुकान के सामने पहुंची कि तभी उसे पास की किराने की दुकान पर अपनी सहेली प्राची उसके पापा के साथ दिखाई पड़ गई। डॉली एक किनारे खड़ी हो गई और प्राची को आवाज दी, ''प्राची...ओ प्राची...।''

प्राची ने पीछे मुड़कर देखा तो उससे थोड़ी ही दूर पर खड़ी डॉली मुस्करा रही थी। प्राची भी उसे देखकर मुस्कराने लगी। वह भागकर डाली के पास आ गई तथा डॉली से पूछने लगी, ''अरे डॉली तू? तू यहां क्या कर रही है?''

''चार दिन बाद मेरा बर्थ डे है न। बर्थ डे के लिए फ्रॉक लेने आई हूं।''

''अच्छा!'' प्राची भी सुनकर खुश हो गई।

''हां'' डॉली गर्व से कहने लगी, ''पापा ने दो सौ रुपए पकड़ा दिए और बोले जा तू अपनी पसंद की फ्रॉक जानकी अंकल की दुकान से ले आ। अगर पैसे कम पड़ेंगे तो जानकी अंकल को बाद में जाकर दे आऊंगा।''

''चल अच्छी बात है।'' प्राची बोली।

प्राची ने पूछा, ''अच्छा डॉली ये तो बता कि तू फ्राक लेगी कैसी? जरा मैं भी तो जानूं।''

''बिल्कुल गोल्डी जैसी'' डॉली ने बताया, ''जैसी गोल्डी ने अपने बर्थ डे पर पहनी थी न, बिल्कुल वैसी ही।''

''भई मानना पड़ेगा तेरी च्वाइस को।'' प्राची बोली।

डॉली यह सुनकर खुशी और गर्व से दोहरी हो गई और प्राची से पूछा, ''पर अगले ही महीने तेरा भी तो बर्थ डे है न? तू अपने बर्थ डे पर कैसी फ्रॉक लेगी?''

''मैं तो बाजार से कोई फ्रॉक नहीं खरीदूंगी ही नहीं।'' प्राची ने कहा।

''क्या?'' डॉली ने हैरानी से पूछा।

वह प्राची के कहने का मतलब नहीं समझी।

''हां प्राची बताने लगी, ''मेरे पास तो अभी पहले के ही चार नए फ्रॉक रखे हुए हैं। उनमें से ही कोई अच्छा-सा पसंद करके पहन लूंगी। फालतू में पापा के पैसे खर्च करवाने से क्या फायदा?''

प्राची की बात डॉली के दिमाग में बैठ गई। वह खड़ी-खड़ी सोचने लगी, ''उसमें और प्राची में कितना फर्क है? कितनी समझदार है प्राची? और वह स्वयं...? कितनी नासमझ और स्वार्थी है वह? पापा से जिद करके दो सौ रुपए ऐंठ लाई जबकि उसके पास भी तो पहले से ही कई नए-नए फ्रॉक रखे हुए हैं।''

डाली को अब अपनी भूल पर पछतावा हो रहा था। आखिरकार उसने फ्रॉक न खरीदने का निश्चय कर लिया। अब उसकी समझ में आ गया था कि वह गलत है। वह मन ही मन सोच रही थी कि वह घर पहुंचकर मम्मी-पापा को पैसे लौटा देगी और उनसे अपनी इस नासमझी के लिए माफी मांग लेगी। उसे विश्वास था कि मम्मी-पापा उसे जरूर माफ कर देंगे।

कैसे पड़ा डेड सी का नाम?

इसका नाम मृत सागर इसलिए पड़ा, क्योंकि यहां के आस-पास की सभी चीजें मृत हैं। यहां न तो कोई पेड़-पौधा है और न ही कोई घास। यहां तक कि इसमें कोई मछली भी नहीं है। इसके पीछे कारण यह है कि इस सागर का पानी औसत से आठ गुणा ज्यादा क्षारीय या यूं कहें की खारा है, इसलिए इसे खारे पानी का समुद्र या झील भी कहा जाता है। यह पूर्व में जॉर्डन की सीमा को छूता है, वहीं पश्चिम से इजरायल की सीमा के पास है। इसमें कई जहरीले खनिज लवण जैसे मैग्नीशियम क्लोराइड, कैल्शियम क्लोराइड, पोटेशियम क्लोराइड आदि भारी मात्रा में पाए जाते हैं। इन सभी लवणों की अधिकता के कारण यह सागर पौधों और जीवों के रहने के अनुकूल नहीं है। इस सागर के पानी का इस्तेमाल न तो पीने के लिए किया जा सकता है और न ही उसे किसी अन्य काम में। मृत सागर 67 किलोमीटर लंबा और 18 किलोमीटर चौड़ा है। इसकी गहराई 377 मीटर (लगभग 1237 फुट) है। यह इस दुनिया की सबसे गहरी खारे पानी की झील है। इसकी सहायक नदी जॉर्डन रिवर है। प्राकृतिक रूप से अधिक खारा होने के चलते इस सागर का पानी काफी हल्का है और अधिक उछाल मारता है। इसके चलते इसमें तैरना आसान हो जाता है।

सागर का पानी क्षारीय क्यों होता है?

सोडियम, क्लोरिन, मैग्नीशियम और सिलिका जैसे खनिज पदार्थ पृथ्वी की सतह पर पाए जाते हैं। जब भी बारिश होती है, तब इसके छोटे-छोटे कण बहकर समुद्र में मिल जाते हैं, जिससे इसका पानी खारा हो जाता है। जॉर्डन नहर के अलावा कई अन्य नहरें भी मृत सागर में मिलती हैं। मृत सागर में वर्षा का पानी जिस मात्रा में आता है, उससे अधिक गति से वाष्प बनकर वायुमंडल में उड़ जाता है, जिससे पानी का खारापन लगातार बढ़ता जा रहा है। यही कारण है कि यह सागर साल-दर-साल और ज्यादा खारा होता जा रहा है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि मृत सागर की गितनी बड़े सागरों में की जाती थी। लेकिन वाष्पीकरण के कारण इसका पानी तेजी से खत्म हो रहा है। अब इसका आकार पहले से कई गुणा छोटा हो गया है।

दिमाग को बनाओ तेज

मेमोरी फोर्सर नाम के इस एप्लिकेशन में मेमोरी तेज करने के कई टिप्स बताए गए हैं। इन टिप्स को अपनाकर तुम अपनी याद करने की क्षमता को इतना मजबूत बना सकते हो कि उसके बाद किसी भी बात को भूल ही नहीं पाओगे।

ताउम्र याद रहेंगी बातें

तुम्हें तो पता है ही कि अच्छी याददाश्त की क्षमता पढ़ाई में काफी मदद करती है। अब जब इस एप्लिकेशन में दिए गए एक से बढ़कर एक बेहतरीन टिप्स को फॉलो करोगे तो तुम्हारा मेमोरी पावर इतना तेज हो जाएगी कि तुम ताउम्र किसी बात को भूल नहीं पाओगे। एक बार ऐसी आदत लगने के बाद तुम पढ़ाई में हमेशा अव्वल रहोगे। याददाश्त तेज होने की यह आदत जीवनभर तुम्हारे काफी काम आएगी। तो देर मत करो, पापा या मम्मी का स्मार्टफोन उठाओ, एड्रॉयड मार्केट या गूगल प्ले स्टोर पर जाओ और फ्री में इस एप्लिकेशन को डाउनलोड कर मोबाइल में इंस्टॉल करो और जब दिल करे तब आसानी से इसका इस्तेमाल कर अपनी मेमोरी को तेज बनाओ।

भारत / बांग्लादेश दूसरा टेस्ट : एक भी गेंद फेंके बिना रद्द हुआ दूसरे दिन का खेल, 9 साल बाद हुआ ऐसा

कानपुर (एजेंसी)। भारत और बांग्लादेश के बीच दो मैच की टेस्ट सीरीज का दूसरा मैच का कानपुर के ग्रीन पार्क स्टेडियम में खेला जा रहा है। भारत और बांग्लादेश के बीच दूसरे क्रिकेट टेस्ट के दूसरे दिन का खेल लगातार बारिश के कारण एक भी गेंद फेंके बगैर रद्द कर दिया गया। सुबह हल्की बूंदाबांदी के बाद तेज बारिश शुरू हो गई जिससे ग्रीन पार्क स्टेडियम पर दूसरे दिन कोई खेल नहीं हो सका। पहले दिन भी बारिश की वजह से मैच देरी से शुरू हुआ था। 35 ओवर का खेल होने के बाद बारिश के कारण आगे का खेल रद्द करना पड़ा। इससे पहले 2015 में ऐसा हुआ था, जब साउथ अफ्रीका के खिलाफ टेस्ट मैच में पूरा दिन खेल नहीं हो सका था।

भारत और साउथ अफ्रीका के बीच 2015 में चार मैच की टेस्ट सीरीज के दूसरे मैच में बारिश की वजह से मैच ड्रॉ रहा था। बेंगलुरु में खेले गए मुकाबले में भारतीय कप्तान ने टॉस जीतकर वहां भी पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया था। अफ्रीका ने पहली पारी में 59 ओवर में सभी विकेट खोकर 214 रन बनाए। भारत ने 22 ओवर में 80 रन बनाए थे लेकिन इसके बाद मैच को ड्रॉ घोषित करना पड़ा।

भारत और बांग्लादेश मैच की बात करें तो दूसरे दिन मैदानकर्मियों ने 11.15 के आसपास बारिश रुकने पर तीन सुपर सोपर्स लगाए। रोशनी भी साफ नहीं थी जिस कारण सवा दो बजे आधिकारिक तौर पर खेल रद्द करना पड़ा। मौसम विभाग के अनुसार रविवार को भी बारिश की संभावना है। हालांकि, सोमवार और मंगलवार को आसमान साफ रहने की उम्मीद है। ऐसे में मैच ड्रॉ की ओर बढ़त दिख रहा है।

एआईटीए ने नये पदाधिकारियों का चुनाव किया, अदालत के निर्देश पर परिणाम रोका गया

नयी दिल्ली (एजेंसी)। अखिल भारतीय टेनिस संघ (एआईटीए) ने नये पदाधिकारियों का निर्विरोध चयन कर लिया, लेकिन दिल्ली उच्च न्यायालय के निर्देशों के अनुसार परिणाम की आधिकारिक घोषणा नहीं की गई। अदालत में महासंघ द्वारा खेल संहिता के उल्लंघन की याचिका पर सुनवाई जारी है। एआईटीए को अपनी वार्षिक आम बैठक (एजीएम) में चुनाव करवाना था, लेकिन मतदान की जरूरत नहीं हुई क्योंकि निर्वाचन अधिकारी को प्रत्येक पद के लिए केवल एक नामांकन प्राप्त हुआ था।

इस चुनाव में नये अध्यक्ष, महासचिव और कोषाध्यक्ष के अलावा आठ उपाध्यक्ष, चार संयुक्त सचिव और कार्यकारी परिषद के 10 सदस्य चुने गये हैं। यह पता चला था कि रोहित राजपाल और एक अन्य उम्मीदवार ने अध्यक्ष पद के लिए अपना नामांकन दाखिल किया था लेकिन भारतीय डेविस कप के गैर-खिलाड़ी कप्तान रहे राजपाल ने बाद में अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली। पूर्व भारतीय खिलाड़ियों सोमदेव देववर्मन और पूरव राजा ने एआईटीए चुनावों पर रोक लगाने की मांग की थी।उनका दावा था कि महासंघ खेल संहिता का पालन नहीं कर रहा है और चुनाव लड़ने वाले कई उम्मीदवार इसके लिए योग्य नहीं है।

अदालत ने इस याचिका पर चुनावों पर रोक तो नहीं लगाई, लेकिन एआईटीए और खेल मंत्रालय से अपना जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया। अदालत ने कहा, '' चुनाव तत्काल रिट याचिका के परिणाम के अधीन रहेगा। चुनाव के परिणाम को चुनाव अधिकारी द्वारा सीलबंद लिफाफे में रखा जाएगा, जिसका अर्थ है कि चुनाव के परिणाम को प्रकाशित नहीं किया जाएगा। इस मामले की अगली सुनवाई 14 अक्टूबर को होगी। मामले की सुनवाई तक पदाधिकारियों की नयी और पुरानी टीम संयुक्त रूप से महासंघ का ध्यान रखेगी।

कोहली का मानक इतना ऊंचा है कि मामूली गिरावट भी आलोचना बन जाती है

-पार्थिव पटेल और तमीम इकबाल ने विराट के प्रदर्शन को लेकर कहा

नई दिल्ली (एजेंसी)। पार्थिव पटेल और तमीम इकबाल ने विराट कोहली की स्थिति को लेकर कई बातें साझा की हैं, विराट की तुलना फैब फोर के खिलाड़ियों- स्टीव स्मिथ, केन विलियमसन, और जो रूट से की है। दोनों पूर्व क्रिकेटरों का मानना है कि विराट कोहली पर बाकी तीनों की तुलना में बहुत ज्यादा दबाव होता है, और यह उनके प्रदर्शन पर असर डाल सकता है।

पार्थिव पटेल ने कहा विराट ने अपनी बल्लेबाजी का मानक इतना ऊंचा कर लिया है कि वह 60 या 70 रन भी बनाते हैं, तो उसे विफलता के रूप में देखा जाता है। उन्होंने कहा कि कोहली पर भारतीय क्रिकेट प्रेमियों की उम्मीदों का दबाव हमेशा रहता है। जब भी वह मैदान में आते हैं तो उनसे शतक की उम्मीद की जाती है लेकिन पार्थिव ने यह भी कहा कि विराट के अंदर अभी भी खेल के प्रति जोश और जुनून मौजूद है और वह अपने खेल का आनंद लेते हैं। विराट उम्र के साथ जरूर बदल रहे हैं, लेकिन दबाव का सामना करने की उनकी क्षमता भी बड़ी है।

वहीं तमीम इकबाल ने विराट कोहली को बेहतरीन बल्लेबाज माना, खासकर उनके सफेद गेंद वाले क्रिकेट के प्रदर्शन को लेकर। इकलाब ने कहा कि विराट ने भारत को अकेले दम पर कई मैच जिताए हैं, जो बाकी तीन खिलाड़ियों के मुकाबले कहीं ज्यादा हैं। उन्होंने यह भी कहा कि कोहली पर जितना दबाव होता है, उतना दबाव स्टीव स्मिथ, जो रूट, और केन विलियमसन पर नहीं रहता। इन टिप्पणियों से यह साफ हो जाता है कि विराट की महानता और उनके ऊपर उम्मीदों का दबाव हमेशा उनके प्रदर्शन के साथ जुड़ा रहा है। उनका मानक इतना ऊंचा है कि मामूली गिरावट भी उनकी आलोचना बन जाती है, लेकिन वे अब भी भारतीय क्रिकेट के सबसे अहम और दबाव में प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों में से एक हैं वह वाकई विराट हैं।

आर्चर ने फेंकी ऐसी गेंद मार्श को नहीं दी दिखाई और लौटे पवेलियन

-इंग्लैंड ने चौथे वनडे में आस्ट्रेलिया को 186 रन से हराया

लंदन (एजेंसी)। जोफ्रा आर्चर ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में डेब्यू करने से पहले ही तेज गेंदबाज बन गए हैं। कैरेबियन देश में जन्मे आर्चर ने 2019 में इंग्लैंड के लिए डेब्यू किया था। वर्ल्ड कप 2019 के फाइनल में सुपर ओवर डालकर अपनी टीम को जीत दिलाई। फिर उसी साल एशेज सीरीज अपनी पेस बॉलिंग कर हर बल्लेबाज में अपना डरा बैठा दिया, लेकिन फिर चोट के कारण आर्चर मैदान से दूर हो गए। बीच-बीच में वापस लौटे लेकिन फिटनेस ने उनका साथ नहीं दिया।

अब आर्चर ने फिर वापसी की है और पूरी लय में नजर आ रहे हैं। इंग्लैंड टीम अपने घर में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे सीरीज खेल रही है। जोफ्रा आर्चर भी इस सीरीज में इंग्लैंड टीम में शामिल हैं। लॉर्ड्स पर खेले गए चौथे मुकाबले में जोफ्रा आर्चर ने ऑस्ट्रेलिया के कप्तान मिचेल मार्श को बोल्ड मार कर पवेलियन रवाना कर दिया। आर्चर की गेंद इतनी तेजी से अंदर आई कि मार्श को लाइन में जाने का भी मौका नहीं मिला। गेंद उन्हें छकाती हुई विकेट में जा लगी। मार्श अच्छी बैटिंग कर रहे थे और 34 गेंद पर 28 रन बनाकर आउट हुए।

मार्श के आउट होने के बाद मार्नस लाबुशेन मैदान पर आए। आर्चर ने करीब 149 की स्पीड से गेंद फेंकी। यह गेंद लाबुशेन के हाथ पर लगी और वह दर्द से कराह उठे। डॉक्टर ने उन्हें चेक किया। उनके हाथ पर पट्टी लगाई गई। फिर कहीं जाकर वह खेलने के लिए तैयार हुए। वह ज्यादा देर क्रीज पर नहीं टिक पाए और 10 गेंद पर 4 रन बनाकर आउट हो गए। आर्चर ने 7 ओवर में 33 रन देकर 2 विकेट लिए। 39-39 ओवर के इस मैच को इंग्लैंड ने 186 रन से जीत लिया।

बता दें लॉर्ड्स के ही मैदान पर 2019 में इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया का टेस्ट हुआ था। उसमें आर्चर ने स्टीव स्मिथ के हेलमेट पर बाउंसर मारकर उन्हें घायल कर दिया था। फिर कन्कशन सब्स्टीट्यूट के रूप में मार्नस लाबुशेन प्लेइंग इलेवन में आए थे। दूसरी पारी में पहली ही गेंद पर आर्चर ने लाबुशेन के ग्रिल पर बाउंसर मार दी थी।

ऑस्ट्रेलिया की शर्मनाक हार, 126 पर सिमटी, सीरीज 2-2 की बराबरी पर

खेल डैस्क। लॉर्ड्स के मैदान पर टॉस जीतना इन दिनों फायदा का सौदा होता जा रहा है। रिकॉर्डबुक खंगाले तो यहां खेले गए पिछले 9 वनडे मुकाबलों में जो भी टीम पहले बल्लेबाजी करती है वह जीतने में सफल रहती है। शुक्रवार शाम इंग्लैंड टीम को भी इसी तरह ऑस्ट्रेलिया पर बड़ी जीत हासिल हुई। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच वनडे मैचों की सीरीज के चौथे मैच में इंग्लैंड को 186 रनों की जीत मिली है। इंग्लैंड ने बारिश बाधित मैच में पहले खेलते हुए हैरी ब्रूक के 87 और लिविंगस्टोन के 62 रनों की बदौलत 312 रन बनाए थे जवाब में ऑस्ट्रेलियाई टीम 126 रन पर ही ऑलआऊट हो गई।

इंग्लैंड ने ओपनर फिलिप सॉल्ट (22) का विकेट 10वें ओवर में गंवाया। जबकि विल जैक 10 ही रन बना पाए। लेकिन इसके बाद बेन डकेट और कप्तान हैरी ब्रूक ने स्कोर 150 पार लगाया। डकेट ने 62 गेंदों पर 6 चौके और 1 छक्के की मदद से 63 रन बनाए। जबकि ब्रूक 58 गेंदों पर 11 चौके और एक छक्के की मदद से 87 रन बनाने में सफल रहे। जेमी स्मिथ ने 28 गेंदों पर 39 रन बनाए। इसके बाद मध्यक्रम में लियाम लिविंगस्टोन और बीथल स्कोर को 5 विकेट के नुकसान पर 312 तक ले गए। लियाम ने 27 गेंदों पर तीन चौके और 7 छक्कों की मदद से 62 रन बनाए। इंग्लैंड के लिए जंपा ने 66 रन देकर 2 विकेट लीं।

अभी संन्यास नहीं लेंगे आदिल राशिद

डरहम। इंग्लैंड के स्पिनर आदिल राशिद ने कहा कि अभी उनका संन्यास का कोई इरादा नहीं है। साथ ही कहा कि वह वह 2027 एकदिवसीय विश्व कप तक खेलते हुए युवाओं से अपने अनुभव साझा करना चाहते हैं। 36 वर्षीय राशिद ने इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) के साथ एक केंद्रीय अनुबंध पर हस्ताक्षर किए हैं, जो उन्हें 2025 के अंत तक टीम में बनाए रखेगा और उनका लक्ष्य अगले साल की चैंपियंस ट्रॉफी, 2026 टी20 विश्व कप और 2027 50 ओवर का विश्व कप खेलना है। राशिद ने कहा, मैंने अभी तक भविष्य के बारे में नहीं सोचा है। खेलते रहना, इसका आनंद उठाना, फिट रहना, अच्छी गेंदबाजी करना, जीत में योगदान देना, उम्मीद है कि विश्व कप और चैंपियंस ट्रॉफी जीतना मेरा अंतिम लक्ष्य है। मैं हर मैच और हर सीरीज खेल रहा और अच्छा प्रदर्शन कर रहा हूं, तो मैं खेलना जारी रखूंगा। इतने लंबे समय तक खेलना और विकेट लेना, मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था, इसलिए उम्मीद है कि मैं इसे जारी रखूंगा। यह उतार-चढ़ाव के साथ एक मजेदार सफर रहा है और उम्मीद है कि मैं अपने करियर के बाकी बचे हिस्से में भी इसी तरह आगे बढ़ूंगा। साथ ही कहा, मैंने अभी तक संन्यास लेने या ऐसा कुछ करने के बारे में नहीं सोचा है, यह मेरे दिमाग में भी नहीं आया है।

आईसीसी बैठकों में बीसीसीआई प्रतिनिधि चुनना एजीएम का मुख्य एजेंडा

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट बोर्ड की रविवार को होने वाली 93वीं सालाना बैठक का मुख्य एजेंडा आईसीसी की बैठकों में भारत के दो प्रतिनिधियों का चुनाव होगा और निवर्तमान सचिव जय शाह के बाद नये सचिव की तलाश एजेंडे में नहीं है। बैठक इसलिये भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यूएई में महिला टी20 विश्व कप के बाद दुबई में आईसीसी कांक्लेव होने वाली है। महिला टी20 विश्व कप का फाइनल 20 अक्टूबर को दुबई में है और तब तक शाह बीसीसीआई सचिव पद पर रहेंगे। वह एक दिसंबर को आईसीसी चेयरमैन का पद संभालेंगे। बीसीसीआई अध्यक्ष के रूप में सौरव गांगुली का कार्यकाल खत्म होने के बाद से शाह आईसीसी बैठकों में भारत की नुमाइंदगी करते आये हैं। बोर्ड के मौजूदा अध्यक्ष रोजर बिन्नी वैकल्पिक निदेशक हैं जो बीसीसीआई का प्रतिनिधित्व आईसीसी बैठकों में कर सकते हैं लेकिन अभी तक ऐसा हुआ नहीं है। उनके कार्यकाल का एक ही साल बचा है लिहाजा देखना होगा कि वह वैकल्पिक निदेशक बने रहेंगे या किसी और को नामित किया जायेगा। सचिव का चयन एजेंडे में नहीं है। यहां अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के पास राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी के नये परिसर के उद्घाटन के लिये एकत्र हुए सदस्य इस पर आपस में बात कर सकते हैं।

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी: ऑस्ट्रेलिया टीम को सता रहा अश्विन और जडेजा का डर

-मैक्सवेल बोले- ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों को स्पिनरों के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन करना होगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर ग्लेन मैक्सवेल ने कहा कि बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में ऑस्ट्रेलिया की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि उनके बल्लेबाज भारत की स्पिन जोड़ी, अश्विन और जडेजा से कैसे निपटते हैं। भारत ने पिछले दोनों दौरों में ऑस्ट्रेलिया को उनकी धरती पर हराकर ऐतिहासिक जीत हासिल की थी और अब टीम इंडिया तीसरी बार यह उपलब्धि हासिल करने की तैयारी में है।

मैक्सवेल ने कहा कि अक्सर अश्विन और जडेजा की जोड़ी ही खेल का नतीजा तय करती है। उन्होंने कहा कि लंबे समय से इन दोनों गेंदबाजों का सामना करने के बाद ऐसा लगता है कि उनके खिलाफ हमारा प्रदर्शन मैच का परिणाम तय करता है। हालांकि मैक्सवेल खुद ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट क्रिकेट की योजना का हिस्सा नहीं हैं, लेकिन उन्होंने यह साफ कहा कि ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों को भारत के अनुभवी स्पिनरों के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन करना होगा। अश्विन और जडेजा की जोड़ी ने मिलकर अब तक 330 पारियों में 821 विकेट लिए हैं और 50 बार पांच विकेट लेने का कारनामा कर दिखाया है। मैक्सवेल के मुताबिक यदि ऑस्ट्रेलिया इन दोनों के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन कर पाती है, तो टीम जीत की अच्छी स्थिति में होगी। मैक्सवेल ने गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की भी तारीफ की, जिन्हें वह 2013 में आईपीएल के दौरान पहली बार नेट्स में गेंदबाजी करते हुए देख चुके हैं। मैक्सवेल ने कहा कि अब बुमराह को इस तरह शानदार तरीके से आगे बढ़ते हुए देखना अद्भुत है। वह तीनों प्रारूपों में शायद सबसे बेहतरीन गेंदबाज हैं। अश्विन और जडेजा की कुशल स्पिन और बुमराह की तेज गेंदबाजी के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन करना ऑस्ट्रेलियाई टीम की जीत की संभावनाओं को काफी हद तक प्रभावित करेगा।

हार्दिक पंड्या के टेस्ट क्रिकेट खेलने पर पार्थिव पटेल ने दिया बड़ा बयान

नई दिल्ली। इन दिनों हार्दिक पंड्या को लेकर कहा जा रहा है कि, वह नवंबर में होने वाली बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी से टेस्ट में वापसी कर सकते हैं। लेकिन भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व विकेटकीपर पार्थिव पटेल का मानना है कि हार्दिक पंड्या टेस्ट क्रिकेट में कभी वापसी नहीं कर पाएंगे। हालांकि, उन्होंने इसके पीछे के कारण का भी खुलासा किया है। हाल ही में हार्दिक पंड्या को नेट्स में लाल गेंद से अभ्यास करते देखा गया और उसके बाद कयास लगाने लगे कि उनकी टेस्ट क्रिकेट में वापसी हो सकती है। हार्दिक पंड्या पीठ में सर्जरी के बाद से खुद को सिर्फ वनडे और टी20 के लिए उपलब्ध रखा है। उन्हें टी20 वर्ल्ड कप 2023 के दौरान भी चोट लगी थी और उसके बाद उन्होंने फिर से क्रिकेट के मैदान पर कई महीनों के बाद वापसी की थी और पहले आईपीएल 2024 में हिस्सा लिया और फिर भारत के लिए टी20 वर्ल्ड कप 2024 में भी खेला। सोशल मीडिया पर हाल ही में एक वीडियो वायरल हुआ था जिसमें वो लाल गेंद से अभ्यास करते हुए दिखे थे। उसके बाद माना जा रहा था कि वो अगले रणजी सीजन में खेलते हुए दिख सकते हैं। हार्दिक ने साल 2018 में बड़ोदा के खिलाफ आखिरी फर्स्ट क्लास मैच खेला था। अब पार्थिव पटेल ने उन अफवाहों पर विराम लगाने का काम किया है जिसमें कहा जा रहा था कि वो लाल गेंद के क्रिकेट में वापसी कर सकते हैं। पार्थिव पटेल ने कहा कि पंड्या ने लाल गेंद से इस वजह से प्रैक्टिस की क्योंकि सफेद गेंद उपलब्ध नहीं थी।

इंग्लैंड और दक्षिण अफीका के बीच खेला गया था सबसे लंबा टेस्ट

मुम्बई। आजकल जहां टेस्ट क्रिकेट में भी आक्रामक रणनीत अपनायी जा रही है। जिससे अधिकतर मैच पांच दिनों से पहले ही समाप्त हो रहे हैं। वहीं पहले के दौर में ऐसा नहीं था तब कई मैच ड्रॉ होते थे। इसके बाद भीटेस्ट क्रिकेट की कितनी दीवानगी थी उसका अंदाज इसी से लगाया जा सकता है कि साल 1939 में डरबन में इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका के बीच एक ऐसा ही बेहद लंबा टेस्ट मैच खेला गया था। यह मैच 43 घंटे 16 मिनट चला और इसमें कुल 1981 रन बने थे। साल 1939 में डरबन में ये ऐतिहासिक टेस्ट मैच खेला गया था। तीन मार्च से शुरू हुआ यह मुकाबला 14 मार्च तक चला पर इसके बाद भी ड्रॉ रहा। 12 दिन के इस मैच में दो रेस्ट डे थे और एक दिन खराब मौसम के कारण खेल नहीं हुआ। इस प्रकार नौ दिन हुए खेल में 680.7 ओवर फेंके गये। उस समय 8 गेंद का एक ओवर हुआ करता था. जबकि आज 6 गेंद का ओवर हो रहा है। अभी टेस्ट क्रिकेट की बात करें तो एक मैच में तकरीबन 450 ओवर 2700 गेंद का खेल होता है। वहीं जरूरी होने पर अंतिम दिन 8 ओवर बढ़ाए जा सकते हैं। इस प्रकार देखा जाये तो उस टेस्ट में अभी से दोगुने से भी ज्यादा ओवर में फेंके गए थे। इस सबसे लंबे टेस्ट मैच में मेजबान दक्षिण अफ्रीका ने पहली पारी में 530 और दूसरी पारी में 481 रन बनाए थे जबकि इंग्लैंड की टीम पहली पारी में 316 रन ही बना पायी थी। अंतिम पारी में उसे जीत के लिए 696 रन बनाने पर वह 5 विकेट पर 654 ही बना पायी थी। नौवें दिन के बाद ये मैच बिना परिणाम के ही समाप्त हो गया।

केन विलियमसन को एक ही सेशल में दो बार करनी पड़ी बल्लेबाजी, श्रीलंका के सामने पस्त न्यूजीलैंड

नई दिल्ली। श्रीलंका के खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच में न्यूजीलैंड की बुरी हालत हो गई है। दोनों टीमों के बीच ये मुकाबला गॉल इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेला जा रहा है। मेजबान श्रीलंका ने पहले बल्लेबाजी करते हुए खेल के तीसरे दिन 5 विकेट पर 602 रन बनाकर अपनी पारी को घोषित किया। इसके जवाब में जब न्यूजीलैंड की बैटिंग शुरू हुई तो पूरी टीम ताश के पत्तों की रह बिखर गई। न्यूजीलैंड की टीम दूसरे सेशन के खत्म होने से पहले ही 88 रन पर ही ढेर हो गई। न्यूजीलैंड की तरफ से सबसे ज्यादा मिचेल सैंटनर ने 29 रनों की पारी खेली। इसके अलावा 7 बल्लेबाज ऐसे रहे जो दहाई का आंकड़ा भी नहीं पार कर पाए। टीम के दिग्गज बल्लेबाज केन विलियमसन 53 गेंद खेलकर महज 7 रन बना सके। इसके साथ विलियमसन के नाम के एक ऐसा रिकॉर्ड दर्ज हो गया जिसे वह कभी याद नहीं रखना चाहेंगे। केन विलियमसन दुनिया के दिग्गज बल्लेबाजों में से एक हैं। विराट कोहली, जो रूट और स्टीव स्मिथ के साथ मॉर्डन डे क्रिकेट में वह फैब फोर में गिने जाते हैं, लेकिन श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट मैच में उन्हें करियर में पहली बार एक ही सेशन में दो बार बैटिंग के लिए उतरना पड़ा जो कि काफी शर्मनाक है। श्रीलंका के मिले फॉलोऑन के बाद विलियमसन को बिलकुल भी उम्मीद नहीं थी कि उन्हें दोबारा बैटिंग के लिए जाना पड़ेगा। दरअसल, न्यूजीलैंड की शुरुआत दूसरी पारी में भी निराशजनक रही थी। ओपनर बल्लेबाजों ने अपना विकेट जल्दी गंवा दिया। ऐसे में उन्हें मैदान पर उतरना पड़ा गया। दूसरी पारी में कैन ने क्रीज पर अपना पैर जमाया और डेवोन कॉन्वे के साथ मिलकर टीम के लिए फिफ्टी साझेदारी की।

बल्लेबाजी की तरह ऋषभ पंत की कप्तानी की भी अलग शैली है: मनोज तिवारी

सूरत (गुजरात) (एजेंसी)। पूर्व भारतीय क्रिकेटर मनोज तिवारी ने ऋषभ पंत की कप्तानी की प्रशंसा करते हुए कहा कि उनकी कप्तानी करने की एक अलग शैली है। पंत ने टी20 विश्व कप 2024 के दौरान भारतीय क्रिकेट टीम में वापसी की है। उन्होंने 8 मैच में 127.61 की स्ट्राइक रेट से 171 रन बनाए। इसके बाद बांग्लादेश के खिलाफ पहले टेस्ट की दूसरी पारी में 128 गेंदों पर 85.16 के स्ट्राइक रेट से 109 रन की पारी खेलकर फैंस का दिल जीत लिया। पंत के बल्ले से इस दौरान 13 चौके और 4 छक्के भी निकले थे। वह अपनी फार्म में हैं। ऐसे में मनोज ने कहा कि पंत की कप्तानी की शैली अलग है लेकिन फिर भी गिल के राष्ट्रीय टीम के अगले कप्तान बनने की अधिक संभावना है। तिवारी ने कहा कि जो व्यक्ति एक नेता के रूप में सामने आ रहा है, उसे ही टीम का नेतृत्व करना चाहिए। हाल ही में, हमने देखा कि शुबमन गिल को कई श्रृंखलाओं में कप्तानी दी गई थी। इससे पता चलता है कि बीसीसीआई उनका समर्थन कर रहा है, लेकिन भारत के पास ऋषभ पंत भी हैं। पंत के पास है कप्तानी की एक अलग शैली। इसलिए ये लोग अगली टीम का नेतृत्व करने के लिए दावेदार हैं, जिसमें से गिल के पास पंत से अधिक मौके हैं।

चोट से वापसी के बाद विकेटकीपर-बल्लेबाज का पहला क्रिकेट टूर्नामेंट इंडियन प्रीमियर लीग 2024 पंत था, जहां वह मुख्य आकर्षणों में से एक थे। दिसंबर 2022 में अपनी भयानक कार दुर्घटना के बाद 14 महीने की रिकवरी के बाद उन्होंने क्रिकेट में वापसी की थी। आईपीएल 2024 में पंत ने 13 मैचों में 446 रन बनाए थे। बहरहाल, पंत अभी बांग्लादेश के खिलाफ कानपुर के मैदान पर दूसरा टेस्ट खेलने में बिजी है। पंत के लिए यह टेस्ट सीरीज महत्वपूर्ण है जिसमें वह लय में आते दिख रहे हैं। इसके बाद न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन टेस्ट मैचों की सीरीज और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच टेस्ट मैचों की सीरीज होनी है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पंत भारत के लिए तरुप का इक्का हो सकते हैं क्योंकि पिछले दो दौरों में भारतीय टीम ऑस्ट्रेलिया में टेस्ट सीरीज जीत रही है। इस दौरान पंत का प्रदर्शन शानदार रहा है।

बेंगलुरु के प्रतिष्ठित ताज वेस्ट एंड होटल को बम से उड़ाने की धमकी, पुलिस जांच में निकली फर्जी

बेंगलुरु । कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु के प्रतिष्ठित ताज वेस्ट एंड होटल को बम से उड़ाने की धमकी मिली थी। यह धमकी ईमेल के द्वारा दी गई, पुलिस ने जांच में इस धमकी को फर्जी करार दिया। जानकारी के अनुसार, शनिवार को अज्ञात अपराधियों ने एक ईमेल के द्वारा होटल में बम होने की धमकी दी। यह होटल प्रमुख राजनेताओं और क्रिकेटरों की मेहमान नवाजी के लिए मशहूर है। धमकी मिलने के बाद, पुलिस और बम निरोधक दस्ते ने होटल पहुंचकर जांच शुरू कर दी। जांच के दौरान, पुलिस ने होटल के पूरे परिसर की जांच कर पाया कि यह धमकी फर्जी थी। डीसीपी सेंट्रल ने कहा कि हमें आज सुबह ताज वेस्ट एंड होटल के लिए एक धमकी भरा ईमेल प्राप्त हुआ। हमारी बीडीडीएस और एएससी टीम ने परिसर की जांच की और इस धमकी को फर्जी पाया। डीसीपी ने कहा कि इस मामले में हम शिकायत दर्ज कर आगे की जांच कर रहे है। धमकी भरे ईमेल के बाद होटल की सुरक्षा को बढ़ा दिया गया है। पुलिस इस पूरे मामले की गंभीरता से जांच कर रही है। होटल में ठहरे मेहमानों ने इस घटना को लेकर चिंता व्यक्त की। हालांकि, पुलिस ने सभी को यह आश्वस्त किया है कि स्थिति नियंत्रण में है। पिछले कुछ महीनों से बम धमकी से जुड़े ईमेल्स का चलन तेजी से बढ़ा है, जिससे कई महत्वपूर्ण संस्थानों और स्थानों में हड़कंप मच गया है।

कार शोरूम में फायरिंग... पुर्तगाल में बैठे गैंगस्टर से कनेक्शन

नई दिल्ली। पश्चिम दिल्ली के नारायणा इलाके में एक कार शोरूम में ताबड़तोड़ फायरिंग की घटना सामने आई है, घटना का सीसीवीटी फुटेज सामने आया है। फुटेज में देखा जा सकता है कि शूटर शोरूम में घुसकर फायरिंग कर रहे हैं, इससे इलाके में दहशत फैल गई। गनीमत यह रही कि घटना में किसी को गोली नहीं लगी। इस फायरिंग के पीछे मोस्ट वांटेड गैंगस्टर हिमांशु भाऊ का नाम सामने आया है, जो फिलहाल पुर्तगाल में रह रहा है। भाऊ पर दिल्ली, हरियाणा पुलिस और राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) में कई गंभीर मामलों में केस दर्ज हैं। इसके साथ ही, इंटरपोल ने हिमांशु भाऊ के खिलाफ रेड कॉर्नर नोटिस भी जारी किया है। दिल्ली पुलिस ने मामले में शामिल तीन शूटरों की पहचान कर ली है, जो हरियाणा के रहने वाले हैं और हिमांशु भाऊ के गैंग से जुड़े हुए हैं। पुलिस के अनुसार, 6 मई 2024 को तिलक नगर के फ्यूजन कार शोरूम में हुई फायरिंग के दौरान नारायणा के कार शोरूम के मालिक को भी भाऊ की ओर से धमकी दी गई थी, जिसमें 5 करोड़ रुपये की मांग की गई थी। नारायणा के शोरूम मालिक ने पुलिस में शिकायत की, तब दिल्ली क्राइम ब्रांच ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। पुलिस अब सीसीटीवी फुटेज के आधार पर शूटरों की गिरफ्तारी के लिए सर्च ऑपरेशन चला रही है। इसके साथ ही, पुलिस यह भी जानने की कोशिश कर रही है कि गैंगस्टर हिमांशु भाऊ घटना को किस प्रकार संचालित कर रहा है और उसके अन्य साथियों की पहचान भी की जा रही है।

फूड प्वाइजनिंग से इंजीनियरिंग के 45 छात्र बीमार

बेतिया। बिहार के बेतिया में शुक्रवार की रात फूड प्वाइजनिंग से इंजीनियरिंग के 45 छात्र बीमार हो गए। सभी बीमार छात्रों को बेतिया के जीएमसीएच में भर्ती कराया गया जहां सभी का इलाज चल रहा है। यह मामला सरकारी इंजीनियरिंग कॉलेज कुमारबाग का है। छात्रों के मुताबिक मेस में खाने के मेन्यू में चिकन चावल था जैसे ही छात्रों ने खाना खाया उसके बाद छात्रों की हालत बिगड़ने लगी। एक के बाद एक छात्र बीमार होने लगे। किसी को वोमिटिंग हो रही थी तो किसी के सिर में चक्कर की शिकायत मिली जिसके बाद सभी बीमार छात्रों को एंबुलेंस से देर रात जीएमसीएच लाया गया। जीएमसीएच में सभी बीमार छात्रों का इलाज चल रहा है। सभी छात्र खतरे से बाहर बताये गए हैं। कुछ छात्रों को इलाज कर उन्हें घर भेज दिया गया है। कुछ छात्रों को डॉक्टर की निगरानी में रखकर इलाज किया जा रहा है। हालात अब सामान्य है। उधर एक छात्र के थाली में मरी हुई छिपकली मिलने का भी आरोप छात्रों ने लगाया है। घटना के बाद इंजीनियरिंग कॉलेज में हड़कंप मचा है। घटना के बाद कुमार बाग गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रबंधन को लेकर सवाल उठ रहे हैं। वहीं, इस घटना के बाद छात्रों ने कॉलेज प्रशासन के खिलाफ भी हंगामा किया।

त्यौहारी सीजन में यात्रियों की सुविधा के लिए रेलवे चलाएगा 10 हजार विशेष ट्रेनें

नई दिल्ली। त्यौहारी सीजन में रेलवे यात्रियों की सुविधा का पूरा ध्यान रखते हुए दीपावली और छठ पूजा में ट्रेनों में होने वाली भीड़ को देखते हुए 10 हजार से ज्यादा विशेष ट्रेनें चलाएगा। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि इसके अलावा, 108 ट्रेनों में जनरल कोच भी बढ़ाए जाएंगे, जिससे करीब एक करोड़ यात्रियों को सुविधा मिलेगी। रेलवे ने इसके लिए विशेष तैयारियां कर ली हैं, जिसमें दीपावली और छठ पूजा के दौरान 12,500 विशेष ट्रेनें चलाई जाएंगी। 2024-2025 में 5,975 ट्रेनों को अधिसूचित किया गया है, जिससे यात्रियों को अपने गंतव्य तक जाने में आसानी होगी। पिछले साल 2023-2024 में पूजा विशेष ट्रेनों की संख्या 4,429 थी। ट्रेन में भीड़ को ध्यान में रखते हुए आनंद विहार से बरौनी के बीच विशेष एसी ट्रेन 6 अक्टूबर से 17 नवंबर तक चलेगी। यह ट्रेन सुबह 9 बजे आनंद विहार से चलकर अगले दिन सुबह 6-30 बजे बरौनी पहुंचेगी। इस ट्रेन में 16 थर्ड एसी और 2 पावर कार समेत कुल 18 कोच होंगे, यह कई स्टेशनों पर भी रुकेगी। दीपावली और छठ पूजा के अवसर पर बड़ी संख्या में लोग यूपी और बिहार जाते हैं, छठ पूजा न केवल धार्मिक महत्व है, बल्कि परिवार से मिलने का भी एक अहम मौका होता है। इस दौरान अक्सर ट्रेन की टिकटे वेटिंग लिस्ट में चली जाती हैं, जिससे यात्रा करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। इन सब परेशानियों को देखते हुए रेलवे ने यह फैसला लिया है।

'राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा में नाचा गाना था', राहुल गांधी के बयान पर बवाल, बीजेपी ने बताया हिंदू आस्था का अपमान

मंडी (एजेंसी)। कांग्रेस के राहुल गांधी ने कथित तौर पर 22 जनवरी को अयोध्या में राम मंदिर की 'प्राण प्रतिष्ठा' को 'नाच-गाना' कार्यक्रम के रूप में संदर्भित करने के बाद एक बड़ा राजनीतिक विवाद खड़ा कर दिया है। हरियाणा के हिसार में एक सार्वजनिक सभा में बोलते हुए, वरिष्ठ कांग्रेस नेता ने भाजपा पर हमला बोलते हुए दावा किया कि भगवा पार्टी ने राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह से आम नागरिकों, विशेषकर किसानों को बाहर रखा।

27 सेकंड के वीडियो क्लिप में, राहुल गांधी को कथित तौर पर राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा को हाशिए के लोगों का प्रतिनिधित्व करने के बजाय एक सेलिब्रिटी कार्यक्रम में बदलने के लिए सरकार की आलोचना करते हुए सुना जा सकता है। उन्होंने कहा कि जब अयोध्या में मंदिर खुला तो आपको अडानी, अंबानी और अमिताभ बच्चन तो दिखे, लेकिन वहां एक भी किसान या मजदूर मौजूद नहीं था। इसमें 'नाच गाना' था, लेकिन उन लोगों का कोई प्रतिनिधित्व नहीं था जो वास्तव में भारत के श्रमिक वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

राहुल गांधी की टिप्पणियों पर तुरंत भारतीय जनता पार्टी की ओर से प्रतिक्रियाएं आईं और उन्होंने हिंदू रीति-रिवाजों पर उनकी आस्था और रुख पर सवाल उठाया। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने भी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कांग्रेस नेता की टिप्पणियों को निंदनीय बताया। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी और उनके परिवार ने हिंदू विरोधी भावनाओं का रिकॉर्ड साबित कर दिया है और कहा, INDI गठबंधन का मानना है - हिंदू आस्था पर करो चोट, लेना है वोटबैंक का वोट!'

उन्होंने एक्स पर लिखा कि हिंदू हिंसक और देवता भगवान नहीं हैं के बाद अब राहुल गांधी कहते हैं कि राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा 'नृत्य कार्यक्रम' 'नाच गाना कार्यक्रम' था! क्या किसी अन्य आस्था और उनके पवित्र अवसरों के बारे में ऐसा कहा जा सकता है? उन्होंने आरोप लगाया कि राहुल के परिवार ने राम जी के अस्तित्व, राम मंदिर का विरोध किया है, उनकी सरकार ने हिंदू आतंक गढ़ा है और उन्होंने द्वारका पूजा को भी अब 'नाटक' करार दिया है। सनातन संस्त से लेकर सनातन बीमारी है, हिंदू धर्म धोखा से लेकर राम चरितमानस को गाली देना - INDI गठबंधन का मानना है।

भाजपा के एक अन्य वरिष्ठ नेता तीरथ सिंह रावत ने गांधी के दावों का खंडन करते हुए कहा कि कांग्रेस नेता की टिप्पणी भारतीय संस्कृति की समझ की कमी से उपजी है। रावत ने इस बात पर जोर दिया कि प्रतिष्ठा समारोह सभी के लिए एक उत्सव था और आम नागरिक भी इसका हिस्सा थे। एएनआई के साथ एक साक्षात्कार में, तीरथ सिंह ने कहा, 'शायद राहुल गांधी ने अभी तक भारतीय संस्कृति को पूरी तरह से नहीं समझा है। प्राण प्रतिष्ठा समारोह का दिन उत्सव का दिन था, और आम लोगों सहित हर कोई उत्सव में शामिल था। भगवान राम के प्रति भक्ति सभी की साझा थी।'

दलाई लामा के नाम पर क्यों तिलमिला जाता है चीन

नई दिल्ली । चीन ने फिर अरुणाचल प्रदेश पर अपने दावे को लेकर विवाद खड़ा कर दिया है। चीन ने भारतीय पर्वतारोहियों के एक दल द्वारा अरुणाचल प्रदेश में एक अनाम चोटी का नाम छठे दलाई लामा के नाम पर रखने पर आपत्ति जताई है। चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता लिन जियान ने मीडिया से कहा कि अरुणाचल प्रदेश को चीन के क्षेत्र में स्थापित करना अवैध और अमान्य है। अरुणाचल प्रदेश की यह चोटी, जिसे छठे दलाई लामा त्सांगयांग ग्यात्सो के नाम पर रखा गया है, उसका नामकरण भारतीय रक्षा मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय पर्वतारोहण और साहसिक खेल संस्थान की टीम ने किया। इस टीम ने मोन तवांग क्षेत्र के गोरीचेन मासिफ में 20,942 फीट ऊंची चोटी पर चढ़ाई की। त्सांगयांग ग्यात्सो का जन्म 1682 में मोन तवांग क्षेत्र में हुआ था और उन्होंने बौद्ध धर्म के प्रति अपना योगदान दिया। उनके नाम पर चोटी का नाम रखने का उद्देश्य उनके योगदान को मान्यता देना है, खासकर मोनपा समुदाय के प्रति उनकी सेवा के लिए। जियान ने कहा कि उन्हें चोटी का नाम रखने के बारे में जानकारी नहीं थी, लेकिन उन्होंने यह साफ किया कि जंगनान क्षेत्र चीन का हिस्सा है। चीन लगातार अरुणाचल प्रदेश को दक्षिण तिब्बत का हिस्सा मानता है और 2017 से वहां स्थानों का नाम बदलने का प्रयास कर रहा है। यह विवाद केवल एक नामकरण से शुरू हुआ है, लेकिन यह चीन और भारत के बीच चल रहे क्षेत्रीय विवाद का एक और उदाहरण है। भारत ने हमेशा अरुणाचल प्रदेश को अपना अभिन्न हिस्सा माना है, जबकि चीन अपने दावों को बनाए रखने की कोशिश करता है।

प्रथम ज्योतिर्लिंग सोमनाथ मंदिर के आसपास अवैध निर्माणों पर चला प्रशासन का बुलडोजर

गिरसोमनाथ। सौराष्ट्र स्थित प्रथम ज्योतिर्लिंग भगवान सोमनाथ मंदिर के आसपास किए गए अवैध निर्माणों का प्रशासन ने सफाया कर दिया है। गिर सोमनाथ में कल रात से 36 बुलडोजर इन अवैध निर्माणों को ध्वस्त करने में लगे हुए हैं। इतना ही नहीं इसके मलबे को हटाने के लिए करीब 70 ट्रैक्टर-ट्रॉली भी साथ में लगाई गई हैं। जानकारी है कि इस साइट का उपयोग सोमनाथ विकास परियोजना में किया जाएगा। सोमनाथ मंदिर के पिछले हिस्से में कई अवैध निर्माणों को हटाने के लिए प्रशासन की एक टीम पहुंची। बताया जाता है कि गिर सोमनाथ के इतिहास का यह सबसे बड़ा अभियान चल रहा है। अतिक्रमण हटाओ अभियान के दौरान जिला कलेक्टर, आईजीपी, 3 एसपी, 6 डीवाईएसपी और 50 पीआई-पीएसआई स्टैंडबाय पर थे। इसके साथ ही 1200 पुलिसकर्मी भी अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई के दौरान सुरक्षा में लगाए गए थे।

यूपी में मानसून रिटर्नस-कई जिलों में बारिश को लेकर अलर्ट, आठ लोगों की जान गई

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी में एक बार फिर मानसून सक्रिय होने से लोगों को गर्मी से राहत जरूर मिली है, लेकिन दूसरी तरफ जनजीवन भी अस्त व्यस्त हो गया है। मौसम विभाग ने पहले ही कई जिलों में तेज बारिश की संभावना जताते हुये अलर्ट जारी कर दिया था। बारिश के मद्देनजर अयोध्या और गोण्डा में सभी स्कूलों को शनिवार को बंद रखा गया है। वहीं बारिश प्रभावित जिलों में प्रशासन ने लोगों से घरों में रहने की अपील की है। जरूरत पड़ने पर ही बाहर निकलने को कहा है।

पिछले 48 घंटों में प्रदेश के पूर्वी और तराई इलाकों में भारी बारिश हो रही है। जिसकी वजह से अलग-अलग जिलों में हादसे हुए जिनमें आठ लोगों की जान चली गई। बारिश की वजह से कई गांवों की बिजली ठप हो गई तो वहीं दस से ज्यादा घरों के ढहने की खबर है। यूपी में शुक्रवार को 58 से ज्यादा जिलों भारी बारिश हुई। जबकि सुल्तानपुर के लंभुआ में सबसे अधिक 270 मिमी बारिश दर्ज की गई। इस दौरान यहां भव्या क्षेत्र में बिजली गिरने से एक बुजुर्ग की मौत हो गई। वहीं सीतापुर के 300 से ज्यादा गांवों में बिजली व्यवस्था बुरी तरह चरमरा गई। यहाँ के गवहिया गांव में घर की दीवार गिरने से 15 साल की एक लड़की की मौत हो गई। अयोध्या का हाल भी बेहद खराब रहा, यहां इस सीजन की सबसे अधिक 120 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गई। यहाँ के तारुन में छप्पर गिर गया, इस हादसे में एक व्यक्ति की मौत हो गई। ललितपुर और फतेहपुर में भी बिजली गिरने से एक बच्ची और महिला समेत तीन की मौत हो गई। अंबेडकर नगर में बिजली गिरने से चार बहनों की झुलस गई।

मौसम विभाग की तरफ से गोरखपुर, संतकबीरनगर, सिद्धार्थनगर, बलरामपुर, जालौन, बाराबंकी और हमीरपुर समेत आसपास के जिलों के लिए चेतावनी जारी की गई है। उधर, प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अधिकारियों को बारिश से प्रभावित लोगों की तत्काल मदद करने के निर्देश दिये हैं। बारिश के चलते धान के किसानों की चिन्ता बढ़ गयी है। बताया जा रहा है कि कई जिलों में धान की फसल पक कर तैयार है। ऐसे में बारिश का होना धान की फसल के लिए अच्छा नहीं है।

बीजेपी का कांग्रेस पर वार, सुधांशु त्रिवेदी का सवाल, सिद्धारमैया को आरोपी नंबर 1, क्या राहुल उनके साथ हैं?

नई दिल्ली (एजेंसी)। कर्नाटक में मुडा मामले को लेकर सियासत तेज है। भारतीय जनता पार्टी के सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने कथित MUDA 'घोटाले' को लेकर कांग्रेस पार्टी पर निशाना साधा और कहा कि इस मामले से जुड़े आरोप सबसे पहले कांग्रेस ने ही लगाए थे और कर्नाटक की लोकायुक्त अदालत में फैसला भी आ गया है। पार्टी पर आगे हमला करते हुए उन्होंने पूछा कि क्या लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी और एआईसीसी अध्यक्ष सोनिया गांधी भ्रष्ट नेताओं का समर्थन कर रहे हैं।

भाजपा नेता ने आरोप लगाया कि कर्नाटक में कांग्रेस के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया के परिवार ने MUDA स्कैम में जमीन का दुरुपयोग और सरकारी अथॉरिटी का दुरुपयोग करते हुए भारी संपत्ति बनाई। उस विषय में निर्णय देते हुए न्यायालय ने सिद्धारमैया को आरोपी नंबर 1 बनाया है। उन्होंने दावा किया कि यह किसी केंद्रीय एजेंसी ने इस विषय में जांच नहीं की है। बल्कि कर्नाटक के लोकायुक्त कोर्ट ने यह निर्णय

दिया है। उन्होंने सवाल करते हुए कहा कि मैं राहुल गांधी और सोनिया गांधी से पूछना चाहता हूं कि क्या आप भ्रष्टाचार के 'अरोपी नंबर 1' के साथ खड़े हैं या नहीं?

सुधांशु त्रिवेदी ने दावा किया कि ये भारत के इतिहास के उन चंद दुर्लभ केस में से एक है, जब किसी राज्य के सीटिंग मुख्यमंत्री को आरोपी नंबर 1 बनाया गया हो। अब राजनीति में नई सोच लाने के 99 के उबाल से लबरेज राहुल गांधी से मैं पूछना चाहता हूं कि आरोपी नंबर 1 के साथ आप खड़े हैं या नहीं। उन्होंने कहा कि टिप्पणियों से संकेत मिलता है कि कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया 1998 से भ्रष्टाचार के विभिन्न मामलों से जुड़े हुए हैं, जो राहुल गांधी के परिवार द्वारा शुरू की गई प्रवृत्ति को जारी रखता है। यह मुद्दा संवैधानिक और कानूनी निहितार्थों से परे है; यह कांग्रेस की अंतर्निहित संस्कृति को दर्शाता है। कांग्रेस नेताओं की लूट और भ्रष्टाचार देश के लिए एक बड़ी चुनौती है।

कांग्रेस नेतृत्व भाजपा पर राजनीतिक कारणों से मुख्यमंत्री को निशाना बनाने का आरोप लगा रहा है, वहीं त्रिवेदी ने कहा कि केंद्रीय जांच एजेंसियों की इस प्राथमिकी में कोई भूमिका नही है। भाजपा नेता ने दावा किया कि यह मामला सिद्दरमैया के अपने कर्मों का नतीजा है क्योंकि उन्होंने तथा उनके परिवार ने गैरकानूनी रूप से संपत्ति हड़पने के लिए सरकारी शक्तियों का दुरुपयोग किया। उन्होंने कहा कि हरियाणा विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के एक उम्मीदवार ने हाल ही में कहा था कि उनकी पार्टी के नेता सत्ता का इस्तेमाल खुद को और अपने रिश्तेदारों को अमीर बनाने के लिए करेंगे।

सेना-आतंकवादियों के बीच मुठभेड़, तीन जवान, एक पुलिसकर्मी घायल

- कुलगाम के आदिगाम देवसर इलाके को सुरक्षाबलों ने घेरा, मुठभेड़ जारी

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के कुलगाम के आदिगाम देवसर में शनिवार को सुरक्षाबलों और आतंकवादियों के बीच मुठभेड़ हुई। यहां दो आतंकवादियों के छिपे होने की आशंका जताई जा रही है। कुलगाम जिले में शनिवार को सुरक्षाबलों और आतंकवादियों के बीच मुठभेड़ हो गई। इस मुठभेड़ में तीन जवान और जम्मू-कश्मीर पुलिस का एक अधिकारी घायल हो गया। अधिकारियों ने बताया कि जिले के आदिगाम गांव में आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में खुफिया जानकारी मिली थी। इसके बाद सेना, पुलिस और सीआरपीएफ समेत सुरक्षाबलों ने इलाके में घेराबंदी और तलाशी अभियान शुरू किया।

अधिकारियों के मुताबिक सुरक्षाबलों ने आतंकियों को घेरा तो आतंकियों ने खुद को घिरा देखा तो सुरक्षाबलों पर गोलियां बरसानी शुरू कर दी। गोली लगने से सेना के तीन जवान और जम्मू-कश्मीर पुलिस का एक अधिकारी घायल हो गया। सुरक्षाबलों ने यह सुनिश्चित करने के लिए सभी भागने के रास्ते बंद कर दिए हैं। मुठभेड़ स्थल पर पहले ही अतिरिक्त बल पहुंच चुके हैं। घायल सुरक्षाकर्मियों को इलाज के लिए अस्पताल भेज दिया गया है।

आतंकवादियों ने पिछले तीन-चार महीनों के दौरान जम्मू डिवीजन के डोडा, कठुआ, राजौरी, पुंछ और रियासी जिलों में सेना, स्थानीय पुलिस और नागरिकों पर हमला कर उन्हें मार गिराया है। पहाड़ी इलाकों में सेना और अन्य लोगों पर घात लगाकर हमला करने के बाद आतंकवादी इन पहाड़ी जिलों के घने जंगलों और वन क्षेत्रों में भाग जाते हैं। आतंकवादियों के हमलों को नाकाम करने के लिए, जम्मू डिवीजन के ऊंचे पर्वतीय इलाकों और घने जंगलों में 4 हजार से ज्यादा पैरा कमांडो और पर्वतीय युद्ध में प्रशिक्षित जवानों को तैनात किया था। सुरक्षाबलों की इस रणनीति के बाद, इन जिलों में आतंकवादी हमलों में कमी आई है।

बांग्लादेशी पोर्न स्टार रिया 1 अक्टूबर तक पुलिस हिरासत में, उसके बचाव में 7 वकीलों की टीम

उल्हासनगर (एजेंसी)। मुंबई से सटे उल्हासनगर में बांग्लादेश की एक पोर्न अभिनेत्री रिया बर्डे को पुलिस ने गिरफ्तार किया। उसपर आरोप है कि वो फर्जी दस्तावेजों के आधार पर भारत में रह रही हैं। उन्हें भारत में अवैध रूप से रहने के आरोप में पुलिस ने गिरफ्तार किया है। रिया एक बांग्लादेशी पोर्न स्टार हैं और यहाँ हिंदू बनकर अपने परिवार के साथ रह रही थी। पोर्न स्टार रिया बर्डे, जिन्हें बन्ना शेख और आरोही बर्डे के नाम से भी पोर्न इंडस्ट्री में जाना जाता है। अब पुलिस उसकी मां, बहन और भाई की तलाश कर रही है। इस बीच रिया को जब कोर्ट में पेश किया गया तो भारत में घुसपैठ करने वाली इस युवती का बचाव करने के लिए सात वकीलों की एक टीम पहुंची. कोर्ट में 7 वकीलों की टीम ने उनका बचाव करने की कोशिश की और रिया बर्डे की गिरफ़्तारी का विरोध करने की कोशिश की. 7 वकीलों की एक टीम ने पुलिस से पूछा कि वे किस आधार पर

साबित कर सकते है कि रिया बर्डे बांग्लादेशी हैं। डेढ़ घंटे चले जिरह के बाद न्यायधीश ने रिया को 1 अक्टूबर तक रिया को पुलिस की हिरासत में भेज दिया।

- रिया बर्डे का राज कुंद्रा प्रोडक्शन हाउस से कनेक्शन सामने आया

एक युवा बांग्लादेशी बन्ना शेख ने अवैध रूप से भारत में घुसपैठ की, फिर अपना नाम बदला और पोर्न इंडस्ट्री में प्रवेश किया। उन्होंने पोर्न इंडस्ट्री में रिया बर्डे नाम से काफी लोकप्रियता हासिल की। यह भी खबर है कि वह राज कुंद्रा प्रोडक्शन हाउस से जुड़ी हैं। अब उन्हें फर्जी दस्तावेजों के आधार पर भारतीय पासपोर्ट बनाने के आरोप में उल्हासनगर की हिल लाइन पुलिस ने 26 सितंबर को उल्हासनगर के पास नेवाली इलाके से गिरफ्तार किया।

- रिया के परिवार पर केस दर्ज

पुलिस ने रिया की मां अंजलि बर्डे जिसे पहले रूबी शेख के नाम से जाना जाता था, पिता अरविंद बर्डे जिसे पहले रियाज शेख के नाम से जाना जाता था, भाई रवींद्र को पहले रियाज शेख के नाम से जाना जाता था, बहन रितु जिसे पहले मोनी शेख के नाम से जाना जाता था, के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया है। रिया की मां ने महाराष्ट्र के अमरावती में रहने वाले अरविंद बर्डे से शादी की। बाद में, रिया ने जाली दस्तावेजों के आधार पर एक भारतीय पासपोर्ट बनाया। रिया की एक दोस्त ने पुलिस को उनके बारे में जानकारी दी थी. उन्होंने बताया था कि रिया बर्डे अवैध तरीके से भारत में रह रही थीं।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष की दौड़ में वसुंधरा एवं शिवराज आगे

- संघ लगाना चाह रही है मोदी-शाह पर लगाम
- संजय जोशी का नाम पर सहमति नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। नई दिल्ली,(ईएमएस)। भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रीय अध्यक्ष के नाम पर एक बार फिर चौंकाने वाला परिणाम देने की तैयारी में दिख रही है। ऐसे में यदि संघ की चलती है तो वसुंधरा राजे सिंधिया बीजेपी की राष्ट्रीय अध्यक्ष होंगी। वैसे पार्टी आलाकमान वसुंधरा राजे और शिवराज सिंह चौहान के नामों को आगे कर विचार करने में लगे हुए हैं। वहीं संघ अब चाह रहा है कि मोदी और शाह पर लगाम कसी जाए और पार्टी के सभी लोग जिस नाम पर मोहर लगाएं उसे ही पार्टी अध्यक्ष बनाया जाए। इसे लेकर पार्टी और संघ में तनातनी की स्थिति बनी हुई है।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष को लेकर चहुंओर चर्चाओं का दौर शुरु हो गया है। यहां पार्टी के शीर्ष सूत्रों की मानें तो पार्टी आलाकमान राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री और राष्ट्रीय उपाध्यक्ष वसुंधरा राजे को राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाने पर गंभीरता के साथ विचार कर रहे हैं। वहीं पार्टी नेतृत्व मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और वर्तमान केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान को राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाना चाह रहा है। इससे हटकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से पहले ही संजय जोशी का नाम अध्यक्ष पद के लिए प्रस्तावित किया जा चुका था, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह उनके नाम पर सहमत होते नहीं दिखे हैं। मोदी और शाह की पहली पसंद शिवराज सिंह चौहान बन गए हैं, संघ की पसंद वसुंधरा राजे का नाम है। ऐसे में संघ नहीं चाहता कि अध्यक्ष पद को लेकर किसी तरह खींचतान हो या फिर विवाद उत्पन्न हो, इसलिए संघ ने इशारा कर दिया है कि पार्टी के सभी लोग जिसे चाहें उसे ही पार्टी अध्यक्ष बनाया जाएगा।

लोकसभा चुनाव 2024 में पार्टी के प्रदर्शन को देखते हुए माना जा रहा है कि भाजपा का राष्ट्रीय अध्यक्ष अब संघ की पसंद का ही होगा। इससे पार्टी में संघ का वर्चस्व बनाने में मदद मिलेगी। भाजपा के कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों में वर्तमान नेतृत्व के खिलाफ जो नाराजगी है, संघ उस नाराजगी को दूर करके पार्टी को एकजुट बनाने की दिशा में काम कर रही है। संघ के फार्मूले पर यदि पार्टी अध्यक्ष का चुनाव होता है तो संजय जोशी या वसंधरा राजे ही अगले अध्यक्ष हो सकते हैं, यदि मौजूदा पार्टी नेतृत्व की चली तो शिवराज सिंह के नाम पर सहमति बनेगी, जो आगे भी तनातनी का कारण बनेगा। वैसे वसुंधरा राजे पार्टी अध्यक्ष बनाए जाने को लेकर काफी उत्साहित नजर आ रही हैं।

नए अध्यक्ष के नेतृत्व में ही होगा महाराष्ट्र-झारखंड चुनाव

भारतीय जनता पार्टी के नये राष्ट्रीय अध्यक्ष के नेतृत्व में ही पार्टी महाराष्ट्र और झारखंड विधानसभा चुनाव लड़ने की रणनीति पर कार्य कर रही है। ऐसे में जो भी अध्यक्ष बनता है, उसकी एक बड़ी जिम्मेदारी होगी दोनों ही राज्यों में पार्टी को बड़ी जीत दिलवाना। सूत्रों की मानें तो अगले महीने में ही चुनाव आयोग महाराष्ट्र और झारखंड में विधानसभा चुनाव घोषित कर सकता है, ऐसे में पार्टी के नये अध्यक्ष के लिए यह चुनौतीपूर्ण चुनाव नहीं होगा। समय कम होगा, और सभी को साधना कोई आसान बात नहीं होगी।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक-डॉ. रामाज्ञा तिवारी, प्रधान संपादक-देवेंद्र सिंह*** (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह**. 9334331934, 9386895799, 9507466535, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**